दो श्री गणेशाय नमः

श्री देवनारायण नमः जय माता दी

श्री

वीर बगड़ावत

भारत कथा

श्री शिवराज गुर्जर चौहान अध्यापक

ग्राम – आसन , पोस्ट – अमरवासी

मो.9929470254 तहसील- जहाजपुर, जिला - भीलवाड़ा (राजस्थान)

Pdf by :- जगदीश गुर्जर छावड़ी, वरि. अध्यापक, आभानेरी (दौसा) 9461779317

आरती श्री देवनारायण भगवान की

ॐ जय बाला देवा, स्वामी जय बाला देवा।

देवनारायण स्वामी, स्वामी सब की सुधि लेवा।ॐ जय.....

नीले अश्व असवारी, अद्भुत छवि राजे।

छौछू करत रहे सेवा, घंटा ध्वनि बाजे।ॐ जय बाला देवा।

राजे थे शक्ति मद में, जम धन को कष्ट दियो।

फल भोगे कर्मन के, ते फेर स्तुति कियो।ॐ जय बाला देवा।

भाव भक्ति साढ़ू की, मानव देह धरयो।

धर्म के जो रक्षक, उनके काज सरयो।ॐ जय बाला देवा।

ग्वाल बाल संग देवा, बन, बन फिरत रहे ।

पीपलदे रानी के कष्ट, छिन में दूर करे।ॐ जय बाला देवा।

दुर्बल, दीन कर्मन हीन, सब पर किरपा करी।

बगडावत वंश की सारी विपत हरी।ॐ जय बाला देवा।

देव प्रभु की आरती, जो कोई नर गावे।

कहत इसम, वह सुख संपत्ति पावे।ॐ जय बाला देवा ।

- श्री इसमसिंह चौहान एडवोकेट , इतिहासकार(अलवर)

बगडावत भारत कथा-1

बगडावत भारत महागाथा अजमेर के राजा बीसलदेवजी के भाई माण्डलजी से शुरु होती है जो कि देवनारायण जी के पूर्वज थे। माण्डलजी के बड़े भाई राजा बिसलदेवजी उन्हें घोड़े खरीदने के लिये मेवाड़ भेजते हैं। मेवाड़ पहुँच कर माण्डलजी कुछ घोड़े खरीदते हैं, मगर बहुत सारा पैसा वो तालाब बनवाने में खर्च कर देते हैं और अपने भाई से और पैसे मंगवाते हैं जो वो भेजते रहते हैं। बिसलदेवजी यह पता करने आते हैं कि माण्डलजी इतने सारे पैसो का क्या कर रहे हैं।माण्डल आते है । इस बात का पता जब माण्डलजी को लगता है कि उनके बड़े भाई बिसलदेवजी आ रहे हैं, तब वह जो तालाब बनाया था उसमें घोड़े सहित उतर जाते हैं और जल समाधी ले लेते हैं। बिसलदेवजी को यह जानकर बहुत दुख होता है और वह माण्डलजी की याद में तालाब के बीच में एक विशाल छतरी और एक विशाल मंदारे का निर्माण (कीर्ति स्तम्भ नुमा) करवाते हैं और उस गांव का नाम माण्डलजी के नाम से माण्डल पड़ जाता है जो कि मेवाड़ के नजदीक आज भी स्थित है।राजा बिसलदेव के राज्य में एक बार एक शेर ने आतंक फैला रखा था। गांवों के छोटे-छोटे बच्चो को वह रात को चुपचाप उठा कर ले जाता था। थकहार कर लोगों ने तय किया कि शेर का भोजन बनने के लिए हर घर का एक सदस्य बारी-बारी से जाएगा। एक रात माण्डलजी के पुत्र हरीरामजी जिन्हें शिकार खेलने का बहुत शौक होता हैं वहां से गुजरते हैं। रात बिताने के लिए वो एक बुढिया से उसके घर में रहने की अनुमति मांगते हैं और बुढिया उन्हें अनुमति दे देती है। रात को

जब बुढिया अपने बेटे को भोजन खिला रही होती है तो हरीरामजी देखते हैं कि बुढिया अपने बेटे को बहुत प्यार से भोजन करा रही है और रोती भी जा रही है। हरीरामजी बुढिया से उसके रोने का कारण पूछते हैं। बुढिया उन्हें शेर के बारे में बताती हैं, और कहती हैं कि मेरे दो बेटे थे, एक बेटा पहले ही शेर का भोजन बन चुका है और आज रात दूसरे बेटे की बारी है। यह सुनकर हरीरामजी बुढिया को कहते हैं कि मां मैं आज तेरे बेटे की जगह शेर का भोजन बनने के लिए चला जाता हूं। जंगल में जाकर हरीरामजी आटे का एक पुतला बनाकर अपनी जगह रख देते हैं और खुद पास की झाड़ी में छुप जाते हैं। जब शेर आटे के पुतले पर हमला करता हैं तो हरीरामजी झाड़ी से बाहर आकर अपनी तलवार के एक ही वार से शेर की गर्दन अलग कर देते हैं। इसके बाद शेर का कटा हुआ सिर हाथ में लेकर अपनी खून से सनी तलवार को धोने के लिए पुष्कर घाट की ओर जाते हैं। पुष्कर के रास्ते में लीला सेवड़ी नामक एक औरत रहती थी और वो सुबह सेवेरे सबसे पहले उठकर पुष्कर घाट पर नहा धोकर वराह भगवान की पूजा करने के लिये जाती थी। उसने यह प्रण ले रखा था कि वराह भगवान की पूजा करने के बाद ही किसी इन्सान का मुँह देखेगी। पुष्कर घाट पहुंचकर जब हरीरामजी तलवार को पानी से साफ करके अपनी मयान में डालते हैं तो लीला सेवड़ी जो वराह भगवान की पूजा कर रही होती है, आहट सुनकर पीछे मुड़कर देखती है। हरीरामजी डर के कारण शेर का कटा हुआ सिर आगे कर देते है जिससे लीला सेवड़ी को सिर तो शेर का और धड़ इन्सान का दिखाई देता है। वह कहती है कि यह तुमने क्या किया? अब मेरे जो सन्तान होगी वह ऐसी ही होगी,

जिसका सिर तो शेर का होगा और शरीर आदमी का। अब लीला सेवड़ी कहती है कि आपको मेरे साथ विवाह करना होगा। हरीरामजी सोचते है कि ऐसी सती औरत कहाँ मिलेगी, वह विवाह के लिये तैयार हो जाते हैं। कुछ समय पश्चात हरीरामजी और लीला सेवड़ी के यहां एक सन्तान पैदा होती है, जिसका सिर तो शेर का और बाकि शरीर मनुष्य का होता है। हरीरामजी उस बच्चे को लेकर एक बाग में बरगद के पेड़ की कोटर (खोल) में छिपा कर चले आते हैं। दूसरे दिन बाग का माली आता है और देखता है कि बाग तो एक दम हरा भरा हो गया है। यह क्या चमत्कार है और वह पूरे बाग में घूम फिर कर देखता है तो उसे बरगद की खोल में एक नवजात शिशु के रोने की आवाज सुनाई देती है और बाग का माली दौड़ कर बरगद के पेड़ की खौल में से बच्चे को उठा लेता है। वह यह देखकर दंग रह जाता है कि बच्चे का मुँह शेर का और शरीर इन्सान का है। वह बच्चे को राजा के पास लेकर जाता है। राजा बीसलदेव को जब हरीरामजी से सारी बात का पता चलता है तो उस बच्चे के लालन-पालन का जिम्मा वह स्वयं लेने के लिए तैयार हो जाते हैं। राजा बिसलदेव उस बच्चे का नाम बाघ सिंह(बाघराव) रख देते हैं। बाघ सिंह की देख-रेख के लिए उस बाग में एक ब्राह्मण को नियुक्त कर देते हैं। बाघ सिंह उसी बाग में खेलते कूदते बड़े होते हैं।

बगडावत भारत कथा-2

राजस्थान में यह प्रथा है कि सावन के महीने मे तीज के दिन कुंवारी कन्याएं झूला झूलने के लिये बाग में जाती है। यही जानकर उस दिन

बाघ सिंह और ब्राह्मण भी अपने बाग में झूले डालते हैं। बाघ सिंह झूला झूलने के लिये आयी हुई कन्याओं से झूलने के लिये एक शर्त रखते हैं कि झूला झूलना है तो मेरे साथ फैरे लेने होगें? लड़कियां पहले तो मना कर देती है लेकिन फिर आपस में बातचीत करती है कि फैरे लेने से कोई इसके साथ शादी थोड़े ही हो जायेगी। कुछ लड़कियां बाघ सिंह के साथ फैरे लेकर झूला झूलने के लिये तैयार हो जाती है और कुछ वापस अपने घर लौट जाती हैं। बाघ सिंह के साथ उसका ब्राह्मण मित्र लड़कियों के फैरे करवाता है और झूला झूलने की इजाजत देता है। उस दिन लड़कियां झूला झूलकर अपने घर वापस आ जाती हैं। जब वह लड़कियां बड़ी होती है तब उनके घर वाले उनकी शादी के सावे (लग्न) निकलवाते हैं, लेकिन जब उनकी शादी के लग्न नहीं मिलते हैं तब घर वालों को चिन्ता होती है कि आखिर इनके लग्न क्यों नहीं मिल रहे हैं। लड़कियों के माता-पिता राजा बिसलदेवजी के पास जाकर यह बात बताते हैं। राजा बिसलदेवजीएक युक्ति निकालते हैं और सब लड़कियों को एक जगह एकत्रित करते हैं और उनके पास पहरे पर एक बूढ़ी दाई को बैठा देते हैं, और कहते हैं कि यह बहरी है इसे कुछ सुनाईनहीं देता है। सारी लड़कियां आपस में खुसर-फुसर करती हैं और कहती हैं कि मैंने कहा था कि बाघ सिंह के साथ फैरे नहीं लो और तुम नहीं मानी। उसी का यह अंजाम है कि आज अपनी शादी नहीं हो पा रहीहै। यह बात बूढ़ी औरत सुन लेती है, और दूसरे दिन राजा बिसलदेवजी को सारी बात बताती है। फिर राजा बिसलदेवजी बाघ सिंहको बुलाते हैं और उन्हें फटकार लगाते हैं। बाघ सिंह कहते है कि मैं एक बाथ भरूंगा, जो लड़कियां मेरी बाथ में आ जायेगी उनसे तो मैं शादी कर लूंगा

और बाकि लड़कियों के सावे निकल जायेगें। बाघ सिंह जब बाथ भरते हैं उनकी बाहों में १३ लड़कियां समा जाती है। जिससे बाघ सिंह शादी करने को तैयार हो जाते है। १२ लड़कियों से स्वयं शादी कर लेते हैं और एक लड़की अपने ब्राह्मण मित्र को जो फैरे करवाता है, उसको दे देते है।

बगडावत भारत कथा - 3

अपनी बारह औरतों से बाघ जी की २४ सन्तानें होती हैं। वह बगड़ावत कहलाते हैं। बगड़ावत चौहान गोत्र व गुर्जर जाति से सम्बंध रखते थे। इनका मुख्य व्यवसाय पशुपालन था। और बड़े पैमाने पर इनका पशु पालन का कारोबार था। वह इस कार्य में प्रवीण थे और उन्होनें अपनी गायों की नस्ल सुधारीथी। उनके पास बहुत बढिया नस्ल की गायें थी। गाथा के अनुसार काबरा नामक सांड उत्तम जाति का सांड था। उनके पास ४ बढिया नस्ल की गायें थी जिनमें सुरह, कामधेनु, पारवती और नांगल गायें थी। इनकी हिफाजत और सेवा में ये लोग लगे रहते थे। बगड़ावत भाईयों में सबसे बड़े तेजाजी, सवाई भोज, नियाजी, महारावत आदि थे। सवाई भोज की शादी मालवा में साडू माता के साथ होती है। साडू माता के यहां से भी दहेज में बगड़ावतों को पशुधन मिलता है। एक ग्वाला जिसका नाम नापा ग्वाल होता है उसे बगड़ावत साडू के पीहर मालवा से लाते है। नापा ग्वाल इनके पशुओं को जंगल में चराने का काम करता था। इसके अधीन भी कई ग्वाले होते है जो गायों की देखरेख करते थे। गाथा के अनुसार बगड़ावतों के पास १,८०,००० गायें और १४४४ ग्वाले थे। एक बार बगड़ावत

गायें चराकर लौट रहे होते हैं तब उन गायों में एक गाय ऐसी होती है जो रोज उनकी गायों के साथ शामिल हो जाती थी और शाम को लौटते समय वह गाय अलग चली जाती है। सवाई भोज यह देखते हैं कि यह गाय रोजअपनी गायों के साथ आती है और चली जाती है। यह देख सवाई भोज अपने भाई नियाजी को कहते हैं कि मे इस गाय के पीछे जाता हू और पता करता हू की यह गाय किसकी है और कहां से आती हैं? इसके मालिक से अपनी ग्वाली का मेहनताना लेकर आउगा। सवाई भोज उस गाय के पीछे-पीछे जाते हैं। वह गाय एक गुफा में जाती हैं। वहां सवाई भोज भी पहुंच जाते हैं और देखते है कि गुफा में एक साधु (बाबा रुपनाथजी) धूनी के पास बैठे साधना कर रहे हैं। सवाई भोज साधु से पूछते हैं कि महाराज यह गाय आपकी है। साधु कहते है, हां गाय तो हमारी ही है। सवाई भोज कहते है आपको इसकी गुवाली देनी होगी। यह रोज हमारी गायों के साथ चरने आती है। हम इसकी देखरेख करते हैं। साधु कहता है अपनी झोली माण्ड। सवाई भोज अपनी कम्बल की झोली फैलाते हैं। बाबा रुपनाथजी धूणी में से धोबे भर धूणी की राख सवाई भोज की झोली में डाल देते हैं। सवाई भोज राख लेकर वहां से अपने घर की ओर चल देते हैं।रास्ते में साधु के द्वारा दी गई धूणी की राख को गिरा देते हैं और घर आकर राख लगे कम्बल को खूंटीं पर टांक देते हैं। जब रात होती है तो अन्धेरें में खूंटीं परटंगे कम्बल से प्रकाश फूटता है। तब नियाजी देखते हैं कि उस कम्बल में कहीं-कहीं सोने एवं हीरे जवाहरात लगे हुए हैं तो वह सवाई भोज से सारी बात पूछते हैं। सवाई भोज सारी बात बताते हैं। बगड़ावतों को लगता है कि जरुर वह साधु कोई करामाती पहुंचा हुआ है। यह जानकर

कि वो राख मायावी थी, सवाई भोज अगले दिन उस साधु की गुफा में दुबारा जाते हैं और रुपनाथजी को प्रणाम करके बैठ जाते हैं, और बाबा रुपनाथजी की सेवा करते हैं। यह क्रम कई दिनो तक चलता रहता है। एक दिन बाबा रुपनाथजी निवृत होने के लिये गुफा से बाहर कहीं जाते हैं। पीछे से सवाई भोज गुफा के सभी हिस्सो में घूम फिर कर देखते हैं। उन्हें एक जगह इन्सानों के कटे सिर दिखाई देते हैं। वह सवाई भोज को देखकर हंसते हैं। सवाई भोज उन कटे हुए सिरों से पूछते हैं कि हँस क्यों रहे हो? तब उन्हें जवाब मिलता है कि तुम भी थोड़े दिनों में हमारी जमात में शामिल होनेवाले हो, यानि तुम्हारा हाल भी हमारे जैसा ही होने वाला है। हम भी बाबा की ऐसे ही सेवाकरते थे। थोड़े दिनों में ही बाबा ने हमारे सिर काट कर गुफा में डाल दिए। ऐसा ही हाल तुम्हारा भी होने वाला है।यह सुनकर सवाई भोज सावधान हो जाते हैं। थोड़ी देर बाद बाबा रुपनाथ वापस लौट आते हैं और सवाई भोज से कहते हैं कि मैं तेरीसेवा से प्रसन्न हुआ।आज मैं तेरे को एक विद्या सिखाता हूं। सवाई भोज से एक बड़ा कड़ाव और तेल लेकर आने के लिये कहते हैं। सवाई भोज बाबा रुपनाथ के कहे अनुसार एक बड़ा कड़ाव और तेल लेकर पहुंचते हैं। बाबा कहते हैं कि अलाव (आग) जलाकर कड़ाव उस पर चढ़ा दे और तेल कड़ाव में डाल दे। तेल पूरी तरह से गर्म हो जाने पर रुपनाथजी सवाई भोज से कहते हैं कि आजा इस कड़ाव की परिक्रमा करते हैं। आगे सवाई भोज और पीछे बाबा रुपनाथजी कड़ाव की परिक्रमा शुरु करते हैं। बाबा रुपनाथ सवाईभोज के पीछे-पीछे चलते हुयेएकदम सवाईभोज को कड़ाव में धकेलने का प्रयत्न करते हैं। सवाईभोज पहले से ही सावधान होते हैं, इसलिए छलांग लगाकर

कड़ाव के दूसरी और कूद जाते हैं और बच जातेहैं। फिर सवाईभोज बाबा रुपनाथ से कहते हैं महाराज अब आप आगे आ जाओ और फिर से परिक्रमा शुरु करते हैं। सवाईभोज जवान एवं ताकतवर होते हैं। इस बार वह परिक्रमा करते समय आगे चल रहे बाबा रुपनाथ को उठाकर गर्म तेल के कड़ाव में डाल देते हैं। बाबा रुपनाथ का शरीर कड़ाव में गिरते ही सोने का हो जाता है। वह सोने का पोरसा बन जाता है। तभी अचानक आकाश से आकाशवाणी होती है कि सवाई भोज तुम्हारी बारह वर्ष की काया है और बारह वर्ष की ही माया है। यानि बारह साल की हीबगड़ावतों की आयु है और बाबा रुपनाथ की गुफा से मिले धन की माया भी बारह साल तुम्हारे साथ रहेगी। और एक आकाशवाणी यहभी होती है की यह जो सोने का पोरसा है इसको तुम पांवों की तरफ से काटोगे तो यह बढेगा और यदि सिर की तरफ से काटोगे तो यहघटता जायेगा। इस धन को तुम लोग खूब खर्च करना, दान-पुण्य करना। सवाई भोज को बाबारुपनाथ की गुफा से भी काफी सारा धन मिलता है जिनमें एक जयमंगला हाथी, एक सोने का खांडा, बुली घोड़ी, सुरह गाय, सोने का पोरसा, कश्मीरी तम्बू इत्यादि।दुर्लभ चीजें लेकर सवाई भोज घर आ जाते हैं।

बगडावत भारत कथा -4

अपने घर आकर सवाईभोज बाबा रुपनाथ व सोने के पोरसे की सारी घटना अपने भाइयों एवं परिवार वालों को बताते हैं।इस अथाह सम्पत्ति का क्या करें यह विचार करते हैं। इतना सारा धन प्राप्त हो जाने पर सभी

बगड़ावत अपना पशुधन और बढ़ाते हैं। सभी अपने लिये घोड़े खरीदतेहैंऔर सभी घोड़ो के लिये सोने के जेवर बनवाते हैं। ऐसा कहा जाता है कि बगड़ावत अपने सभी घोड़ों के सोने के जेवर कच्चे सूत के धागे में पिरोकर बनाते थे। उनके घोड़े जब भी दौड़ते थे तब वह जेवर टूट कर गिरते रहते थे और वे दोबारा जेवर बनवाते रहते थे। आज भी ये जेवर कभी-कभी बगड़ावतों के गांवो के ठिकानों से मिलतेहैं। बगड़ावत खूब जमीन खरीदते हैं। और अपने अलग-अलग गांव बसाते हैं। सवाई भोज अपने गांव का नाम गोठां रखते हैं। बगड़ावत काफी धार्मिक काम करते हैं। तालाब और बावड़ियां बनवाते हैं और जनहितमें कई काम करते हैं। एक बार सवाईभोज अपने भाइयों के साथ अपने दोस्त (रावजी) से मिलने जाने की योजना बनाते हैं। अपने सभी घोड़ो को सोने के जेवर पहनाते हैं। साडू माता नियाजी से पूछती है कि इतनी रात को कहाँ जाने की तैयारी है। नियाजी उन्हें अपनी योजना के बारे में बताते हैं और फिर सारे भाई राण की तरफ निकल पड़ते हैं। रास्ते में उन्हें पनिहारिने मिलती हैं और बगड़ावतों के रुप रंग को देखकर आपस में चर्चा करने लगती हैं। आगे जाकर उन्हें राण के पास एक खूबसूरत बाग दिखाई देता है, जिसका नाम नौलखा बाग होता है। वहां रुक कर सभी भाईयों की विश्राम करने की इच्छा होती है। यह नौलखा बाग रावजी दुर्जनसाल की जागीर होती है। नियाजी माली को कहते हैं कि पैसे लेकर हमें बैठने दे, लेकिन माली बगड़ावतों को वहां विश्राम करने से मना कर देता है। जिससे बगड़ावत गुस्सा हो जाते हैंवे उसे खूब पीटते हैं और नौलखा बाग का फाटक तोड़कर उसमें घुस जाते हैं। बाग का माली मार खाकर रावजी से उनकी शिकायत करनेजाता है।

बगड़ावतों को नौलखा बाग के पास दो शराब से भरी हुई झीलों का पता चलता हैं। वह शराब की झीलें पातु कलाली की होती है जो दारु बनाने का व्यवसाय करती है। दारु की झीलों का नाम सावन-भादवा होता है, जिनमें काफी मात्रा में दारु भरी होती है। सवाई भोज नियाजी और छोछू भाट के साथ पातु कलाली के पास शराब खरीदने जाते हैं। पातु कलाली के घर के बाहर एक नगाड़ा रखा होता है, जिसे दारु खरीदने वाला बजाकर पातु कलाली को बताता है कि कोई दारु खरीदने के लिये आया है। नगाड़ा बजाने वाला जितनी बार नगाड़े पर चोट करेगा वह उतने लाख की दारु पातु से खरीदेगा। छोछू भाट तो नगाड़े पर चोट पर चोट करे जाते हैं। यह देख पातु सोचती है कि इतनी दारु खरीदने के लिये आज कौन आया है? पातु कलाली बाहर आकर देखती है कि दो घुड़सवार दारु खरीदने आये हैं। पातु कहती है कि मेरी दारु मंहगी है। पूरे मेवाड में कहीं नहीं मिलेगी। केसर कस्तूरी से भी अच्छी है यह, तुम नहीं खरीद सकोगे। नियाजी और सवाई भोज अपने घोड़े के सोने के जेवर उतारकर पातु को देते हैं और दारु देने के लिये कहते हैं। पातु दारु देने से पहले सोने के जेवर सुनार के पास जांचने के लिए भेजती है। सुनार सोने की जांच करता है और बताता है कि जेवर बहुत कीमती है। जेवर की परख हो जाने के बाद पातु नौलखा बाग में बैठाकर बगड़ावतों को दारु देती है। इधर माली की शिकायत सुनकर रावजी नीमदेवजी को नौलखा बाग में भेजते हैं। रास्ते में उन्हें नियाजी दिखते हैं जोअपने घोड़े के ताजणे से एक सूअर का शिकार कर रहेहोते हैं। नीमदेवजी यह देखकर उनसे प्रभावित हो जाते हैं और पास

जाकर उनका परिचय लेते हैं। यहीं नियाजी और नीमदेवजी की पहली मुलाकात होती है।

बगडावत भारत कथा -5

नियाजी से मिलकर नीमदेवजी वापिस रावजी के पास जाकर कहते हैं कि वे तो बाघ जी के बेटे बगड़ावत हैं। रावजी कहते हैं कि फिर तो वे अपने ही भाई है । रावजी सवाई भोज के पास आकर उनको अपना धर्म भाई बना लेते हैं। और उन्हें बड़े आदर के साथ नौलखा बाग में ठहराते है।राजा दुर्जन शाल बगड़ावतो को दावत देते है जिसमे मिठाईया व पकवान बनाये जाते है ।उसके बहुत बगड़ावत राजा दुर्जन शाल को दावत देते हैं और सवाई भोज निया जी को कहते हैं कि राजा महाराजाओं के तो शराब काम में आती है इसलिए वह पातूड़ी कलाली के पास शराब लेने जाते है । पालूड़ी अभिमान से बात करती है । तब सवाईभोज ये शर्त रखते है कि अगर पातू मेरे इस बीडे (प्याला) को दारू से पूरा भर दे तो मैं आपको मूह मॉगीं कीमत दूंगा । यह बात सुनकर पातु शर्त के लिये तैयार हो जाती है और सवाई भोज के पास जाती है और अपनी सारी दारु सवाई भोज की हथेली मे रखे बीडे में उंडेलती है। यहां तक की पातु की सारी दारु खतम हो जाती है। उसकी दोनों दारु की झीलें सावन-भादवा भी खाली हो जाती है। मगर सवाई भोज का बीडा खाली रह जाता है, भर नहीं पाता ।यह देखकर पातु घबरा जाती है और सवाई भोज के पांव पकड़ लेती है और कहतीहै कि

आप मुझे अपनी राखी डोरा की बहन बनालीजिये। और सवाई भोज को राखी बान्ध कर अपना भाई बना लेती है।बगड़ावत नौलखा बागसे वापस आते समय मेघला पर्वत पर पातु द्वारा दिया गया दारु का बीड़ा खोलते हैं । बगड़ावत वहां काफी मात्रा में शराब गिराते है ।वह शराब इतनी मात्रा में जमीन पर उण्डेलते है कि शराब रिस कर पाताल लोक में जाने लगती है जो पृथ्वी को अपने शीश पर धारण करने वाले राजा बासक के सिर पर जाकर टपकती हैं, उससे शेषनाग कुपित हो जाते है। गुस्सा होते हुए राजा बासक तीनों लोकों के स्वामी भगवान विष्णु के पास जाकर बगड़ावतों की शिकायत करते हैं और कहते हैं कि हे नारायण बगड़ावतों को सजा देनी होगी। उन्होने मेरा धर्म भ्रष्ट कर दिया है। आप कुछ करिये भगवान।

बगडावत भारत कथा -6

भगवान विष्णु बगड़ावतों को श्राप देने के लिये देव लोक से पृथ्वी पर साधु का वेश धारण कर बगड़वतों के गांव गोठां में प्रकट होते हैं। 24 भाई जब जाजम पर बैठकर चौपड़ खेल रहे होते हैं तो साधु वेश में भगवान विष्णु को देखकर निया जी कहते हैं कि दादा सवाई भोज वो जो साधु आ रहे हैं वह साधु नहीं खुद भगवान विष्णु है ।अतः आप उनसे किसी प्रकार की दूरी मत बनाना भगवान विष्णु कोड़िया का रूप करके आते हैं और सारे भाई उनके चरणों में लेट जाते हैं भगवान के शरीर से निकलने

वाले मवाद को पी जाते हैं तब भगवान सवाई भोज का हाथ पकड़ लेते हैं और कहते हैं कि मैं तुम्हें छलने आया था लेकिन तुमने मुझे छल लिया मांगो क्या मांगते हो तब सवाईभोज ने कहा कि आप का दिया सब कुछ है हमारे पास लेकिन आपका आशीर्वाद बना रहे तब भगवान विष्णु ने उनको 12 बरस काया और 12 बरस माया और दी ।

उसके बाद भगवान वहां से चलकर माता साडू को छलने के लिए आए । साडू माता अपने महल में पूर्ण नग्न अवस्था में स्नान कर रही होती है और सभी बगड़ावत गायें चराने हेतु जंगल में गये होते हैं। साधु वेश धारण कर भगवान विष्णु साडू माता के द्वार पर आकर भिक्षा मांगते हैं। साडू माता की दासी भिक्षा लेकर आती है तो साधु भिक्षा लेने से मना कर देते है और कहते हैंकि वह दास भिक्षा ग्रहण नहीं करेगें तुम्हारी मालकिन अभी जिस अवस्था में है उसी अवस्था में आकर भिक्षा दे तो वो ग्रहण करेगें अन्यथा वह श्राप देकर चले जायेंगे। यह बात सुनकर साडू माता सोचती है कि यह साधु जरुर कोई पहुंचे हुए संत हैं, इन्हें अगर इसी अवस्था में भिक्षा नहीं दी तो वो जरुर श्राप दे देंगे। साडू माता नहाना छोड़ नग्न अवस्था में ही दान लेकर साधु महाराज को देने के लिये आती है। भगवान देखते है कि यह तो उसी अवस्था में चली आ रही है। साडू माता एक दैवीय शक्ति होती है। उसके सतीत्व के प्रभाव से उसके सिर के केश (बाल) इतने बढ़ जाते हैंकि उसके केशों से सारा शरीर ढक जाता है। साधु को दान देकर उन्हे प्रणाम करती है। साधु वेश धारण किये भगवान कहते है कि मैं तुमसे प्रसन्न हुआ। तू कोई भी एक वरदान मांग। मैं आया तो

तुझे छलने के लिये था (श्राप देने) मगर तेरे विश्वास से मैं प्रसन्न हुआ। साडू माता भगवान से कहती है कि महाराज मेरे कोई सन्तान नहीं है और अपने केशों की झोली फैलाकर कहती है की मेरी खाली झोली भर दो। भगवान कहते हैं तथास्तु। साडू माता तू अगर अपनी कोख बताती तो मैं तेरे गर्भ से जन्म लेता। लेकिन तूने झोली फैलाई है इसलिये मैं तेरी झोलियां ही आउंगा साडूमाता पूछती है भगवान कैसे? साधू महाराज अपने असली रुप में आकर साडू माता को दर्शन देते हैं और कहते हैं कि जब भी तुमपर कोई विपदा आये तो तुम सुवा और सोतक केदिन टाल कर सुबह ब्रहम मुहर्त में नहा-धोकर मालासेरी डूंगरी जाकर सच्चे मन से मेरा ध्यान करना, मेरा अवतार वहीं होगा।सबसे पहले चट्टान फटेगी,पानी बहकर आयेगा और उसमें कमल के फूल खिलेंगे। उन्हीं में से एक कमल के फूल में से मैं अवतरीत होकर तेरी झोल्या आउंगा। यह कह कर भगवान अन्तध्र्यान हो जाते हैं। भगवान विष्णु वापस आकर राजा बासक से कहते हैं मैं गया तो साडू माता को छलने के लिये था मगर उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दे बैठा। अबमैं कुछ नहीं कर सकता। चलो मैं तुमको शक्ति (दुर्गा) के पास ले जाता हूं, वह ही कुछ कर सकती हैं। भगवान विष्णु और राजा बासक दुर्गा के पास आते है और अपनी सारी बात वताते है। दुर्गा उन दोनों की बात सुनकर कहती है कि बगड़ावत तो मेरे सेवक हैं, मेरी भक्ति से पूजा करते रहते हैं। मैं उन्हें कैसे छल सकती हूं? मगर आपके लिये कुछ तो करना ही होगा। और बगड़ावतों को खपाने (मारने) का वचन राजा बासक को दे देती है। और दुर्गा, बुआल के राजा के यहां अवतरित होने की योजना बनाती है। एक दिन बुआल के राजा

ईडदे सोलंकी शिकार खेलने जंगल में जाते हैं और उन्हें वहाँ एक पालने में शिशु कन्या मिलती है। वह उसे घर ले आते है और उसका नाम जयमती रखते हैं। जयमती के रुप मे दुर्गा देवी के साथ एक और देवी, दासी के घर जन्म लेती है। उसका नाम हीरा होता है बुआल के राजा के कोई सन्तान नहीं होती है इसलिए वह बहुत खुश होते है और उनका बहुत खुशी से पालन पोषण करते हैं। हीरा और जयमती साथ-साथ बड़ी होती है और सखियों की तरह रहती हैं। हीरा राजकुमारी जयमती की सेवा में ही रहती है।

बगडावत भारत कथा -7

एक बार जब राजकुमारी जयमती और हीरा दासी फुंदी (कीकली)खा रही होती है उनके पावों की धम-धम से सारा महल हिलने लग जाता है (क्योंकि वो दोनों तो दैवीय शक्तियां होती है) यह देख राजा पूछते है कि यह क्या हो रहा है? तो पता चलता है कि बाईसा फुंदी खा (खेल) रही हैं। राजा देखते है की बाईसा अब बड़ी हो गयी है, इनकी शादी के लिये कोई सुयोग्य वर देखना होगा, और ब्राह्मणों को बुलवाते हैं। राजा ब्राह्मणों को टीका (रुपया व नारीयल) शगुन देकर कहते है कि राजकुमारी के लायक कोई सुयोग्य, प्रतापी, सुन्दर राजकुमार को ही ये शगुन जाकर देना और राजकुमारी का सम्बंध तय करके आना। यह बात राजकुमारी जयमती को पता चलती है कि पिताजी ब्राह्मणों के हाथ मेरी शादी का शगुन भेज रहे हैं तो वह चुपके से ब्राह्मणों को अपने पास बुलाती है, और उनकी खूब

आवभगत करती है। और कहती है, हे ब्राह्मण देवता आप मेरी शादी का शगुन ऐसे घर में जाकर देना जहां एक बाप के २४ बेटे हो और दूसरे नम्बर के बेटे का नाम सवाई भोज हो उसी के यहां जाकर मेरा लगन तय करना। और साथ में कपड़े पर सवाई भोज का चित्र बनाकर देती है और कहती है कि अगर कहीं और जाकर आपने मेरा सम्बंध तय किया तो मैं आप को जिन्दा नहीं छोडूंगीं, मरवा दूंगी। ब्राह्मणों को जाते समय जयमती काफी रुपया-पैसा देकर भेजती है।ब्राह्मण खुशी-खुशी रवाना हो जाते हैं। ब्राह्मणसारी दुनियां में घूम फिर कर थक जाते हैं लेकिन उन्हें जयमती द्वारा बताया हुआ वर नही मिलता है। यहाँ तक कि उनकी हालत इतनी दयनीय हो जाती है कि उनके कपड़े फट जाते है, दाढ़ी बढ़ जाती है। भिखारियों से भी बदतर हालतहो जाती है। घूमते-घूमते आखिरकार ब्राह्मण गोठां पहुंचते हैं। वहां उन्हें पनिहारियां मिलती हैं और उनकी हालत पर हंसती हैं क्योकि उनके कपड़े फटे हुए और वह भूखे प्यासे होते हैं। पनिहारियां उनसे पूछती हैं कि क्या दुख है जो इतने परेशान हो, तो ब्राह्मण कहते हैं कि ऐसे कुल की तलाश है जहां एक बाप के २४ बेटे हो और सवाई भोज का चित्र दिखाते हैं। वे कहती हैं कि यह तो हमारे ही गांवके हैं। और ब्राह्मणों को बगड़ावतों के घर छोड़ देती हैं। बगड़ावत उनकी आव भगत करते हैं। नए कपड़े, खाना-पीना देते हैं। ब्राह्मण सवाई भोज को राजा बुआल द्वारा दिया हुआ शगुन का टीका और नारीयल देते हैं। सवाई भोज कहते हैं कि हमारे सभी भाईयों के दो-दो रानियां है। इसे लेकर हम क्या करेगें। और फिर हम तो ग्वाल हैं। एक राजा के यहाँ तो राजा ही सम्बन्ध करता है। ऐसा करो की यह शगुन तुम राण के राजाके

यहां ले जाओ। यह बात सुनब्राह्मण राजकुमारी जयमती द्वारा कही सारी बात बताते हैं और कहते हैं यह तो आप के लिये ही है और यह आपको ही लेना होगा। सवाई भोज सभी भाईयों की सहमती से शगुन ग्रहण कर लेते हैं और ब्राह्मणों को राजी खुशी वहां से दक्षिणा देकर विदा करते हैं। ब्राह्मण उन्हें राजा बुआल का सारा पता ठिकाना देकर कहते हैं कि फलां दिन के सावे हैं और ४ दिन पहले बारात लेकर बड़े ठाट-बाट से शादी करने केलिये पधारें। ब्राह्मणों के जाने के बाद सवाई भोज अपने सभी भाईयों के साथ मिलकर यह फैसला करते हैं कि यह लगन का टीका हम स्वयं रावजी के यहां भिजवा देते हैं। रावजी की कोई सन्तान नहीं है, शायद इस रिश्ते से उन्हें कोई सन्तान प्राप्त हो जाए। जब रावजी को शगुन का टीका नारीयल मिलता हैं तब रावजी कहते हैं कि मैं तो अब बूढा हो गया हूं और टीका लेने से आनाकानी करते हैं। बगड़ावत जिद करते हैं और कहते हैं कि आप चिंता मत करिये, शादी में सारा धन हम खर्च करेंगे। रावजी कंजूस प्रवृति के होते हैं, खर्चे की बात सुनकर तैयार हो जाते हैं। बगड़ावत रावजी से कहते हैं हम बारात में इधर से ही पहुंच जायेगें। आप उधर से सीधे पहुंच जाना, हम सब बुवांल में ही मिलेंगे। शादी के लिए निमंत्रण भेजे जाते हैं। पहला निमन्त्रण गणेशजी को और सभी देवी देवताओं को, फिर अजमेर, सावर, पीलोदा, सरवाड़, भीलमाल और मालवा सभी जगह निमंत्रण भेजे जाते हैं। रावजीके ब्याह की खुशी में गीत गाए जाते हैं उन्हें उबटन लगाया जाता है, नहला धुला कर उनका श्रृंगार किया जाता है। इधर २४ बगड़ावत भाई सज धज कर अपने घोड़ों पर सवार हो बुआल के राजा के यहां पहुंच जाते हैं। उन्हें बाग में ठहराया जाता है। बारात मे आए

हुए बगड़वतों को देखकर नीमदेवजी कहते हैकि बगड़ावत तो ऐसे सज कर आए हैं जैसे कि शादी इन्हीं की हो रही हो। सब के सिर पे मोहर बधा होता है। हीरा सभी बगड़ावतों का स्वागत करती है। जब जयमती को पता चलता है किबगड़ावत आ गये हैं, वह हीरा से पूछती है कि सवाई भोज दिखने में कैसे हैं, और वह सवाई भोज के बारे में ही पूछती रहती है। हीरा जयमती के मन की बात जानती है इसलिए सवाई भोज को कलश बन्धाती है। सवाई भोज हीरा के कलश को मोहरों से भर देते हैं। हीरा रानी को जाकर बताती है कि बगड़ावत तो बड़े दातार हैं। फिर रावजी की बारात आती हैं। बारात का स्वागत सत्कार होता है। जयमती की माता रावजी की आरती उतारती है। हीरा रावजी को कलश बन्धाती है। रावजी कंजूस प्रवृति के होते है इसलिए हीरा के कलश में एक टका डाल देते हैं। हीरा रानी जयमती को जाकर बताती है कि रावजी तो एकदम कंजूस हैं। जयमती हीरा से पूछती है कि हीरा रावजी दिखने में कैसे हैं? तो हीरा पूछती है कि आदमी की औसत आयु कितनी होती है? सौ बरस, रानी जवाब देती है।हीरा बताती है कि इतनी तो वो जी लिये है और बाकि की जिन्दगी नफे की है, यानि रावजी बूढे हो चुके हैं।

जब तोरण का समय होता है तो रावजी हाथी केहोदे में सवार हो तोरण मारने के लिये आते हैं। तोरण के पास आते ही हाथी चमक जाता है और थोड़ा पीछे हट जाता है (क्योंकि हीरा नाहर बन तोरण के पास बैठ जाती है, शेर की आंखे देख हाथी डर जाता है।) और रावजी होदे में ही गिर जाते हैं। इतने में तोरण का मुहर्त निकल रहा होता है तो सवाई भोज अपने बंवली घोड़ी को आगे लेजाकर तोरण मार देते हैं। सवाई भोज को तोरण मारते देख रावजी के भाई नीमदेवजी और बगड़ावत आमने-सामने हो जाते है। जैसे-तैसे आपस में समझोता हो जाता है। जयमती हीरा को सवाई भोज से खाण्डा मांगने बुआल के बाग में भेजती है और जब हीरा खाण्डा ले आती है तब उस पर मोड़ बांधती है।जयमती खाण्डे के साथ फेरे लेलेती है और खाण्डा वापस भिजवा देती है। जब सवाई भोज खाण्डे पर मोड़ और मेंहदी लगी हुई देखते है तो नियाजी से कहते है कि भाई नीया टीका नारीयल अपने पास आया, तोरण हमने मारा फेरे अपने खाण्डे के साथ हुए तो यह लुगाई अपनी हुई कि रावजी की। नियाजी कहते हैं कि दादा भाई लुगाई तो अपनी ही हुई लेकिन अब क्या करना चाहिए। सवाई भोज नियाजी को समझाते हैं कि अभी तो जयमती को रावजी के साथ जाने दो, बाद में निपट लेंगे। फेरों के समय रानी जयमती रावजी के साथ अपना रुप बना कर बैठ जाती है और उस रुप के साथ रावजी का ब्याह हो जाता है। रावजी अपनी रानी जयमती को लेकर रवाना होते हैं। जिस रथ में रानी जयमती हीरा के साथ होती है उस रथ में गाड़ीवान रथ को दौड़ाता हुआ आगे ले जाता है। बगड़ावत भी पीछे-पीछे आ रहे होते हैं। जयमती हीरा से कहती कि में रावजी के साथ नहीं जाना चाहती और गोठां का

रास्ता आने से पहले कोई युक्ति लगाते हैं कि सवाई भोज से एक बार मुलाकात हो जाए। जिस जगह पर दो रास्ते फटते है एक राण की ओर, दूसरा गोठां की ओर जाता है, वहां हीरा अपने चमत्कार से शेर बनकर उस गाड़ीवान को डरा देती है और वो बैल के पैरों में गिर जाता है और चिल्लाता है, "नाहर-नाहर'। यह शोर सुनकर पीछे आ रहे बगड़ावत अपने घोड़े को दौड़ा कर आगे पहुंचते हैं। नियाजी पूछते है भाभीजी कहां है नाहर? नियाजी जयमती को पहली बार भाभी कहकर पुकारते है। रानी जयमती कहती है की नाहर-वाहर कुछ भी नहींहै। मुझे आप से बात करनी थी। मैंने सवाई भोज को अपना पति माना है। उनकी तलवार के साथ फैरे लिये हैं। मैं रावजी के यहां एक पल भी नहीं रह सकती। आप मुझे अपने साथले चलिये और जयमती सवाई भोज और नियाजी के सामने रोने लगती है और कहती है कि मैंने तो लगन (टीका) भी आपके यहां भेजा था। इस बूढे रावजी के साथ मैं नहीं रहूंगी। आप मुझे अपने साथ ले चलिये। नियाजी कहते हैं कि हमें थोड़ा समय दीजिये। फिर सवाई भोज जयमती को वचन देते हैं और कहते हैं कि अभी तो तुम रावजी के महलों में जाओ और हम सब तैयारी कर तुम्हें ६ महीने बाद वहां से ले आयेगें। ब्याह के बाद जयमती और हीरा राण पहुंच जाते हैं रानी जयमती रावजी को अपने नजदीक नहीं आने देना चाहती थी इसलिए वह रावजी से कहती है कि हमारे लिये अलग रावडा (महल) बनवाओ, तब हम आपके साथ रहेंगे। रावजी नई रानी के लिये नया महल बनाने की जिद मान लेते हैं और महल बनवाने का काम शुरु हो जाता है। महल बनाने के लिये सैकड़ों कारीगर दिनभर लगेरहते हैं। दिन में कारीगर काम करते हैं लेकिन रात

में रानी जयमती और हीरा उसे जाकर बिगाड़ देती थी। ऐसा करते हुए भी महल ६ महीनों में तैयार हो जाता है। बहुत इन्तजार करने पर रानी जयमती व्याकुल हो जाती है।फिर वह हीरा से पूछती है कि ६ महीने तो बीत गए, बगड़ावत कब मुझे लेने आएगें। हीरा कहती है वे नही आएगें। वे अपने काम में लग गए होगें,भैंसे चराने में उलझ गए होगे। रानी कहती है कि सवाई भोज ने वचन दिया है उनका वचन महादेव का वचन है वे जरुर आएगें। ६ महीने पूरे होने पर जयमती हीरा से परवाना लिखवाती है, कि जैसे सीता रावण की कैद में थी उसी तरह मैं राणमें रावजी की कैद में हूं। अपने वचन के अनुसार मुझे यहां से जल्दी छुड़वाकर ले जाओ। हीरा चील बनकर बगड़ावतों के यहाँ रानी का पत्र पहुंचाती है।

बगडावत भारत कथा -9

उधर गोठां मे बगड़ावतों के दरबार में सभी भाई बैठे होते है, हीरा चील बनकर आकाश में उड़ती हुई आती है और रानी जयमती का पत्र गिरा देती है। जिसे तेजाजी देख लेते हैं और अपनी ढाल से ढक देते हैं। यह सब सवाई भोज देख लेते हैं और तेजाजी से अकेले में पूछते हैं कि दादा भाई क्या संदेश आया है।वो कागज का परवाना कहां है जो ऊपर से गिरा था। तेजाजी उस परवाने के बारे मे बताने से इन्कार कर देते है । सवाई भोज जिद करते हैं तो तेजाजी पत्र सवाई भोज को दे देते हैं। सवाई भोज रानी जयमती का पत्र पढ़ते हैं। और फिर सभी बगड़ावत भाई आपस में

बैठकर निर्णय लेते हैं कि रानी को रावजी के यहां से भगाकर लाना ही होगा। रानी को भगाकर लाने के बाद क्या होगा, इसके भी सारे परिणामों पर गौर कर लिया जाता है और बगड़ावत सारी तैयारी में जुट जाते हैं। तेजाजी को भी साड़ीवान भेजकर पाटन की कचहरी बुलाया जाता है। साडू माता नियाजी को बुलाकर पूछती है कि क्या बात है, कहाँ की तैयारी है? नियाजी उन्हें सारी बात बता देते हैं कि सवाई भोज की शादी कैसे रानी जयमती के साथ हुई। फिर नियाजी साडू माता से कहते हैं कि हम सब रानी को लेने जरुर जाऐंगे। वो हमारे भाई सवाईभोज के खाण्डे के साथ शादी कर चुकी है। ऐसा कहकर नियाजी और बाकी सभी भाई अपने घोड़ो को तैयार करते हैं। जब साडू माता उन्हें जाने के लिए मना करती है तो नियाजी कहते कि हमने शक्ति को वचन दिया है इसलिए जाना तो अवश्य पडेगा।साडू माता कहती है कि ऐसी औरत को घर लाने से क्या फायदा जिसके लिये खून बहाना पड़े।एक भवानी के लिए आप को अपने माथे देने पड़ेगें। साडू माता फिर नियाजी को समझाती है कि घर में एक औरत है तो दूसरी को क्यों लाते हो? लेकिन नियाजी नहीं मानते और जयमती को लेने जाने की बात दोहराते हैं। तेजाजी की पत्नी तेजाजी को कहती है, आप तो बणीयेके भाणजे हो, आप रण में मत जाना। साडू माता कहती है कि मैं आपको दो दो गुर्जरी के साथ शादी करवा दूंगी लेकिन आप राण मे मत जाओ । तो नियाजी फिर कहते हैं कि वचन दिया हुआ है, जाना तो पडेगा। साडू माता बगड़ावतों को जाने के लिए बार-बार मना करती हैं। साडू माता कहती है कि पर नारी को अंग लगाना अच्छा नहीं है। रावण चाहे कितना ही बलवान था मगर सीता हरण करने से उसका भी अंत हो

गया। जयमती रावजी की स्त्री है। पर-नारी को आप भी मत लाओ नहीं तो अन्जाम बुरा होगा। साडू माता नियाजी कोबताती है कि मैंने सपना देखा है कि खारी नदी के ऊपर घमासान युद्ध हो रहा है। कटे हुए माथों का ढेर लगा हुआ है। मेरी आखों से आंसू आ रहे हैं। साडू माता कहती है कि मैंने भवानी को मुण्ड मालाधारण किये हुए खारी नदी के घाट पर बैठे देखा है। इसपर नियाजी कहते हैं कि माताजी सपना तो झूठा होता है, सपने पर क्या यकीन करना। जब बगड़ावत साडू माता के बहुत समझाने पर भी नहीं मानते हैं तो साडू माता बगड़ावतों के गुरुजी को एक पत्र लिखती है कि गुरुजी आप के चेले गलत राह पर जा रहे हैं। आप आकर इन्हें समझाओ। बाबा रुपनाथजी पत्र का जवाब देते हैं कि साडू माता रानी को तो जरुर लाना है। नियाजी बाबा रुपनाथजी का पत्र पढ कर सबको सुनाते हैं बगड़ावतों के यहां रणजीत नगाड़ा बजने लगता है।माता साडू कहती है, बाबाजी को तो आग बुझाने के लिए कहा था इन्होंने तो और आग लगा दी है। नियाजी रानी जयमती की सुन्दरता का वर्णन साडू माता के सामने करते हैं। उनके श्रृंगार और रुप के बारे में बताते हुए उन्हें रानी पद्मनी की उपमा देते हैं। इस पर साडू माता नियाजी से कहती है कि आप जाओ और रानी को लेकर आओ मैं नई रानी को अपनी बहन के जैसे समझूंगी और उसे लेकर आओगे तो उसकी आरती उतारकर हंसी-खुशी उसका स्वागत करूंगी। दूसरी सभी रानियाँ साडू माता से कहती हैं कि रानी जयमती है तो बहुत खूबसूरत लेकिन है तो दूसरे की औरत। बगड़ावत राण जाने के लिए अपने घोड़ों का श्रृंगार करते हैं। सवाई भोज हीरों-पन्नों और सोने के जेवरों से सजी हुई बुली घोड़ी पर सवार होकर

निकलते हैं। साडू माता बगड़ावतों को शाम के वक्त जाने के लिए मना करती है और सुबह जाने का आग्रह कहती हैं। नियाजी कहते हैं कि जाना तो है ही, आप हमारी वापसी के लिए शगुन करना और अब हमें आज्ञा दो। साडू माता की अनुमति के बाद सभी भाई घोड़ों को नचाते हुए सवार होकर गांव के बाहर इकट्ठे होते हैं और देखते हैं सभी भाई आ गये मगर तेजाजी नहीं आये। नियाजी तेजाजी को परवाना लिखते हैं कि तेजाजी आप पत्र पढ़ते ही जल्दी आ जाना हम आप पर आंच भी नहीं आने देंगे। आपको सुरक्षित वापस लायेगें। आप नहीं आये तो आपका सिर काटकर साथ ले जायेगें। समाचार सुनकर तेजाजी अपने घोड़े पर सवार होकर अपने भाइयों के साथ आ जाते हैं। और सारे बगड़ावत भाई रानी को लेने के लिए राठौड़ा की पाल पर पहुंचते हैं। उधर रानी जयमती के लिये बनाया गया नया महल बनकर तैयार है, रानी जयमती महलों में रहने आ जाती है। जब रावजी अपनी नई रानी जयमती के पास रात को आते हैं, रानी उनके साथ चौपड़ खेलती है और अपनी माया से रावजी को मुर्गा बना देती है और हीरा को बिल्ली बना देती है। रात भर मुर्गा बने रावजी बिल्ली से बचने से लिये इधर-उधर भागते, छिपते रहते हैं। ऐसा क्रम कई दिनों तक चलता रहता है। एक दिन रावजी के छोटे भाई नीमदेजी पूछते हैं कि भाईसा नई रानी में इतना मगन हो गये हो कि आपकी आंखे इतनी लाल हो रही हैं, क्या रात भर सोये नहीं? रावजी कहते हैं कि नीमदे लगता है महल में कोई भूत प्रेत हैं जो रात भर मेरे पीछे बिल्ली बनकर घूमता रहता है और मुझे डराता है।

बगडावत भारत कथा -10

इधर राण में जयमती (भवानी) हीरा से पूछती है कि बगड़ावत आ गये क्या? हीरा जवाब देती है कि मुझे नहीं लगता कि वो आऐगें। जयमती कहती है बादलो में बिजली चमक रही है। बगड़ावतों के भाले चमक रहे हैं, बगड़ावत आ रहे हैं। हीरा कहती है बाईसा मेरे को ऐसा कुछ नहीं दिख रहा है। बगड़ाबत राण में रानी को लेने आ जाते हैं और नौलखा बाग में ठहरते है । रानी जयमती को संकेत कर देते हैं कि हम आपको लेने आ गये हैं। जैसे ही रानी जयमती को बगड़ावतों के आने की सूचना मिलती है रानी जयमती अपनी माया से अपने पसीने का सूअर बनाकर नौलखा बाग के पास छोड़ देती है। नियाजी की निगाह जब उस पर पड़ती है तो वह उसका शिकार कर लेते हैं। वहां नौलखा बाग में नियाजी और नीमदेवजीकी फिर से मुलाकात होती है। नीमदेवजी रावजी के पास जाकर बगड़ावतों के आने की खबर देते हैं। इधर रानी जयमती हीरा को कहती है की जाकर पता करो सवाई भोज के क्या हाल हैं। जब हीरा जाने के लिए मना करती है तो जयमती हीरा को लालच देती है और अपने सारे गहने हीरा को पहनने के लिये देती है। हीरा कहती है ये गहने मुझे अच्छे नहीं लगते हैं, ये तो आपको हीअच्छे लगते हैं। जयमती हीरा को कहती है कि ये गहने पहनकर तू सवाई भोज का पता करने जा। हीरा नौलखा बाग में बगड़ावतों से मिलने पहुंचती है जहां बगड़ावत भाई चौपड़ खेल रहे होते है । वहां हीरा के गले में नियाजी दारु का गिलास उण्डेल देते हैं। हीरा दारु पीकरबेहोश हो जाती है और रात भर नौलखा बाग में ही रहती

है। बगड़ावत हीरा को जाजम (दरी) से ढक देते हैं, ताकि कोई देख ना ले। जब सुबह हीरा को होश आता हैऔर वह महलों में रानी के पास लौटती है तो किसी को शक न हो इसलिए अपने साथ चावण्डिया भोपा को लेकर आती है और कहती है कि रानी के पेट में दर्द था उसको ठीक करने के लिए इसे लेने गई थी। चावण्डिया भोपा के वापस लौटने के बाद रानी जयमती हीरा को पीटती है और ईर्ष्या वश उसे खूब खरी-खोटी सुनाती है कि तू भोज पर रीझ गयी है। भोज ने रात को तुझे छुआ तो नहीं और क्या-क्या बात हुई बता। जब हीरा सारीबात सही-सही बताती है तब रानी जयमती वापस हीरा को मनाती है, उसे खूब सारा जेवर देती है। एक दिन रात को हीरा और रानी जयमती सवाई भोज से मिलने नौलखा बाग की ओर जा रही होती हैं, संयोग से उस दिन नीमदेवजी पहरे पर होते हैं और वो रानी की चाल से रानी को पहचान जाते हैं। रानी नीमदेवजी को देख पास ही भडभूजे की भाड़ में जा छुपती है। जिसे नीमदेवजी देख लेते हैं और हीरा से पूछते हैं कि हीरा भाभी जी को इतनी रात को लेकर कहां जा रही हो? हीरा सचेत हो कर कहती है कि बाईसा को पेट घणो दूखे है, इस वास्ते भड़भूजे के यहाँ आए हैं। यह झाड़ फूंक भी करना जानता है,बताबा ने आया हैं। नीमदेवजी को हीरा की बात पर विश्वास नहीं होता है। भड़भूजा की भाड़ में छिपी रानी को निकालते हैं और हीरा को कहते हैं कि हीरा तुझे इस सच की परीक्षा देनी होगी। हीरा परीक्षा देने के लिए तैयार हो जाती है। नीमदेवजी लुहार को बुलवातेहैं और लोहे के गोले गरम करवाते हैं। लुहार भट्टी पर लोहे के बने गोलों को तपा कर एकदम लाल कर देता है। जब लुहार लोहे के तपते हुए गोले चिमटे से पकड़कर हीरा के हाथ में

देने वाला होता है तब नीमदेवजी हीरा से कहते हैं कि यदि तू सच्ची है तो तेरे हाथ नहीं जलेगें और अगर तू झूठ बोल रही होगी तो तेरे हाथ जल जायेगें। हीरा लोहे के गर्म गोलों को देखती है तो एक बार पीछे हट जाती है और रानी की ओर देखती है। फिर अचानक हीरा को लाल तपते हुए गोले के उपर एक चींटी चलती दिखाई देती है तो वो समझ जाती है कि यह बाईसा का चमत्कार है। और वह तपते हुए गोले को अपने हाथों में ले लेती है। इस पर नीमदेवजी कहते हैं कि रानी जी के पेट में दर्द था तो भड़भूजे को ही महलों मे बुलवा लेते। इतना कहकर नीमदेवजी वहां से चले जाते हैं। इसके बाद नीमदेवजी दरबार में रावजी के पास जाकर रानी की शिकायत करते हैं, और कहते हैं कि कहीं बगड़ावत भाई रानी को उठाकर न ले जाएं। रावजी जवाब देते हैं कि राण में आप जैसे उमराव हैं ऐसे कैसे कोई रानी को उठाकर ले जा सकता है। रानी जयमती दूसरे दिन हीरा के हाथ बगड़ावतों को संदेश भेजती है कि आप कुछ दिन तक यहीं बिराजो, नौलखा बाग को छोड़कर कहीं मत आना जाना। महलों की ओर भी नहीं आना, नहीं तो लोग समझेगें बाईसा त्रिया चरित्र है। रानी जयमती का यह संदेश नियाजी को ही देकर हीरा वापस लौट आती है। जब रानी हीरा से पूछती है किसवाई भोज से क्या बात हुई तो हीरा बताती है कि सवाई भोज से तो मैं मिली ही नहीं, मैं तो नियाजी से ही मिलकर वापस आ गई हूँ। तब रानी कहती है कि तूने नियाजी से बात क्यों करी? तुझे सवाई भोज से मिलने भेजा था और तू नियाजी से ही मिल कर वापस आ गई। हीरा कहती है रानी जी आपका आज मुझ पर से भरोसा उठ गया है।अब आपका और मेरा मेल नहीं हो सकता है। अब मैं आपके साथ नहीं

रह सकती। रानी हीरा को मनाती है और उसकी बढ़ाई करती है। कहती है हीरा तेरे को मैं सारे श्रृंगार करवाऊगीं और हीराको अपने कपड़े और सारे गहने देती है। मनाती है और हीरा से कहती है तू मेरा साथ मत छोड़। रानी हीरा से कहती है, हीरा यहां से कैसे निकला जाय कोई उपाय करो। हीरा कहती है रावजी का चारों ओर पहरा लगा हुआ है, क्या करें। रावजी को तो हम सूअर का शिकार करने भेज देगें। मगर पहरे का क्या करेगें? हीरा कहती है बाईसा आप पेटदुखने का झूठा बहाना करो। रानी हीरा की सलाह अनुसार ऐसा ही करती है।

बगडावत भारत कथा -11

हीरा रावजी के दरबार में जाकर फरियाद-फरियाद चिल्लाती है। रावजी पूछते है हीरा क्या बात हैं। हीरा कहती है दरबार बाईसा के पेट में बहुत दर्द हो रहा है औरलगता है बीमारी इनकी जान लेकर ही छोड़ेगी। रावजी नीमदेवजी को कहते है भाईनीमदेव रानीजी की बीमारी बढ़ती ही जावे है । कोई अच्छा जाना-माना भोपा हो तो पता करवाओं। ६ महीनो से ये बीमारी निकल ही नहीं रही है। नीमदेवजी उडदू के बाजार में आते हैं। वहाँ उन्हें चांवडिया भोपा मिलता हैं और नीमदेवजी से कहता है कि डाकण (डायन), भूत, छोट (प्रेत), मूठ (दुष्ट आत्मा) को तो मैं मिनटों में खत्म कर देता हूं। उसे नीमदेवजी अपने साथ महलों में ले जाते हैं। नीमदेवजी हीरा से कहते हैं कि इसे ले जा और तेरी बाईसा को दिखा। हीरा भील को

रानी जयमती के महल में ले जाती है। रानी अपनी माया से भोपा में भाव डाल देती है जिससे भोपा रावजी के पास आकर कहता है कि मैं रानीजी को ठीक कर सकता हूँ। भोपा ने बताया कि रानी जयमती ने भैरुजी से अपने लिए राजा जैसा वर मांगा था। उन्होनें राजा जैसा वरतो पा लिया मगर भैरुजी की जात अभी तक नहीं जिमाई। इसलिये भैरुजी का दोष लग गया। जात जिमानी पडेगी,नीमदेवजी हीरा से पूछते हैं कि जात जिमाने में क्या लगेगा? हीरा बताती है की १२ मन का पूवा, १२ मणकी पापड़ी, १२ मण का सुवर जिसके बाल खड़े नहीं होवे, खून निकले हुआ नहीं हो, को बाईसा पर वारकर छोड़ो तो बाईसा बचे, नहीं तो नहीं बचेगी। और यह टोटका रावजी के हाथ का ही लगेगा और किसी के हाथ का सूअर नहीं चढ़ेगा। और ये बात सुनते ही रावजी सूअर का शिकार करने के लिये अपनी सेना तैयार करने का हुकम देते हैं। उसमें सभी उमराव , कालूमीर, दियाजी सावर के उमराव और रावजी के खासम खास सरदार और ५०० घुड़ सवार तैयार हुए।इतने में दियाजी ने कहा रावजी मेहलों में पहरा अच्छा लगाना क्योकि २४ बगड़ावत भाई नौलखा बाग में डटे हुए है। वो कहीं रानी सा को उठा कर न ले जाये। रावजी कहते है वो तो मेरे भाई हैं और उन्होनें ही मेरी शादी करवाई और पैसा भी उन्होने ही खर्च किया। वो ऐसा नहीं कर सकते। फिर भी रावजी शिकार पर जाने से पहले नीमदेवजी को पहरे की जिम्मेदारी सोंप कर जाते हैं। उधर रानी जयमती अपने पसीने से एक सूअर बनाती है। उसका वजन १२ मण होता है। और अपनी माया से उसे रावजी के आगे छोड़कर कहा की हे सुवरड़ा राजाजी को नाग पहाड़ से भी आगे दौड़ाता हुआ ले जाना और ४ दिनो तक वापस आने का अवसर

मत देना। इस तरह रावजी सुवर के पीछे-पीछे नाग पहाड़ से आगे निकलजाते हैं। नाग पहाड़ पहुंच कर वह माया से बना सूअर गायब हो जाता है।

बगडावत भारत कथा -12

राणा रावजी और सारे सामन्तो को शिकार के बहाने दूर भेजकर रानी जयमती और हीरा बगड़ावतों के साथ भागने की योजना बनाती है। रावजी शिकार पर जाते समय नीमदेवजी को पहरे पर लगा जाते हैं कि रानी का ध्यान रखना। रानी हीरा से कहती है कि हीरा रावजी तो गये पर नीमदेवजी को पहरे पर लगा गये। अब इसका क्या उपाय करें। हीरा कहती है बाजार से जहर मंगवाओ और लाडू बनवाओ। जहर के लड्डू बनते हैं और भैरुजी के चढ़ाकर हीरा सब को बांट देती है। जो भी लड्डू खाता है वो ४ घंटे की नींद सो जाता है। जिस रास्ते से जाना है उस रास्ते हीरा सब को लड्डू बांटकर वापस आती है ताकि उन्हें जाते हुए कोई देख ना सके। चावण्डिया भोपाजी लाडू खाते हैं तो हीरा से कहते हैं, हीरा मैंने तो मीठा मुहं कई वर्षों बाद किया है। हीरा कहती है लाडू तो सब को दे दिये मगर नीमदेवजी की सवारी महल के सामने घूम रही है। हीरा कहती है रानी जी श्रृंगार करो और पीछे के रास्ते से बगड़ावतों के यहां चलते हैं। हीरा रेशम की डोर लेकर आती है और उसकी रस्सी बनाती है और महल की पिछले वाली खिड़की से रेशम की रस्सी डालती है जिसके सहारे दोनों महल से बाहर

निकल आते हैं। रानी और हीरा दोनों नौलखा बाग के बाहर आकर अपनी माया के प्रभाव से बाग के दरवाजे के ताले खोल देती है। ये देख कर बाग का माली रानी जी के पांव छूता है और रानी जी बगड़ावतों से मिलने अंदर जाती है। सवाई भोज अपनी बूंली घोड़ी पर रानी जयमती को और नियाजी अपने नौलखे घोड़े पर हीरा को बैठाकर राण से रवाना होंते हैं। रास्ते में रानी सोचती है कि बगड़ावतों की परीक्षा लेती हूं और देखती हूं कि ये रावजी की सेना से मुकाबला कर पायेगें कि नहीं। रानी वही पर घोड़े से उतर जाती है और अपने पांव की पायल खोलकर गिरा देती है और कहती है मेरी पायल बावड़ी में गिर गयी है उसे निकालो। अपनी करामात दिखाओ नहीं तो मुझे यहीं छोड़ कर वापस चले जाओ। सवाई भोज शिव महादेव जी का ध्यान करते हैं, और पानी के ऊपर पायल तैरने लग जाती है,सवाई भोज रानी को पायल वापस दे देते हैं। जब वो वापस वहां से चलने लगते हैं तब भवानी घोड़े पर सवार सवाई भोज के कलेजे (दिल) पर हाथ रखे होती है और अपने मैल से तीतर बनाकर घोड़ी के पावों में छोड़ देती है जिससे घोड़ी चमक जाती है, और उछलती है। तब सवाई भोज की धड़कन तेज हो जाती है और रानी जयमती कहती है कि सवाई भोज जी घोड़ी के चमक जाने से ही आपका कलेजा जोर से धड़कने लगा है। आप मुझे लेकर जा तो रहे हो, मगर रावजी की विशाल सेना के सामने क्या लड़ सकोगे। तो सवाई भोज को जोश आ जाता है और वो अपनी तलवार से ११ हाथ की पत्थर चट्टान को चीर देते हैं। जो आज भी राण व भिनाय (जिला अजमेर) के पास मोजूद है । ये देख कर रानी सोचती है कि एक ही वार से चट्टान चीर दी, रावजी का क्या हाल होगा,

जब सभी २४ भाई एक साथ लड़ाई करेगें। रानी जयमती वहीं पर सवाई भोज से वचन लेती है कि रावजी से युद्ध केसमय आप सभी २४ भाई अपनी सेना के साथ रावजी से एक-एक कर युद्ध करोगे। सभी भाईसाथ मिलकर युद्ध नहीं करोगें। ओर सवाई भोज के पास जो चंद्रती खांडा तलवार थी उसको युद्ध में प्रयोग नहीं करोगे सवाई भोजरानी जयमती को ये वचन दे देते हैं कि हम साथ मिलकर युद्ध नहीं करेंगे। सवाई भोजरानी जयमती को गोठां में लाने से पहले राता देवरा में उतारते हैं। तब रानी जयमन्ती कहती है कि आपके घर से मुझे बधाई के गीत गाते हुए लेने आएं तो मैं घरचलूं। जब बगड़ावत वहाँ से घर वालों को खबर देने गोठां चले जाते हैं तब वहाँ पर पोमा घासी आ जाता है और राणी से कहता है, आप मेरे साथ शादी कर लो, बगड़ावतों के यहां तो पहले से ही बहुत रानियां है। भवानी उससे बगड़ावतों के घर की सारी बातें पूछ लेती है। और बाद में नोहत्थी नाहरी बन के हुंकार करती है। पोमा घासी नाहरी को देखकर डर के मारे गिर जाता है, उसके रोटी और प्याज बिखर जाते हैं और पानी की बतूकड़ी फूट जाती है। गांव की गुर्जर महिलाएं बधाई के गीत गाते हुए रानी को लेने के लिये आती हैं। साथ में २४ भाईयों की राणीयां भी आती हैं। जब नेतूजी और दीपकवंर रानी जयमती के पास आती है तो रानी जयमती दीप कंवर से पूछती है की तू किसकी बेटी है और ये किसकी बहू।दीपकंवर बाई रानी को जवाब देती है कि मै सवाई भोज की लड़की और ये काका नियाजी की रानी नेतुजी हैं। सभी रानियाँ तो रानी जयमती के पांव छूती हैं मगर नेतूजी नहीं छूती। जब सब औरतें रानी को लेकर गोठां पहुंचती है तो वहां पर साडू माता आरती ऊतारकर

नववधु का स्वागत करती है। रानीजी साडू माता से कहती है कि आपने बहुत प्यार से मेरा स्वागत किया है आज तो मैं आपकी सौत बनकर आई हूँ। जब देवनारायण भगवान आपकी गोद में खेलेंगे तब मैं आपकी बहू बनकर आऊँगी। रानी जयमती को उनके महल में ले जाया जाता हैं। रानी जयमती और सवाई भोज गोंठा के महल में चौपड़ खेलते हैं।

बगडावत भारत कथा -13

जब रावजी शिकार से वापस लौटते हैं, तब महल में रानी के गहने पड़े हुए देखते है। उन्हें नीमदेवजी कहते हैं कि भाई, बगड़ावत रानी सा को भगाकर ले गये हैं। ये बात सुनकर रावजी को यकीन नहीं होता और कहते हैं वो तो हमारे धर्म भाई है वो ऐसा नहीं कर सकते हैं। जब चारों ओर साड़ीवान (सवारसंदेश वाहक) दौड़ाए जाते हैं कि रानी सा का पता लगाओ। रावजी को संदेश वाहक से पता चलता है कि रानी सा तो बगड़ावतों के यहां गोठां में है तब जाकर रावजी को विश्वास होता है कि बगड़ावत रानी को भगाकर ले गये हैं। रावजी नियाजी को एक परवाना लिखकर भेजते हैं कि भाई राणी को वापस भेज दो। नियाजी जवाब में रावजी को पत्र लिखते हैं कि हमने तो रानी शिवजी के चढ़ा दी है और आपको रानी चाहिए तो दूसरा ब्याह कर लो। दूसरा परवाना रावजी ने बाघजी को लिखा कि रानी ने ले ग्या बेटा बाघ का, नियाजी को समझा कर रानी को वापस भेजो। बाघजी ने रावजी को जवाब लिख भेजा कि रानी तो शिवजी को चढ़ा दी

है। और आपको रानी चाहिए तो दूसरा ब्याह कर लो। रावजी बगड़ावतों को समझाने का खूब प्रयास करतेहैं कि रानी सा को वापस राण पहुंचा दो नहीं तो अन्जाम बुरा होगा। जो भी बगड़ावतों के पूर्वज थे उनके माध्यम से (बिसलदेवजी, बाघ सिंघ जी और कई राजाओं, सामन्तों के साथ) संदेश भेज बगड़ावतों को समझाने के प्रयास किये गये मगर बगड़ावत अपनी बात पर अड़े रहते हैं। अब रावजी एक संदेश बाबा रुपनाथ के यहां भेजते हैं कि आप के चेले बगड़ावत रानी को ले गए हैं, आप उन्हें समझाइए कि वे रानी को वापस भेज दें। बाबा रुपनाथ रावजी को जवाब देते हैं कि रानी तो अब हमारी शरण में आ चुकी है। आपको अगर लड़ाई करनी है तोपहले रुपाहेली पर हमला करो। बगड़ावतों तक जाने की जरुरत ही नही है। फिर बाबा रुपनाथ बगड़ावतों को संदेश भेजते हैं किआप सब लोग लड़ाई की तैयारी कर लो। रावजी से युद्ध करना है। अब चाहे जो हो जाये, रानीजी को वापस नहीं भेजना है। सभी बगड़ावत अपने गुरु का संदेश पढ़कर जोश से भर जाते हैं। एक संदेश तेजाजी को पाटन की कचहरी में भी भेजा जाता है और तेजाजी भी युद्ध के लिए तैयार हो जाते हैं। लड़ाई शुरु करने से पहले बगड़ावत अपने सभी सामन्तों को सन्देशवाहक भेजकर फौज इकट्ठी कर लेते हैं और दुगने जोश से युद्ध की तैयारी के लिये अपने-अपने खैड़ो पर पहुंच जाते हैं। रानी जयमती को दिये वचन के अनुसार सभी भाईयो को अलग-अलग अपने खैड़ो से ही लड़ाई लड़नी थी। इधर रावजी अपने ५२ गढ़ो के खास सामन्तो जिनमें दियाजी, कालूमीर पठान, टोडा का सोलंकी, इत्यादि के साथ अपनी सेना को रुपाहेली में पहला हमला (बाबा रुपनाथ पर) करने भेजते हैं। वहां बाबा रुपनाथजी अपने सभी नागा

साधुओं की फौज के साथ युद्ध के लिये तैयार होते है। बाबा रुपनाथजी रावजी की फौज को आते देख अपने पालतु कुत्तो को खुला छोड़ देते है। गाथा के अनुसार इनकी संख्या ५०० बताई गई है। रावजी की फौज इन कुत्तो के हमले से घबरा जाती है। ऊपर से नागा साधुओं के हमले से भाग छूटती है। और रावजी के यहां वापस लौट आती है। उनके कई सैनिक इस लड़ाई में मारे जाते हैं।

बगडावत भारत कथा -14

दूसरा हमला रावजी नेगड़िया पर करते हैं।वहां नियाजी ६ महीने की नींद में सो रहे होते हैं। नियाजी की रानी नेतुजी हाथ में जल की जारी ले कर उन्हें जगाने आती है। लेकिन नियाजी नहीं जागते। फिर नेतुजी नियाजी की माँ लखमादे राठौड़ को नियाजी को जगाने के लिए बुलाती है। लेकिन वे भी उनको नहीं जगा पाती तब नियाजी के लड़के जग्गा और जगरुप अपनी माँ को कहते हैं कि पिताजी को क्यूं जगाती हो, उन्हें सोने दो हम लड़ाई करने जायेगें। माँ नेतुजी अपने बेटो को मना करती है कि अभी तुम छोटे हो (९ बरस के) अभी तुम्हारी युद्ध में जाने की उम्र नहीं है। इस पर जग्गा और जगरुप जिद करते हैं कि हम रावजी से अकेले ही निपट लेगें। पिताजी (नियाजी) को सोने दो, उन्हे मत जगाओ। नेतु अपने दोनों बेटो जग्गा-जगरुप की आरती करती है और उन्हें युद्ध के लिये भेजती है। जग्गा-जगरुप रावजी से युद्ध करने जाते हैं। दोनों भाई रावजी

की फौजों से लडाई करते हुए कई सामंतो और सरदारों को मार देते हैं और तीन दिन तक लगातार युद्ध करते रहतें हैं। जग्गा-जगरुप का युद्ध देखकर भवानी हीरा को कहती है कि ये दो लड़के युद्ध करने आये हैं और रावजी की फौज के साठ हजार सैनिकों को खत्म कर दिया। यह देख रानी भवानी रणभूमि मे जोगन का रूप कर आ जाती है ।ओर दोनों भाइयों से कहती है कि आप लड़ने में तो शूरवीर हो लेकिन दान देने में कैसे हो ।तब दोनों भाइयों ने कहा कि आप मांगो क्या मांगती हो तो फिर रानी ने कहा कि पहले मुझे वचन दो । दोनों भाइयों ने वचन दे दिए फिर उसके बाद रानी जयंती में दोनों भाइयों के सिर मांग लिए और दोनों भाइयों ने खुशी-खुशी अपने सिर उतार कर रानी जयमन्ती को सौंप दिए । जब रावजी ने दीयाजी से पूछा की आज की लड़ाई कैसी रही। दीयाजी ने कहा टोड़ा का रावजी आज काम आ गये और हमने सभी फौज में मरने वालों की पगड़ी और शव उनके घर भेज दिये हैं। नेतुजी साड़ीवान से युद्ध के समाचार पूछती है, तो साड़ीवान कहता है कि आपके कुवंरों ने युद्ध तो अच्छा किया लेकिन वह दोनों भी मारे गए। जग्गा और जगरुप दोनों ही शादीशुदा नहीं थे इसलिए नेतुजी जब अपने बेटों के कटे हुए सिर और धड़ो की आरती के लिये आती है, गिरजों से बात करती है और पूछती है कि तुमने मेरे बेटों की लाशों को क्यों नहीं खाया। गिरजे जग्गा -जगरुप की लाशों को देखकर कहती है कि अभी इनकी मरने की उम्र नहीं थी,मगर भवानी को लाने से यह दिन देखना पड़ा। इसलिए हम इन्हें नहीं खाना चाहती।भवानी जग्गा और जगरुप के सिर अपनी मुण्ड माला में धारण करती है। नेतु अपने दोनों बेटो के कटे हुए धड़ की आरती उतार कर

विलाप करती है। और अपने पति नियाजी को जगाने के लिए महल में चली जाती ह। तीसरा हमला रावजी की सेना अटाली पर करती है जहां बगड़ावत भाई अटाल्याजी अपनी एक हजार सेना के साथ रावजी के साथ युद्ध करते हैं। रावजी के छोटे भाई (तीसरे नम्बर के) आमादेजी मारे जाते हैं। रावजी की सेना से संग्राम करते हुए अटाइल्याजी, आलोजी भी युद्ध में मारे जाते हैं और भवानी उनका सिर काट अपने मुण्ड माला में धारण कर लेती है। चौथा हमला रावजी रायला पर करते हैं जहां सवाई भोज की बेटी दीपकंवर बाई रावजी की सेना में मारकाट मचा देती है। दीपकंवर बाई मर्दाना वेष कवच धारण कर रावजी की सेना से घोर संग्राम करती है और उनकी काफी सारी सेनाओं को अपनी तलवार से काट डालती है। अन्त में वह दियाजी और कालूमीर से युद्ध करते हुए मारी जाती है। जिसका सिर काट कर भवानी (जयमती) ने अपनी मुण्ड माला में धारण किया था। बगड़ावतों के बड़े भाई तेजाजी को जब दीपकंवर की मौत का पता चलता है तो वह भी युद्ध में आ जाते हैं और अपने घोड़ेको रावजी की फौज के सामने खड़ा कर देते हैं और दीयाजी और कालूमीर की फौज काट देते हैं। तेजाजी सात-सात कोस तक रावजी की फौज को काट डालते हैं और अपना भाला रावजी पर फेंकते हैं पर उस भाले के वार से भवानी रावजी को बचा लेती है ।

इधर युद्धभूमि से वापस आकर नेतुजी नियाजी को जगाती है और कहती है कि उठिए, आप के दोनों बेटे घमासान युद्ध में मारे गए हैं। जब नियाजी उठते हैं तो देखते हैं कि उनके महल की छत पर बहुत सारी गिरजें (चीलें) बैठी हुई हैं। नियाजी गिरजों से पूछते हैं कि कहो आपका यहाँ कैसे आना हुआ। गिरजें कहतीं हैं कि हमें रावजी और बगड़ावतों के युद्ध की खबर सात समुन्दर पार से लगी है। कलयुग के इस महाभारत में हम अपनी भूख मिटाने आई हैं। अगर आप हमारी भूख मिटाने का वचन दो तो हम यहाँ रुकें नहीं तो वापस जाएं। नियाजी जवाब देते हैं कि इस युद्ध में मैं बहुत लोगों के सिर काटूगां। तुम पेट भर कर खाना। और अगर तुम मेरी बोटियाँ खाना चाहती हो तो ६ महीनें बाद आना। मैं ६ महीने का भारत करुँगा (नियाजी को ६ महीने आगे तक का पहले से ही आभास हो जाता था) नियाजी युद्ध में जाने से पहले भगवान से प्रार्थना करते हैं कि मैं महल में बहुत आराम से रहा और अगले जन्म भी मुझे इसी देश में ही भेजना और भाई भी सवाई भोज जैसा ही देना। फिर नेतुजी नियाजी की आरती उतारती है और युद्ध में जाने के लिए उनके तिलक करती हैं। नेतुजी फिर नियाजी को सवाईभोज से मिलने जाने के लिए कहती है। नियाजी, नेतुजी कि बात मानकर सवाई भोज से मिलने जाते हैं। जब दोनों भाई गले मिलते हैं तब दोनों की आँखों में आँसू आ जाते हैं कि अबके बिछड़े जाने कब मिलेगें। नियाजी कहते हैं कि अब हमारा मिलना नहीं होगा। नियाजी फिर रानी जयमती से भी मिलते हैं और एक वर मांगते हैं कि हमारे मरने के बाद हमारा नाम लेने वाला कौन होगा ? भवानी कहती है कि महारावत का बेटा भूणा जी और सवाई भोज के

वारिस मेहन्दूजी पानी देने के लिए रहेंगे। इन दोनों को तुम राज्य से दूर भेज दो, तो ये बच जाऐंगे। और तुम बगड़ावतों का नाम लेने वाला छोछू भाट रहेगा। और तुम्हारे यहाँ भगवान स्वयं अवतार लेंगे। इतना सुन नियाजी सवाई भोज के पास वापस आ जाते हैं। और उनके महल में अपनी बड़ी भाभी (सवाई भोज की पहली रानी पदमा दे) को बुलवाकर मेहन्दूजी को ले जाने का आग्रहकरते हैं। पदमा दे बड़े भारी मन से अपने बेटे को नियाजी के साथ विदा करती है और यह तय होता है कि वो बगड़वतों के धर्म भाईभैरुन्दा के ठाकुर के पास अजमेर में रहेगा। सवाई भोज उस समय मेहन्दू के साथ कुछ सेवक और घोड़े और उनके खर्चे के लिये काफी सारी सोने की मोहरें एवं काफी सारी धन-दौलत भी भेजते हैं। सवाई भोज कहते हैं बेटा मेहन्दू कई वर्ष पहले एक बिजौरी कांजरी नटनी अपने यहां कर्तब दिखाने आयी थी तब उसे हमने ढ़ाई करोड़ का जेवर दान में दिया था। उसमें से आधा तो वो अपने साथ ले गयी और आधा (सवा करोड़ का) जेवर यहीं छोड़ गयी थी वो मेरे पास रखा है। मेरे मरने के बाद अगर वो आ जाये तो तुम ये जेवर उसे दे देना और उसके नाम का यह खत भी उसे दे देना। जेवर को एक रुमाल की पोटली में बांध कर दे देते हैं और कहते हैं कि अगर वो नहीं आये तो यह धन अपने पास मत रखना इसे कोई भी जनसेवा के काम में लगा देना। कुंआ, तालाब, बावड़ी बनवा देना। इतना कहकर सवाई भोज नियाजी और मेहंदूजी को भारी मन से भेरुन्दा ठाकुर के पास भेजने के लिए विदा करते हैं। और संदेश देते हैं कि जब कभी भी बिजौरी कांजरी आए, यह जेवर उसे मेहन्दू के हाथ से दिला देना। सवाई भोज मेहन्दु जी के अलावा बगड़ावतों के ४

और बच्चे नियाजी को दे देते हैं और कहते हैं कि इनसबको भेरुन्दा ठाकुर के पास पहुँचा देना रानी जयमती को इस बारे में पता चलता है तो वो हीरा को कहती है कि नियाजी चोरी करके ४ बच्चों को ले गए हैं लेकिन मैं किसी को नहीं छोडूंगी और वह अपना चक्र चला कर मेहन्दूजी के अलावा बाकी सब बच्चों के शीश काट लेती है। मेहन्दू जी भेरुन्दा ठाकुर के पास अजमेर चले जाते हैं। यहां से फिर नियाजी अपनी रानी नेतुजी को साथ लेकर बाबा रुपनाथजीके पास गुरु महाराज के दर्शन के लिये रुपाहेली जाते हैं। और उनके पांव छूकर कहते हैं कि गुरुजी आज्ञा दो तो युद्ध शुरु करे, बाबा आशिष देवो। नियाजी बाबा रुपनाथजी की परिक्रमा लगा कर कहते हैं मेरे जैसे चेले तो आपको बहुत मिल जायेगें, मगर मुझे आप जैसा गुरु फिर नहीं मिलेगा। बाबा रुपनाथजी कहते हैं, बच्चा यह क्या कहते हो, मेरे जैसे तो बाबा बहुत मिल जायेगें मगर तेरे जैसा चेला नहीं मिलेगा। नियाजी कहते हैं कि जब मैं अगला जन्म लूं तो मुझे शेर का जन्म देना ताकि मेरे मरने के बाद आपके बिछाने के लिए मेरी खाल काम आ जाए। नेतुजी बाबा रुपनाथ से कहती है कि मेरे पति को अगले जन्म में अगर शेर का जन्म मिले तो मुझे शेरनी का जन्म देना ताकि मैं उनके साथ वन में रह कर उनके दर्शन करती रहूँ। बाबा रुपनाथ फिर नेतुजी से कहते हैं कि अगर नियाजी का शीश भवानी ले जाए तो तू इसका खाण्डा अपने साथ ले जाना और इसके खाण्डे के साथ ही सती हो जाना। बाबा रुपनाथ यह वचन नेतुजी से ले लेते हैं। बाबा रुपनाथ जी नियाजी को अपनी कुटिया के अन्दर ले जाते हैं। उन्हें एक जड़ी-बूटी देते हैं और कहते हैं कि इसे अपने साथ युद्ध-भूमि पर ले जाओ। नियाजी को

जड़ी देकर बाबा रुपनाथ कहते हैं कि यह ऐसी जड़ी है जिसके असर से सिर कटने के बाद भी तुम ८० पहर तक दुश्मन से लड़ सकते हो। तुम इसे अपनी जांघ पर बांध लो लेकिन इसकी खबर किसी को भी मत देना।

बगडावत भारत कथा -16

बाबा रुपनाथजी निया से कहते हैं कि निया सब पहर का युद्ध करने के बाद सीधा तू मेरे पास आना। नियाजी कहते है बाबा गुरुजी मैदान से दिन भर की लड़ाई के बाद थक जाउंगा। ७ कोस चलकर आप के पास आना तो मुमकिन नहीं है। बाबा रुपनाथजी कहते हैकि तेरी बात सही है, मैं ही तेरे साथ चलता हूं और नेगदिया में ही धूणी रमाता हूँ बाबा रुपनाथ और नियाजी साथ-साथ नेगदिया आ जाते हैं। बाबा रुपनाथ नेगदिया गांव के बाहर ही अपनी धूणी लगा लेते हैं। शंकर भगवान के अवतार बाबा रुपनाथ जी नियाजी को आशीर्वाद देकर युद्ध के लिये विदा करते हैं। और जब तक नियाजी युद्ध करते हैं तब तक नेगदिया छोड़ कर नहीं जाते हैं। हर सुबह सूरज उगने के साथ नियाजी रण का डंका बजा कर रावजी की सेना पर टूट पड़ते और कई सैनिको और सामंतो को मार डालते। रावजी के खास निजाम ताजूखां पठान, और अजमल खां पठान की १२ हजार सेना का सफाया कर नियाजी उनके सिर काट देते हैं। हर शाम नियाजी युद्ध भूमि से वापस लौटते समय अपने गुरु बाबा रुपनाथ जी की धूणी पर आते हैं। बाबा रुपनाथजी अपने हाथ का कड़ा नियाजी की देह पर घुमाते

हैं और धूणी की राख लगाकर, अपने कमण्डल में से पानी के छीटें देते है जिससे नियांजी के सारे घाव भर जाते हैं और शरीर पर कहीं भी तलवार या भाले की चोट के निशान नहीं रहते हैं। बाबा रुपनाथ कहते हैं कि ये बात किसी को मत बताना, किसी को भी इसका जिक्र मत करना। अब बावड़ी पर स्नान कर शिवजी का ध्यान करके घर जाओ। नियाजी बावड़ी पर स्नान करते हैं, शिवजी का ध्यान कर रंग महल में आते हैं। नेतुजी उन्हें भोजन करवाती है, पंखा झलती है। नियाजी अगली सुबह वापस रण क्षेत्र में आ जाते हैं और युद्ध में मालवा के राजा को मार गिराते हैं। मन्दसोर के मियां मोहम्मद की फौजो का सफाया कर देते हैं। मियां का सिर काट देते हैं और वापस बाबा रुपनाथजी के पास आते हैं। और फिर बाबा रुपनाथजी नियाजी के ऊपर अपना लोहे का कड़ा घुमाते हैं, धूणी की राख लगाते हैं, पानी के छीटें देते हैं। नियाजी के सारे घाव फिर से भर जाते हैं। ये क्रम कईदिनों तक चलता रहता हैं। उधर तेजाजी बगड़ावतों के बड़े भाई युद्ध क्षेत्र मेंआते हैं। जब नियाजी से युद्ध करके जाने के बाद रावजी की सेना खाना बना रही होती है, रावजी के सैनिक बाट्या सेक रहे होते हैं। तब तेजाजी अपनी सेना के साथ युद्ध क्षेत्र में आते है उनकी बाट्या वगैरा सब बिखेर देते हैं और सेना में भगदड़ मचा कर वापस चले जाते हैं। दोनों भाईयों का ये क्रम ३-४ दिनों तक चलता रहता है।नियाजी को युद्ध करते हुए पांचमहीने से भी ज्यादा समय हो जाता हैं। भवानी (जयमती) सोचती है कि ऐसी क्या बात है नियाजी लगातार युद्ध कर रहें हैं। पता लगाना चाहिये, और रानी नेतुजी के पास जाकर कहती है कि क्या बात है भाभी जीदेवर नियाजी को पांच महीने से ज्यादा समय हो

गया है युद्ध करते हुए, क्या तुमने इनके शरीर पर कहीं तलवार या भाले का निशान देखा है ? ऐसी क्या बात है ? वापस आते समय कपड़ो के ऊपर खून का निशान तक नहीं होता। इसका क्या कारण है ? देख पता करना और मुझे बताना। नेतु कहती है की रानी सा आज नियाजी के युद्ध से आने केबाद पता करूंगी। शाम को नियाजी युद्धक्षेत्र से बाबा रुपनाथ के पास जाकर रंग महल में वापस आते हैं। खाना खाते समय नेतु पंखा झलती हुई नियाजी से कहती है एक बात पूछती हूं। आपको कई दिन हो गयेलड़ाई करते हुए, आपके शरीर पर मुझे कभी कोई तलवार का निशान या कपड़ो पर खून तक लगा न नहीं आया, क्या राज है ? इस बात को मुझे बताओ। नियाजी कहते है नेतु ये बात बताने की नहीं है और तू मत पूछ मैं नहीं बताऊगां। नेतु जिद करती है तो नियाजी कहते है कि ठीक है मैं तुझे बता देता हूंलेकिन ये किसी और को मत बताना। नेतु कहती है नहीं बताऊगीं। नियाजी बाबा रुपनाथ की सारी प्रक्रिया नेतु को बता देते हैं। और अगली सुबह वापस युद्ध करने चले जाते हैं। पीछे से रानी जयमती आती है और नेतु से पूछती है कि नियाजी सेक्या बात हुई। नेतु पहले तो मना कर देती है। बहाना बना लेती है कि वह नियाजी से पूछना भूल गई। रानी जयमती नेतु को कहती है कि भाभीजी आप तो झूठ कभी नहीं बोलती हो आज झूठ क्यो बोल रही हो? नेतु कहती हैकि रानी सा आप किसी को नही कहना और वो सारी बात जयमती को बता देती है कि बाबा रुपनाथजी के पास एक ऐसा कड़ा है जिसे उनके शरीर पर घुमाने से नियाजी के सारे घाव भर जाते हैं। रानी जयमती वहां से सीधी बाबा रुपनाथ की धूणी पर आती है। उन्हें प्रणाम कर वहां घड़ी दो घड़ी रुकती

है और पता लगाती है कि बाबा रुपनाथजी वो कड़ा कहां रखते हैं। उसे पता चलता है कि कड़ा बाबा के आसन के नीचे रखा हुआ है। और वो अपनी माया से चील बन जाती है और बाबा के आसन के नीचे से कड़ा अपनी चोंच में उठा कर उड़ जाती है। बाबा रुपनाथजी समझ जाते हैं कि निया ने जरुर भेद खोल दिया है। जब नियाजी युद्ध करके लौटते है तो बाबा रुपनाथ उससे कहते हैं कि निया तूने भेद किसे बताया है। निया को अफसोस होता है और कहते हैं कि आखिर औरतों के पेट में कोई बात नहीं टिकती। और बाबा रुपनाथ को प्रणाम कर वापस रण क्षेत्र में लौट आते हैं

बगडावत भारत कथा -17

रण क्षेत्र में नियाजी के पास रानी जयमती (भवानी) आती है और कहती है कि नियाजी मुझे अपना शीश दे दीजिए। आपने वचन दिया था कि मैं एक बार आपसे जो भी मांगूगीं आप मुझे वो दे देंगे। नियाजी अपने हाथ से ही अपना शीश काटकर भवानी के थाल में रखकर देते हैं और कहते हैं कि भाभीजी मेरा वचन पूरा हो गया। नियाजी का सिर कटने के बाद उनकी छाती में आँखे निकल आती हैं, नाभि की जगह मुँह बन जाता है और गले के ऊपर कमल का फूल खिल जाता है। सिर कटने के बाद भी

नियाजी अपने दोनों हाथों से हाथियों की पूंछ पकड़कर घुमा-घुमाकर फेंक देते हैं। जिनके नीचेदबकर कई सैनिक मर जाते हैं। भवानी नियाजी से कहती है कि आपका माथा कटने के बाद भी आप लड़े जा रहे हैं और कहती है कि माथा तो है नहीं मैं आपकी आरती करूं तो तिलक कहाँ करूं। नियाजी कहते हैं माताजी मैं आपको मान गया हूं। बस आपने आरती कर ली। भवानी सोचती है कि यह तो अभीरुकेगा नहीं। भवानी सोचती है कि यह तो सिर कटने के बाद भी लड़ता जा रहा है इसलिएक्यों न मैं इसे नील का छींटा दे दूँ (जोकि अशुभ होता है) जिससे नियाजी खाण्डा डाल देंगे। नियाजी को भवानी की बात समझ आ जाती है और उनकी वाणी होती है कि भाभीजी मेरे ऊपर नील का छींटा मत डालना। इससे मेरा मोक्ष नहीं होगा। मैंखाण्डा डाल देता हूँ लेकिन माँ चामुण्डा मेरा वंश खत्म मत करना जैसे तूने भूणाजी, मेहन्दू जी और मदनो जी को छोड़ा है वैसे मेरे वंश को छोड़ देना। इस पर भवानी नेतुजी के ६ महीने के गर्भ को जीवित छोड़ देने का वचन देती है। नियाजी अब खाण्डा छोड़ देते हैं और पृथ्वी माता से निवेदन करते हैं कि मुझे धरती में समा ले। जब सवाई भोज को नियाजी की मौत कापता लगता है तो वह भवानी को कोसते हैं कितू मेरे निया जैसे भाई को खा गई। भवानी कहती है कि मैं तो डायन हूं। नियाजी की क्या सोच करते हो, मैं तो द्रौपदी बनकर कौरवों और पाण्डवों को खा गई, मेरा तो काम ही यही है। सवाई भोज कहते हैं कि नियाजी जैसा भाई तो मुझे कभी नहीं मिल सकता। वह मेरे २२ भाइयों के बराबर एक ही था। भवानी कहती है कि मैं कई देवी देवताओं को खा गई, तू एक नियाजी की क्या बात करता है। मैं तो बड़े- बड़ों को खा गई।सवाई भोज कहते हैं

कि माँ चामुण्डा दूर रह ये तेरी करनी मुझे जचीं नही मुझे। नियाजी के बाद रण भूमि में बाहरावत जी अपनी सेना के साथ युद्ध करने के लिए आते हैं और वो भी लड़ाई करते हुए मारे जाते हैं। नियाजी और बाहरावतजी की तरह सभी भाई एक-एक करके रावजी की फौजों से युद्धकरने के लिए खारी नदी पर आए। खारी नदी परही सब युद्ध हुए थे। खारी नदी के एक किनारे पर रावजी की फौजें थी तो दूसरी और बगड़ावतों की फौजें। यह युद्ध कलयुग का महाभारत का युद्ध था। इस युद्ध में सवाई भोज के सभी महाबली योद्धा भाई काम आ गए। रानी को दिए वचन के अनुसार एक-एक भाई ने अपनी फौज के साथ खारी नदी पर आकर रावजी की सेना के साथ युद्ध किया था। इन बगड़ावत भाइयों की रानियाँ सतीवाड़े में सती होती हैं। चूंकि नेतुजी ६ महीने के गर्भ से थी इस अवस्था में वह सती नहीं होसकती थी, इसलिए वह बगड़ावतों के गुरु बाबा रुपनाथ की धूणी पर आती है और कहती है बाबाजी इस पेट में लोथ पल रहा है इसे निकाल कर आप अपने पास रख लो। बाबा रुपनाथ कहते है, मैं तेरे हाथ नहीं लगा सकता क्योंकि तू मेरे चेले की रानी है, मैने तेरे हाथ का खूब भोजन किया है, और यदि मैं तेरे को हाथ लगाता हूँ तो अगले जन्म में मैं सूअर बनूंगा। यह सुनकर नेतुजी खुद ही अपना पेट चीरकर गर्भ बाहर निकाल कर बाबा को देती है और बाबा उसे अपने पास रखे भांग के घड़े में डाल देते हैं और ढक देते हैं। नेतुजी कहती है बाबा जी अब आप ही इसके मां-बाप हो और इसकी सुरक्षा आपकी जिम्मेदारी है। यह कहकर नेतुजी अपनी कमर को वापस बांध लेती है और कहती है तीन महीने बाद इसका जन्म होगा और इसका नाम भांगड़े खान रखना। नेतुजी बाबा

रुपनाथजी से कहती हैइस बच्चे को साधू मत बनाना। और इसको सफेद कपड़े देना, भगवा वस्त्र मत पहनाना। राताकोट की जीत यही करेगा, यह बड़ा होकर अपने बाप का बैर लेगा। यह एक नया बदनोरा गांव बसायेगा। बाबा से आज्ञा लेकर नेतुवहां से सती होने के लिये जाती है जहां सभी बगड़ावत भाईयों की स्त्रियाँ नहा धोकर१६ श्रृंगार कर सती होने के लिए अपने-अपने पति के शवों के साथ चिता में बैठ जाती हैं। सती होते समय नेतु रानी जयमती को श्राप देती है कि अगले जनम में तू बड़े घर में जन्म लेगी तेरे शरीर पर कोढ झरेगा, तेरे सिर पर सींग होगा और तेरे से शादी करने वाला कोई नहीं मिलेगा। रानी श्राप से भयभीत हो जाती है और नेतु से कहती है की मेरा उद्धार कैसे होगा। विनती करती है।नेतु कहती हैकि पीपलदे के नाम से तू धार के राजा के यहां जन्म लेगी और भगवान देवनारायण मालवा से लौटते समय तेरा उद्धार करेगें

बगडावत भारत कथा -18

रानी जयमती ने सवाई भोज को अपने पास महल में ही चौपड़ में उलझाए रखा और युद्ध भूमि में जाने नहीं दिया। सारे भाईयों की मौत के बाद सवाई भोज खुद रण क्षेत्र में जाने की तैयारी करते हैं। रानी जयमती से अपने अस्त्र-शस्त्र मांगते हैं तो रानी वहां पर भी एक वर मांगती है कि मैं भी आपके साथ युद्ध में चलूंगी और आपके पीछे बुंली घोड़ी पर सवार रहूंगी मगर आप पीछे मुड़कर मेरी ओर नहीं देखना, नहीं तो मैं आपका

सिर उतार लूंगी। यह वचन देने के बाद रानी सवाई भोज को उनके अस्त्र-शस्त्रदेती है। सवाई भोज अपनी सेना को साथ लेकर युद्ध करने के लिये राठोडा की पाल पर पहुंच जाते हैं। रावजी के सामने जाकर उनके ऊपर तलवार से हमला करते हैं। रानी जयमती अपना हाथ आगे कर देती हैं, जिससे उसके हाथों की चूड़ियां कट जाती है। सवाई भोज पीछे मुड़ कर कहते है ये क्या करती हो रानी सा अभी आप का हाथ कट जाता। रानी कहती है की लाओ मेरा वचन पूरा करो, आपने वचन दिया था कि पीछे मुड़कर नहीं देखूंगा इतना सुनते ही सवाईभोज खुद अपना सिर काट कर रानी को दे देतेहैं। सवाई भोज की मौत की खबर सुनकर सवाई भोज की दूसरी रानियाँ भी वहाँ आ जाती हैं और हाथ जोड़कर खड़ी हो जाती हैं। मगर पदमादे, जो मेहन्दु जी की माँ थी उन्होने, साडू माता को हाथ जोड़ने से मना कर दिया। वहीं भवानी, चौबीस भाईयों की मुण्ड माला बना रही थी। इधर रावजी कहते हैं भाई राणी कहां है, राणी के लिये ही तो युद्ध किया है। रावजी के इतना कहते ही पेड़ पर बैठी भवानी बोलती है राजाजी ऊपर देखो, रावजी देखकर घबरा जाते है। रानी जयमती भवानी का रुप धारण कर गले में मुण्ड माला धारण कर २० भुजाओं युक्त सिंह पर सवार बड़ के पेड़ पर बैठी हुई है। यह रुप देख रावजी और नीमदेव घबरा जाते हैं। रावजी को रानी के विराट रुप के दर्शन करने के बाद रावजी पछताते हैं कि हमने ऐसे ही अपने भाईयों को खत्म कर दिया है। बगड़ावतों के मरने के बाद उनकी सम्पत्ति की लूट मच जाती है। कश्मीरी तम्बू तो मन्दसोर का मियां ले जाता है, जय मंगला और गज मंगला हाथी पीलोदा के कुम्हार ले गये और सवाई भोज की बुंली घोड़ी सावर के ठाकुर दिया

जी ले जाते हैं। सोने का पोरसा पहले ही तेजाजी लेकर चले गये थे और बगड़ावतों की अच्छी नस्ल की गायें नापा ग्वाल गोसमा डूगंरा में ले गया। रावजी नीमदेव से कहते हैं कि सब सामान तो लोग लूट कर ले गये हैं। उन्हें बगड़ावतों के मारे जानेका अफसोस होता है और कहते हैं कि ऐसे भाईकहां मिलेगें। और यह महसूस करते हैं कि यह सब भवानी की माया है जो बगड़ावत मारे गये। सारी रानियों के सती होने के साथ पदमादे भी सती हो जाती है और साडू माता को सती होने से मना कर देती है क्योंकि भगवान ने अभी उनके यहाँ जन्म लेना है। सभी बगड़ावतों की रानियों के सती होने के बाद, साडू माता हीरा दासी को साथ लेकरमालासेरी की डूगंरी पर रहने आ जाती है। अब रावजी कहते हैं कि बगड़ावतों के बालक टाबर हो तो उन्हें मैं पाल-पोस कर बड़ा करूं और वापस बगड़ावत खड़े करूं। यह बात छोछू भाट का मौसेरा भाई गांगा भाट सुन लेता है। उसे पता होता है कि बगड़ावतों के ७ बीसी कुमारों (१४० कुमार) को छोछू भाट, भाट मगरें में पाल रहा है। रावजी जबअपनी सेना के साथ भाट मंगरे पहुंचते हैं, वहां छोछू भाट मंगरे पर बैठा देखता है कि सेना आ रही है तो सभी ७ बीसी राजकुमारों को मंगरे में छोड़ कर भाग जाता है। कालूमीर पठान रावजी से कहते हैं कि रावजी इनको पालने की गलती मत करना, इन्हें यहीं मार देते हैं, नहीं तोये बड़े होकर अपने बाप-दादों का बैर आपसेलेगें। और कालूमीर कहता है कि रावजी २४ बगड़ावतों से युद्ध करते-करते ६ - ८ महीने हो गये, ये तो पूरे १४०है इनसे कैसे निपटेगें। रावजी कालूमीर पठान की बात मान जाते है और उन्हें मारने का आदेश दे देते हैं। कालूमीर पठान उन बच्चों को वहीं मार देता है। उनमें से एक बच्चा बच जाता है

भूणाजी, उसे पत्थर पर पटक देते हैं लेकिन वह बच्चा नहीं मरता है। (इन्हें लक्ष्मण का अवतार बताया गया है।) जब भूणाजी नहीं मरता हैंतो रावजी उसे अपना पीण्डी पाछ बेटा बना लेते हैं, अपनी पीड़ली के चीरा लगाकर एक दूसरे का खून आपस में मिला कर धरम बेटा बना लेते हैं। भूणाजी को लाकर रावजी अपनी रानी को देते हैं और कहते हैं कि इसे भी राजकुमारी तारादे के साथ-साथ अपना दूध पिलाओ और पाल-पोस कर बड़ा करो। रानी अपने स्थनो के जहर लगाकर भूणाजी को दूध पिलाती है, भूणाजी फिर भी नहीं मरते। आखिर रानी भूणाजी को हाथी के पावों से कुचलवाने को कहती है, हाथी उन्हें अपनी सूण्ड से उठाकर अपनी पीठ पर बैठा लेता है। यह सब देख कर रानीजी केभाई चान्दारुण के रहने वाले सातल-पातल, भूणाजी की चंटी अंगुली काटकर उन्हें खाण्डेराव का नाम देते हैं। सातल-पातल भूणाजी की अंगुली काटते समय यह कहते हैं की भाण्जे जब तू बड़ा हो जावे तब तेरेमें ताकत हो तो हमसे बैर ले लेना। ये बातवहां बैठा एक पून्या जाट सुन लेता है और इस बात को गांठ बांध लेता है, वक्त आने पर भूणाजी को बता इस तरह बगड़ावतों के मारे जाने पर सारा परिवार अलग-अलग हो गया। रावजी ने बगड़ावतों के ७ बीसी कुमारों को भी मरवा दिया। उनके परिवार के बचे हुए ४ कुमार अलग-अलग जगह पर पले बढ़े। जिनमें सबसे बड़े मेहन्दू जी अजमेरमें, तेजाजी के बेटे मदनों जी उनके पास पाटन में, भूणा जी राण में और भांगीजी बाबा रुपनाथ के पास ही पले बढ़े।

इधर सभी बगड़ावतों का नाश हो जाने पर साडू माता हीरा दासी सहित मालासेरी की डूंगरी पर रह रही होती है। एक दिन अचानक वहाँ पर नापा ग्वाल आता है और सा माता को७ बीसी राजकुमारों के भी मारे जाने का समाचार देता है और कहता है कि साडू माता यहां से मालवा अपने पीहर वापस चलो। कहीं राजा रावजी यहां पर चढ़ाई ना कर दे। लेकिन सा माता जाने से मना कर देती है। जब एक दिन साडू माता की काली घोड़ी केनीला बछेरा पैदा होता हैं, तब साडू माता को भगवान की कही बात याद आती है कि काली घोड़ी के एक बछेरा होगा वो नीलागर घोड़ा होगा उसके बाद मैं अवतार लूंगा साडू माता भगवान के कहे अनुसार सुबह ब्रह्म मुहर्त में स्नान ध्यान कर भगवान का स्मरण करती है। वहीं मालासेरी की डूंगरी पर पहाड़ टूटता है और उसमें से पानी फूटता है, जल की धार बहती हुई निकलती है, पानी में कमल के फूल खिलते हैं, उन्हीं फूलों में से एक फूल में भगवान विष्णु देवनारायण के रुप में अवतरित होते हैं। माघ शुक्ला ७ सातय के दिन सम्वत ९६८ सुबह ब्रह्म मुहर्त में भगवान देवनारायण मालासेरी की डूंगरी पर अवतार (जन्म) लेते हैं। देवनारायण केटाबर (बालक) रुप को साडू माता अपने गोद में लेती है, उन्हें दूध पिलाती हैं और उन्हें लाड करती हैं। वहां से साडू माता हीरा दासी और नापा ग्वाल गोठां आते हैं। गांव में आते ही घर-घर में घी के दिये जल जाते हैं और सुबह जब गांव भर में बालक के जन्म लेने की खबर होती है, नाई आता हैं घर-घर में बन्धनवाल बांधी जाती हैं। भगवान के जन्म लेने से घर-घर में खुशी ही खुशी हो जाती हैं। साडू माता ब्राह्मण को बुलवाती है बच्चे का नामकरण

संस्कार होता है। भगवान ने कमल के फूल में अवतार लिया है, इसलिए ब्राह्मण उनका नाम देवनारायण रखते हैं। साडू माता ब्राह्मण को सोने की मोहरे, कपड़े देती है, भोजन कराती है, मंगल गीत गाये जाते हैं। सूर्य पूजन का काम होने के बाद गांव की सभी महिलाएं साडू माता को बधाई देने आती हैं। गांव भर में लोगों का मुंह मीठा कराया जाता है कि साडू माता की झोली में नारायण ने अवतार लिया है।उधर रावजी के महलो में अपशगुन होने लगते हैं। रावजी को सपने आने लगते हैं कि तेरा बैर लेने के लिये साडू माता की झोली में नारायण ने जन्म लिया है। वही तेरा सर्वनाश करेगें। रावजी सपना देखकर घबरा जाते हैं, और गांव-गांव दूतियां (डायन) का पता करवाते और बुलवाते हैं। और कहते हैं कि गोठां गांव में एक टाबर (बालक) ने जन्म लिया है उसे खत्म करके आना है। डायने राण से गोठां में आ जाती है और लम्बे-लम्बे घूघंट निकाल कर घर में घुसती है। देखती है साडू माता भगवान के ध्यान में लगी हुई हैं। और दो डायन अन्दर आकर देखती है झूले में (पालकी) एक टाबर अपने पांव का अंगुठा मुंह में लेकर खेल रहा है। उसके मुंह में से अगुंठा निकाल अपनी गोद में लेकर जहर लगा अपना स्थन देवनारायण के मुंह में दे देती हैं। नारायण उसका स्तन जोर से अपने दांतों से दबा देते हैं, जिससे उसके प्राण निकल जाते हैं।यह देख दूसरी डायनें वहां से भाग कर राण में वापस आ जाती हैं। रावजी फिर ब्राह्मणों को बुलाते हैं और कहते हैं कि गोठां जाकर वहां साडू माता के यहां एक टाबर हुआ है उसे मारना है। यदि तुम उसे मार दोगे तो मैं तुम्हें आधा राज बक्शीस में दूंगा। ब्राह्मण सोचते हैं कि टाबर को मारने में क्या है, उसे तो हम मिनटों में ही मार आयेगें।

गोठां में आकर ब्राह्मण साडू माता को कहते हैं की आपके यहां टाबर ने जन्म लिया है, उसका नाम करण संस्कार करने आऐ हैं। साडू माता साधुओं का सत्कार करती है और कहती है कि आटा दाल से आप अपने लिये अपनेहाथों से रसोई बनाओं और भोजन करों। ब्राह्मण कहते हैं कि साडू माता आप सवा कोस दूर रतन बावड़ी से कच्चे घड़े में पानी भर लाओ तब हम रसोई बनाकर भोजन करेगें। साडू माता मिट्टी का घड़ा लेकर पानी लेने चली जाती है। पीछे से ब्राह्मण घर में इधर-उधर ढूंढते हैं। उनमें से एक ब्राह्मण को एक पालने में टाबर देवनारायण सोये हुए दिखते हैं। जहां शेषनाग उनके ऊपर छतर बन बैठा हुआ है और चारों और बिच्छु ही बिच्छु घूम रहे हैं। यह देख ब्राह्मण सोचता है बालक में दूध की खुश्बू से सांप और बिच्छु आ गये हैं और उसे मार दिया है। देवनारायण को मरा हुआ जानकर वह बाकि तीनों ब्राह्मणों को उस कमरे में बुलाता है तो भगवान विष्णु की माया से सारे ब्राह्मणों को पालने में देवनारायण के अलग-अलग रुप दिखाई देते हैं। उनमें से एक को तो पालना खाली दिखाई देता हैं। अपनी-अपनी बात सच साबित करने के लिए ब्राह्मण आपस में ही लड़ पड़ते हैं। ब्राह्मण लड ही रहे होते हैं कि इतने में साडू माता पानी लेकर आ जाती है और ब्राह्मणों को दान दक्षिणा देती है। ५ सोने की मोहरे देती है। चारों ब्राह्मण वहां से बाहर आकर पांचवीं सोने की मोहर को बांटने के लिए लड़ने लग जाते हैं, एक दूसरे की चोटियां पकड़ कर गुत्थम-गुत्था करने लग जाते हैं। साडू माता यह देखकर सोचतीं हैं कि इन्हें तो लगता है रावजी ने भेजा है और अन्दर जाकर अपने बच्चे को सम्भालती है।

बगडावत भारत कथा -20

साडू माता सोचती है कि रोज कोई न कोई यहां आता है, कहीं रावजी सेना भेजकर बच्चे को भी न मरवा दे। यह सोचकर वह गोठां छोड़ कर मालवा जाने की तैयारी करती है। और दूसरे ही दिन साडू माता अपने विश्वासपात्र भील को बुलवाती है। बच्चे का जलवा पूजन करने के पश्चात साडू माता बालक देवनारायण, भील, हीरा दासी,नापा ग्वाल और अपनी गायें साथ लेकर गोठां छोड़ मालवा की ओर निकल पड़ती है। साडू माता और हीरा अपने-अपने घोड़े काली घोड़ी और नीलागर घोड़े पर सवार हो बच्चे का पालना भील के सिर पर और नापा ग्वाल गायें लेकर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर निकल पड़ते हैं। रास्ते में भील एक गोयली को देखता है तो बालक देवनारायण को वहीं एक खोल में रख कर गोयली का शिकारकरने उसके पीछे भाग जाता है। उधर साडू माता और हीरा काफी आगे निकल जाते हैं। रास्ते में एक जगह एक शिकारी हिरनी का शिकार कर रहा होता है। हिरनी के साथ उसके बच्चे होते हैं। हिरनी अपने बच्चों को बचाए हुए दौड़ रही होती है। ये देख कर साडू हीरा से कहती है कि देख हीराये हिरनी अपने बच्चों को बचाने के लिये अपनी जान जोखिम में डाल रही है। शिकारी का तीर अगर इसे लग जायेगा तो ये मर जायेगी। ये बात हिरनी सुन लेती है और कहती है कि मैनें इसे जन्म दिया है, इसे झोलियां नहीं खिलाया है। इसलिए मैं अपनी जान देकर भी इसकी जान बचउगी । हिरनी की बात सुनकर साडू को अपने बच्चे की याद आती है और उसे ढूंढती हुई

वो वापस पीछे की ओर आती है। वापस आकर साडू माता देखती हैं कि बच्चे का पालना एक पेड़ के नीचे खोल में पड़ा हुआ है और एक शेरनी उसके ऊपरखड़ी देवनारायाण को दूध पिला रही है। साडू माता यह देख अपना तीर कमान सम्हाल कर शेरनी पर निशाना साधती है। शेरनी कहती है साडू माता रुक जा, तीर मत चलाना।मैं इसे दूध पिलाकर चली जाउंगी इस बच्चे को भूख लगी है, इसके रोने की आवाज सुनकर मैं आयी हूं। इससे पहले मैं इसे ६ बार दूध पिला चुकीं हूं। यह सातवीं बार दूध पिला रही हूं। यह बात सुनकर साडू माता चौंक जाती है और पूछती है कि इससे पहले कब-कब दूध पिलाया। तो शेरनी उसे पिछले जन्मों की सारी बात बताती है। वहीं से साडू माता अपने बच्चे के साथ-साथ चलती है। चलते-चलते वो माण्डल पहुंचते हैं, जहां थोड़ी देर विश्राम करते हैं। यहां बगड़ावतों के पूर्वज माण्डल जी ने जल समाधी ली थी वहां उनकी याद में एक मीनार बनी हुई है जिसे माण्डल के मन्दारे के नाम से जाना जाता हैं। माण्डल से आगे चलकर रास्ते में मंगरोप गांव में सब लोग विश्राम करते हैं। वहां साडू माता और हीरा दासी बिलोवणा बिलोती है। वहां बची हुई छाछ गिरा देती है। कहा जाता है मंगरोप में बची हुई छाछ से बनी खड़ीया की खान आज भी है। मंगरोप से रवाना होकर दो दिन बाद सब लोग मालवा पहुंचते हैं। साडू माता अपनेपीहर में पहुंचकर सबसे गले मिलती है। मालवा के राजा साडू माता के पिताजी थे। मालवा में ही रहकर देवनारायण छोटे से बड़े हुए थे। वह बचपन में कई शरारते करते थे, अपने साथियो के साथ पनिहारिनों के मटके फोड़ देते थे। जब गांव वाले राजाजी को शिकायत करने आते और कहते कि आपका दोयता रोज-रोज हमारी औरतों की

मट्की फोड़ देता है, रोज-रोज नया मटका कहां से लाये, तो राजाजी ने कहा कि सभी पीतल,ताम्बे का कलसा बनवा लो और खजाने से रुपया ले लो। देवनारायण वहां के ग्वालों के साथ जंगल में बकरियां और गायें चराने जाते थे और अपनी बाल क्रिड़ाओं से सब को सताया करते थे। देवनारायण के मामा ने उनको कह रखा था कि जंगल में सिंधबड़ की तरफ कभी मत जाना वहां चौसठ जोगणियां और बावन भैरु रहते है, तुम्हे खा जायेगें। एक दिन देवनारायण जंगल में बकरियां चराने जाते हैं अपने साथियों को तो बहाना बना कर गांव वापस भेज देते हैं और खुद बकरियों को लेकर सिंध बड़ की ओर चले जाते हैं। सिंध बड़ पहुंचकर सभी जोगणियों को और बावन भैरु को पेड़ पर से उतार कर कहते हैं कि मैं यहां सो रहा हूं, तुम सब मेरी बकरियों को चराओ। मेरे जागने पर एक भी बकरी कम पड़ी तो मैं तुम्हारी आंतों में से निकाल लूंगा और देवनारायण कम्बल ओढ कर वहीं सिंध बड़ के नीचे सो जाते हैं। दोपहर सोने के बाद उठते हैं और सब को आवाज देकर बुलाते हैं। जोगणियां और भैरु नारायण के पांव पड़ जाते हैं और कहते है भगवान आज तो हम भूखे मर गये। नारायण पूछते हैं कि तुम यहां क्या खाते हो, अपना पेट कैसे भरते हो ? भैरु कहते है किउड़ते हुए परिंदों को पकड़ कर खाते हैं। आज तो पूरा दिन आपकी बकरियां चराने में रह गये।नारायण कहते है मेरी एक बकरी को छोड़कर तुम सब बकरियों को खा जाओं। देवनारायण अपनी बकरी को गोद में उठाकर वापस आ जाते हैं। मामा पूछते है की नारायण बाकि सब बकरियां कहां है। नारायण कहते हैं मैं रास्ता भूल गया और सिंध बड़ पहुंच गया। वहां देखता हूं की बड़ के पेड़ से काले-काले भूत निकलकर सारीबकरियों

को खा गऐ, मैं अपनी बकरी को लेकरभाग के आ गया।मामा कहते हैं तू वहां से जीवित वापस कैसे आ गया, तेरे को किसी भूतने नहीं पकड़ा ? मामाजी सोचते हैं ये जरुर कोई अवतार है। वह साडू माता से देवनारायण के बारे में पूछते हैं। साडूमाता उन्हें सब सच बताती है। मामाजी देवनारायण के लिए चन्दन का आसन बनवाते हैं और दूधिया नीम के नीचे देवनारायण को बिठाकर उनकी पूजा करते हैं। गांव के सभी लोग उनके दर्शनों को आते हैं और देवनारायण लूले-लगड़े, कोढ़ी मनुष्यों को ठीक कर उनका कोढ़ झाड़ देते हैं। इस प्रकार से देवनारायण अपने मामा के यहां मालवा में बड़े होते हैं।

बगडावत भारत कथा -21

इधर छोछू भाट को भगवान देवनारायण की याद आती है कि अब भगवान नारायण ११ बरस केहो गये होगें। उन्हें मालवा जाकर बताना चाहिये कि उन्हें अपने बाप और काका का बैर लेना है। छोछू भाट अपनी माताजी डालू बाई को अपने साथ लेकर मालवा चल पड़ता हैं। ४-५ दिनों तक चलकर मालवा पहुंचते हैं। वहां जंगल में नारायण की गायें चर रही होती हैं, छोछू भाट उन्हें देखकर पहचान जाता है कि ये गायां तो बगड़ावतों की हैं। वह ग्वालों से पूछता है कि ये गायां किसकी है। ग्वाल कहते हैं की नारायण की गायें हैं। और वहां नापा ग्वाल आ जाता है। वो छोछू भाट को देखकर पहचान जाता हैं। दोनों गले मिलतेहैं और छोछू भाट नारायण के पास ले चलने के लिये कहता हैं। नापा मना कर देता हैं कि तेरे को

मैं नहीं ले जा सकता क्योंकि मुझे साडू माता ने मना किया है और कहा हैकि छोछू भाट को मालवा में नहीं आने देना। क्योंकि भाट नारायण को बगड़ावतों केयुद्ध की सारी बात बता देगा और उन्हें लड़ाई करने के लिये वापस गोठां ले जायेगा। जैसे बगड़ावत मारे गये वैसे ही वो नारायण को नहीं खोना चाहती हैं। छोछू भाट ये बात सुनकर नापाजी से कहता है कि मैं मेवाड़ की धरा से नारायण के दर्शनों के लिये यहां चलकर आया हूं और यदि नारायण के दर्शन नहीं होगें तो मैं और मेरी मां यहीं जान दे देगें। यह सुनकर नापा छोछूभाट को मालवा में नारायण के घर लेकर आ जाता हैं। साडू माता भाट को देखकर कहती है कि भाटजी आ गएअब वापस कब जाओगे। भाट कहता है कि भगवान नारायण से मिलकर, दो-चार दिन यहीं रहेगें। साडू माता भाट के लिये भोजन तैयार करती हैं। जब साडु माता भाट को खाना परोसती है। भाट कहता है माताजी मुझे तो थाली में खाना नहीं खाना। जिस दिन से मेरे धणी मालिक (बगड़ावत)मारे गये उसी दिन से सोगन्ध उठा रखी है कि नारायण जब तक राण के रावजी को नहीं मारेंगे तब तक पातल (पत्तो की बनी थाली) में ही भोजन करूंगा। साडू माता सोचती है कि कहीं भाट नारायण को बगड़ावतों का सारा किस्साना सुना दे। इसलिए वह भाट को सिंध बड़ भेजकर मारने की योजना बनाती है और कहती है कि भाटजी ऐसा करो रास्ते में नदी के किनारे एक बड़ का पेड़ है, वहीं नहा धोकर निपटकर आते समय सिंध बड़ के पत्ते तोड़ लाना और उसी में भोजन करना। मैं आपके वास्ते अच्छा भोजन तैयार करवाती हूं। भाटजी अपना लोटा साथ लेकर सिंध बड़ की और चल पड़ते हैं।सिंध बड़ के नीचे आकर नदी के घाट पर स्नान ध्यान

कर जैसे ही छोछू भाट बड़ के पत्ते तोड़ने का प्रयास करते है सिंध बड़ से ६४ जोगणियां और ५२ भैरु उतर भाट को पकड़ कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर सभी आपस में बांट-चूंट कर खा जाते हैं। जब देवनारायण अपनी गायें चराकर घर वापस लौटते हैं तब उन्हें छोछू भाट के आने का पता चलता है और यह भी पता चलता है कि भाटजी सिंध बड़ के रास्ते गये हैं तो वो अपने नीलागर घोड़े पर सवार होकर सीधे सिंध बड़ पहुंचते हैं। वहां उन्हें भाट कहीं दिखाई नहीं देते लेकिन उनके कपड़े और लोटा पड़ा होता है। तब देवनारायण समझ जाते हैं कि भाटजी को तो जोगणियां और भैरु खा गये हैं। देवनारायण अपने काले भैरु को बुलाते और सिंध बड़ को हिलाने का आदेश देते हैं। काला भैरु बड़ के पेड़ को पकड़कर जोर से हिलाता है। ६४ जोगणियां और ५२ भैरु नीचे आकर गिरते और कहते हैं कि भाटजी को तो हम खा गये। नारायण कहते हैं कि भाटजी को अभी उगलो नहीं तो मैं तुम सब को अभी खत्म करता हूं। देवनारायण के डर से सभी जोगणियां और भैरु उगल कर एक-एक टुकड़े को जोड़ कर भाटजी को पूरा करते हैं। देवनारायण अपनी माया से भाट में प्राण डालते हैं। भाट वापस जिन्दा हो जाता है। देवनारायणभाट को साथ लेकर वापस लौटते हैं तो सभी जोगणियां और भैरु नारायण से विनती करतेहैं कि भगवान हमारे को इस गति से आजाद करहमारा उद्धार करो। देवनारायण सभी ६४ जोगणियां और ५२ भैरु को अपने बांये पांव में समा लेते हैं और इसके बाद भैरु और जोगणियां सदा देवनारायण की सेवा मेंरहते हैं। देवनारायण भाट को साथ लेकरआते हैं और रास्ते में भाट नारायण को सारी घटनाऐं बताते हैं कि किस तरह से बगड़ावत मारे गये। उनके पास जो खजाना

था, वो कौन-कौन लूट कर ले गये हैं। और उनके भाईयों के बारे में भी बताते हैं। और उन्हें जोश दिलाते हैं कि आपको अपने परिवार का बैर लेना चाहिये। अगले दिन ही मालवाछोड़कर गोठां चलने की विनती करते हैं। नारायण सारी बातें सुनने के बाद भाटजी से कहते हैं कि अभी तो घर चलतेहैं और माता साडू से बात करेगें। भाटजी अपने साथ में बड़ के पेड़ से तोड़े पत्ते लेकर सा माता के यहां आते हैं और पत्तो से पत्तल बनाते हैं।नारायण कहते हैं किभाटजी दो पत्तल बनाओ, मैं भी आपके साथ पत्तल में ही भोजन करूंगा।

बगडावत भारत कथा -22

साडू माता सोचती है कि भाटजी तो जीवित ही वापस आ गये है। इसलिए भाटजी के खाने में जहर मिला देती है। देवनारायण और भाटजी साथ में खाना खाने बैठते हैं। भगवान को सारी बात का पता होता है कि भाटके खाने में जहर मिला हुआ है। जब साडू माता खाना परोसती है तब नजर बचाकर देवनारायण भाटजी को परोसा जहर वाला खाना खुद सामने रख लेते हैं और अपने लिये परोसा खाना भाटजी के सामने रख देते हैं। दोनों भोजन करना शुरु करतेहैं। साडू माता को पता चल जाता है कि जहर वाला खाना भगवान खा रहें हैं। साडू माता सोचती है कि नारायण जहर वाला खाना खाकर मर जायेगें। अब क्या करे ? यह सोचकर वो बहुत दुखी होती

है और रोने लगती है। तब नारायण माताजी से पूछते हैं कि माताजी क्या बात है,आप रो क्यों रही हैं ? इतना कहकर देवनारायण उबासी लेते हैं तो साडू माता को देवनारायण के मुंह में सारा ब्रमाण्ड दिखाई देता है।धरती आकाश और कई जानवर विचरण करते देख चकित हो जाती है और साडू माता को विश्वास हो जाता है कि ये तो तीनों लोकों के नाथ हैं। इनका जहर से कुछ नहीं बिगड़ने वाला है, इनकों कोई नहीं मार सकता हैं। खाना खाने के बाद देवनारायण दुधीया नीम के पास जाकर सारा जहर उगल देते है। कहा जाता है कि उस दिन से नीम कड़वा हो गया। छोछू भाट से सारी बात पता चलने पर नारायण साडू माता से अपने परिवार के बारे में सवाल करते हैं कि किस तरह से मेरे काका, बाबासा मारे गये हैं, और किसने मारा है ? उसका बदला लेना है और कल ही गोठां चलना होगा।दूसरे दिन सुबह जल्दी ही गोठां जाने के लिये तैयार होते हैं। नारायण को उनकी मामियां और मामाजी जाने से रोकते हैं कि आप छोटे से मोटे यहाँ हुये हो आपको देख कर तो हम धन्य होते हैं। आप चले जाओगे तो हमें आपके दर्शन कैसे होंगे। तब नारायण भाट से कहते हैं कि छीपा से हमारा चित्र छपाकर लाओ फिर हम यहाँ से चलेगें। मालवा में छीपा जाति के चित्रकार से भाट देवनारायण का चित्र छपवाकर लाते हैं और नारायण को देते हैं। नारायण अपनी मामियों को अपना चित्र देते हैं और कहते हैं कि आप रोज मेरे इस चित्र को देखकर मुझे याद कर लेना। साडू माता, हीरा दासी, नापा ग्वाला और कई ग्वाले, छोछू भाट, भाट की माँ डालू बाई और देवनारायण को देवनारायण के नानाजी और मामा-मामियाँ सभी बड़े प्यार से विदा करते हैं और कहते हैं कि वहाँ जाकर हमें भूल मत जाना।

देवनारायण के साथ मालवा से लौटते समय ६४ जोगणियां और ५२ भैरु जो उनके बाएँ पाँव में समा जाते हैं वो भी साथ आते हैं। मालवा से लौटते समय रास्ते में धार नगरी होती है। धार नगरी में एक सूखा हुआ बाग होता है। देवनारायण का काफिला वहां रुकता हैं और सभी वहीं विश्राम करते हैं। जैसे ही देवनारायण उस बाग में अपने कदम रखते हैं,बाग हरा भरा हो जाता हैं। वहीं देवनारायण विश्राम करते हैं। उस बाग में धार नगरी की राजकुमारी पीपलदे अपनी सखियों के साथ देवी के मन्दिर में पूजा करने के लिये आती है। राजकुमारी के सिर पर सींग होता है और उसके सारे शरीर में कोढ़ होता है। वह रोज इस बाग में देवी की पूजा करने आयाकरती थी। राजकुमारी देखती है कि ये बाग तो सूखा हुआ था, आज एक दम हरा भरा कैसे होगया ? राजकुमारी पीपलदे देवी की पूजा करअपनी सखियों के साथ आती है जहाँ देवनारायण के डेरे लगे हुए थे। राजकुमारी देखती है कि ये कौन सिद्ध पुरुष इस बाग में आकर रुके हैं। इनके आने से बाग हरा भरा हो गया है। वह उनके दर्शनों के लिये आती है। जैसे ही देवनारायण की दृष्टि पीपलदे पर पडती हैउसके माथे का सींग झड़ (गिर) जाता है और उसके शरीर का सारा कोढ़ भी खत्म हो जाता है और वह खूबसूरत हो जाती है। यह चमत्कार देख कर पीपल बहुत खुश होती है और भगवान के चरणों में गिर पड़ती है और उसे पिछले जन्म की सारी बात याद आ जाती है कि नारायण के कहने से ही मैंने बगड़ावतों का संहार किया और मुण्ड माला धारण की थी और नेतु ने मुझे श्राप दिया था कि माथे पर सींग होगा, कोढीं, लूली-लंगड़ी के रुप में धार में जन्म लेगी। और भगवान विष्णु देवनारायण अवतार लेंगे उनकी दृष्टि से ही

मुझे श्राप से मुक्ति मिलेगी। पूर्व जन्म काआभास होने पर उसे याद आता है कि देवनारायण के साथ ही मेरा विवाह होगा। और पीपलदे जी अपनी कावरी हथनी पर सवार बधावा गीत गाती हुई राजा के दरबार में आती है । राजा जय सिंह दे पीपलदे से पूछते हैं कि यह सब कैसे हुआ और ये बधावाकिस के लिये गा रही हो ? पीपलदे जी कहती है कि तीनों लोकों के नाथ देवनारायण ने अवतार लिया है। उन्होनें मेरा कोढ़ ठीककिया है, मेरी सारी बीमारी दूर कर दी है।उन्हीं के गीत गा रही हूं और उन्हीं के साथ मेरा विवाह करवाओ। धार नगरी के राजा जय सिंह जी देवनारायण के जात पात का पता लगाते हैं, और कहते हैं कि ये विवाह नहीं हो सकता हैं क्योकि वो हमारे बराबर के नहीं है। पीपलदे विवाह के लिये जिद करती है और अन्न-जल छोड़ देती है। विवश हो राजा एक युक्ति निकालते हैं कि क्यों न देवनारायण को गढ़ गाजणा में भेज दे, वहां का राक्षस राजा इन्हें मार डालेगा, अपना काम वैसे ही हो जाएगा। राजा जय सिंह देवनारायण को पत्र लिखते हैं कि हमारी धार नगरी के किवाड़ गढ़ गाजणा का राजा राक्षस ले गया है वो वापस लेकर आओ तो पीपलदे के साथ आपका विवाह करावें। उधर डेरे से साडू माता की घोड़ी को भी राक्षस चोरी कर ले गए। जब देवनारायण को साडू माता की घोड़ी का पता चलता है तब देवनारायण सोचते हैं कि दोनों काम साथ ही करके आ जायेगें। देवनारायण भैरुजी को पहरे पर लगाकर नीलागर घोड़े पर सवार गढ़ गाजणे से धार के किवाड़ और साडू माता की घोड़ी लेने निकल पड़ते हैं।

गढ़ गाजणा के बाहर देवनारायण राक्षसों को मारना शुरु करते हैं। एक को मारे दो हो जाऐं, दो मारे चार हो जाऐं। राक्षसों के खून की बूंदें जमीन पर गिरते ही नये राक्षस पैदा हो जाते। ये देखकर देवनारायण अपने दायें पांव से ६४ जोगणीयां और ५२ भैरुओं को बाहर निकालकर उन्हें आदेश देते हैं कि इन राक्षसों के खून की एक भी बूंद जमीन पर नहीं गिरनी चाहिये और अब भगवान राक्षसों का संहार करना शुरु करते हैं। सभी जोगणियां और भैरु जितना भी खून होता है सब चट कर जाते हैं। इस तरह सारे राक्षस मारे जाते हैं। अन्त में दो राक्षस बचते हैं। गज दन्त और नीम दन्त जो साडू माता की घोड़ी लेकर गढ़ गाजणा की खाई में कूद जाते हैं और पाताल लोक में छुप जाते हैं। भगवान देवनारायण भी राक्षसों के पीछे-पीछे पाताल लोक में कूदते हैं।पाताल लोक में पृथ्वी को अपने शीश पर धारण करने वाले राजा शेष नाग आराम कर रहे हैं। भगवान के घोड़े के टापों की आवाज सुनकर शेष नाग उठते हैं। देवनारायण उनसे पूछते हैं कि दो राक्षस यहां आये हैं ? शेष नाग कहते हैं, हां आये हैं। नारायण कहते हैं उन्हें मेरे हवाले कर दो। शेष नाग कहते हैं भगवान मेरे एक कुंवारी नाग कन्या है उसके साथ विवाह करों तो मैं राक्षसों का पता बताता हूँ और फिर नारायण नाग कन्या के साथ विवाह कर लेते हैं। पहला फेरा करके चंवरी से उठ कर फटकार मारते हैं और सेली बनाकर जोगी भोपा को दे देते हैं। जिसे काली डोरी के रुप में देवनारायण के फड़ बाचने वाले भोपे अपने गले में धारण किये रहते हैं। नाग कन्या से विवाह हो जाने के बाद शेष नाग देवनारायण को गढ़ गाजणा का रास्ता बता देते

हैं। गढ़ गाजणा पहुंचकर देवनारायण दैत्यराज पर हमला करते हैं। देवनारायण से डर कर दैत्यराज के खास राक्षस गजदन्त और नीम दन्त दोनों भगवान के पांव में पड़ जाते हैं और कहते हैं कि धार के किवाड़ हम वापस दे देगें और ये साडू माता की काली घोड़ी भी आपको वापस दे देतें हैं। आप हमारे राजा की कन्या चिमटीं बाई (दैत्य कन्या) से विवाह कर लो। भगवान दूसरा विवाह चिमटीं बाई से करते हैं और दूसरा फेरा कर चवंरी से उठ फटकार मारते हैं और लकड़ी बना कर जोगी भोपा को दे देते हैं जो देवनारायण की फड़ का परिचय देते वक्त भोपा दृष्य दिखाने के काम में लेता है।नाग कन्या और दैत्य कन्या से विवाह करने के बाद भगवान देवनारायण गढ़ गाजणा से धार के किवाड़ गज दन्त और नीम दन्त के सिर पर लदवाकर धार नगरी में भेज देते हैं। धार नगरी के बाहर दोनों राक्षस दरवाजे वापस लगा देते हैं। सुबह धार नगरी की प्रजा जागती हैं और देखती है कि नगरी के किवाड़ वापस आ गये हैं। ये समाचार राजा जय सिंह को मिलता है। राजा देखने आते हैं और उन्हें पूरा विश्वास हो जाता है कि देवनारायण जरुर कोई अवतारी पुरुष है। इसके साथ अपनी कन्या का विवाह कर देना चाहिये। राजा जय सिंह जी ४ पण्डितों के साथ देवनारायण के लिए लग्न-नारियल (सोने का) भिजवाते हैं। चारों पण्डित जी नारियल लेकर छोछू भाट के पास आते हैं। छोछू भाट उन ४ ब्राह्मणों (पण्डित) को माता साडू के पास लेकर जाता हैं और ब्राह्मण माता साडू को नारियल स्वीकार करने को कहते हैं। देवनारायण उस वक्त सोये हुए होते हैं। साडू माता उन्हें उठाकर कहती है कि धार के राजा के यहां से ४ ब्राह्मण आपके लिये राजकुमारी पीपलदे का लगन लेकर आये हैं।

देवनारायण कहते है माताजी पहले कन्या को देख आओ, कैसी है ? बिना देखे मेरा ब्याह करवा रही हो। माता साडू छोछू भाट को लड़की देखने भेजती है। भाटजी पीपलदे को देखकर आते हैं। माताजी को बताते हैं कि राजकुमारी जी तो बहुत सुन्दर है, पूरी तरह से नारायण के लायक है। धार के राजाजी के यहां शहनाईयां बजने लग जाती है, नगाड़े बजते और पीपलदे और नारायण के डोरा (डोलडा) बांधते हैं। मंगल गीत गाये जाते हैं। देवनारायण और पीपलदे की शादी हो जाती है। मगर नारायण ३ फेरे ही खाते हैं बाकि के आधे फेरे मंगरोप में आकर खाते हैं।इसके बाद देवनारायण धार नगरी से अपने डेरे हटाकर रवाना होते हैं। धार से चलने के बाद आगे आकर वे लोग सोनीयाना के बीहड़ (जंगल) में आकर विश्राम करते हैं।भगवान देवनारायण तो पांच पहर की नींद में सो जाते हैं। सोनियाना के जंगल में शिव-पार्वती बैठे होते हैं। पार्वती जी शिवजी से पूछती है भगवान ये कौन है। शिवजी बताते हैं ये विष्णुअवतार देवनारायण हैं, तो पार्वती कहती है कि अगर ये स्वयं भगवान के अवतार हैं तो मैं इनकी परीक्षा लेती हूं। देवनारायण के काफिले को देखकर पार्वती जी अपनी माया से एक राक्षस सोखिया पीर बनाती है और उसे कहती है कि आस-पास के १२ कोस का सारा पानी सोख ले सोखिया पीर आसपास का सारा पानी पीकर एक पेड़ के नीचे छिप जाता हैं। अब गायों को और काफिले के सारे इन्सानों को पानी की प्यास लगती है। सभी लोग पानी के लिये तड़पने लगते हैं। गायें बल्ड़ाने (चिल्लाने) लगती हैं तो नापा ग्वाल और अन्य ग्वालें आसपास पानी का पता करते हैं। उन्हें १२-१२ कोस दूर तक कहीं भी पानी नहीं मिलता हैं। परेशान होकर नापाजी भगवान देवनारायण

को जाकर उठाते हैं। कहते हैं नींद से जागो भगवान, पानी के बिना गायें और सब इन्सान मरे जा रहे हैं। देवनारायण गायों के प्यासी मरने की बात सुन नींद से जागते हैं और भैरुजी को आदेश देते हैं कि भैरु आसपास के जंगल में कौनसा पेड़ सबसे हरा है।

बगडावत भारत कथा -24

भैरूजी पता लगाकर बताते हैं। भगवान देवधा नाम की जगह में एक पेड़ है जिस पर बगुले बैठे हुए हैं और वो हराभरा हैं। देवनारायण उस पेड़ के नीचे आकर अपने भाले से पाताल में मारते हैं, देवनारायण का भाला वहां छुपे हुए सोखिया पीर को जाकर लगता है। पहले तो खून बाहर आता है, फिर पानी का फव्वारा फूट पड़ता हैं। नापा ग्वाल पहले गायों को पानी पिलाते हैं और बाद में काफिले के सभी लोग अपनी-अपनी प्यास बुझाते हैं। देवधा से देवनारायण का काफिला आगे चलता है। रास्ते में उन्हें (बनास नदी के किनारे) नागा साधुओंकी फौज मिलती है जो आने जाने वाले लोगों से दान मांगते हैं। आगे-आगे ग्वाले और गायें चल रही हैं और गाड़ियों में काफिले के लोग, साडू माता, हीरा दासी, देवनारायण और भैरु काफिले के सबसे पीछे आ रहे हैं। नागा साधु कहते हैं यहां दान चुकाये बिना नदी के उस पार कोई नहीं जा सकता और सभी नागा साधु अपने अपने चिमटे लेकर रास्ता रोक लेते हैं। देवनारायण के काफिले के ग्वालों और साधुओं के बीच युद्ध शुरु हो जाता है। इन साधुओं की जमात में

भांगी जी भी साधु वेश में होते हैं। हीरा उन्हें पहचान जाती हैं और माता साडू से कहती है माताजी एक साधू की शकल आपकी देवरानी नेतुजीसे मिलती है और डीलडौल नियाजी जैसा लगता है। साडू माता ये बात सुनकर साधुओं के गुरु बाबा रुपनाथ से मिलती है और बाबाजी से बनास नदी के किनारे हो रहे युद्ध को रुकवाने की विनती करती है।बाबा रुपनाथ उनके पूछने पर बताते हैं कि भांगीजी नियाजी और नेतूजी का ही बेटा है। यह सुनकर साडूमाता भांगी जी को उनसे मांग लेती हैं। बाबा रुपनाथ साडू माता को भांगीजी को ले जाने की इजाजत दे देते हैं। साडू माता भांगीजी को बुलाकर उन्हें समझाती हैं कि मैं आपकी बड़ी माताजी हूं। तब तक नारायण वहां आ जाते हैं और सारी बात सुन भांगीजी की हजामत बनवाते हैं, गंगाजल से स्नान करवाते हैं, अपने वस्त्र पहनाते हैं और उन्हें गले लगाते हैं। बाबा रुपनाथ भांगीजी को साडू माता के साथ जाने की आज्ञा देते हैं।

बगडावत भारत कथा -25

वहां से भांगीजी को साथ लेकर नारायण का काफिला मंगरोप में आकर रुकता है जहां साडू माता और हीरा दासी ने ११ वर्ष पहले बिलोना बिलोया था और बची हुई छाछ नीचे गिरा दी थी। माता साडू नारायण से कहती है कि नारायण अब अपनी धरती आने वाली है उससे पहले आप पीपलदे के साथ फेरे पूरे करो नहीं तो कलयुग में तीन फेरे लेने की प्रथा हो

जायेगी। वहां देवनारायण पीपलदे के साथ बाकि के फेरे लेकर उसे अपने बाये अंग लेते हैं। वहां पीपलदे के पिताजी धार के राजा भी आते हैं और पीपलदे का डायजा (दहेज) हथलेवा भरते हैं। जिसकी जितनी श्रद्धा होती है उतना पीपलदे की झोली में डालते हैं। कोई १ मोहर, कोई २ मोहरें, कोई ५ मोहरें और कोई १० मोहरें पीललदे की झोली में डालते हैं। वहां एक भील होता है, उसके पास उस वक्त पीपलदे को देने के लिए कुछ भी नहीं होता है। इसलिए वो जंगल में से बेल पत्र पेड़ से एक बिला तोड़ कर लाता है और पीपलदे की झोली में डाल देता है। ये बिला भगवान देख लेते हैं और पीपलदे की झोली में से उठा लेते हैं। पीपलदे जी पूछती है कि भगवान आपने इन सब चीजों में से इसे ही क्यो उठाया ? नारायण कहते हैं पीपलदे जी ये बिला है, इसमें बिला-बिली पल रहे हैं। आप इसे रुई में लपेट कर सावधानी से रख दे। जैसे मां के गर्भ में बच्चा पलता हैं वैसे ही उस बिले में देवनारायण पीपलदे के बेटा-बेटी (बिला-बिली) बड़े होते हैं। मंगरोप से डेरा उठता है और काफिला आगे बढ़ता है और रास्ते में माण्डल आकर रुकता हैं। जहां भगवान और छोछू भाट दोनों साथ-साथ तालाब की पाल पर घूमते हैं। छोछू भाट नारायण को बताते हैं कि यह तालाब आपके दादा परदादा ने बनाया है। देवनारायण कहते है कि तालाब तो काफी बड़ा बनाया है और अपने नीलागर घोड़े को तालाब की पाल पर पानी पिलाने के लिये लाते हैं। नीलागर घोड़ा तालाब का पानी नहीं पीता है। देवनारायण भाट जी से पूछते हैं कि क्या बात है, इस तालाब का पानी घोड़ा नहीं पी रहा हैं ? छोछू भाट कहता है कि इस तालाब में आपके पूर्वज माण्डल जी की समाधी है और भाट जी सारी बात विस्तार से बताते हैं कि बिसलदेव

जी के डर से माण्डल जी अपने घोड़े के साथ पानी में उतर गये। तब से इस तालाब का नांगल नहीं हुआ है। भगवान देवनारायण वहीं डेरे डालने को कहते हैं और तालाब का नांगल करवाते हैं। ब्राह्मणों को भोजन करवाते हैं। हवन, यज्ञ, दान और १०० गायों का दान करते हैं। माता साडू और हीरा दासी तालाब पर बने माण्डल जी के मन्दारे पर चढ़ कर अपने गांव की ओर देखती है और हीरा से कहती है कि हीरा अपना गांव तो उजाड़ पड़ा है, वीरान हो गया है। वहां जाकर कैसे रहेगें ? वहां तो भूत-प्रेतों का वास हो गया होगा। भगवान देवनारायण का काफिला माण्डल से आगे बढ़ता है। रास्ते में दो गांव पड़ते हैं। कावंल्या और जीवंल्यां। ये दोनों गांव बगड़ावतों की दासियों के नाम पर बसे हुए थे। माता साडू देवनारायण से यहीं रुकने को कहती है तो देवनारायण कहते हैं माताजी यहां का तो हम पानी भी नहीं पीयेगें। यह तो हमारे दासियों का गांव है।अब तो ये सवारी गोठां जाकर ही रुकेगी और वहीं अपनी नई बस्ती खेड़ा चौसला बसायेगें। माता साडू कहती है गोठां तो उजड़ गया हैं। वहां तो राण का राजा हमें आराम से नहीं रहने देगा। देवनारायण कहते हैं ये बात आप मेरे ऊपर छोड़ दीजिये। देवनारायण का काफिला गोठां में आकर रुकता है और वहीं देवनारायण अपना नया गांव खैड़ा चौसला बसाते हैं और उसकी नींव पूनम (पूर्णिमा) के दिन रखते हैं।उधर बिजौरी कांजरी सारे संसार में घूमते-फिरते खेल दिखाते हुए बगड़ावतों से बड़ा दानवीर ढूंढती रहती हैं। जब कांगरु देश में वह अपना करतब दिखा रही होती है तो उड़ती हुई पंखणियों से बात करती है। बिजौरी गिरजणियों से पूछती है, ए गिरजणियां कहां जा रही हो, मुझे बगड़ावतों के हाल बताती जाओ ? गिरजणियां कहती है

नियाजी ने बहुत जोर का भारत करयो है, हमको उसी ने धपाया है (पेट भर दिया है)। बिजौरी को विश्वास नहीं होता है और गिरजणियों से कहती है कि तुम झूंठ बोलती है। फिर बिजौरी अपने साथियों से कहती है अब बांस उखाड़ो, सभी सामान इकट्ठा करो और बाबा रुपनाथ के पास चलो। हम जिनके गुणगान कर रहे हैं वो बगड़ावत अब नहीं रहे। बिजौरी कांजरी बाबा रुपनाथ के पास रुपाहेली जाकर बगड़ावतों के बारे में उनसे पूछती है। बाबाजी बताते है कि २३ बगड़ावत भाई रावजी के साथ युद्ध में काम आ गये हैं. २४वां तेजाजी पाटन में है, तू उसके पास चली जा।

बगडावत भारत कथा -26

बाबा रुपनाथ की बात सुनकर बिजौरी अपने डेरे लादकर आगे बढ़ जाती है और पाटन आकर डेरा डाल देती है। वहां तेजाजी से मिलकर बाकी बगड़ावतों और अपने आधे जेवरके बारे में पूछती हैं। तेजाजी बिजौरी को बताते है कि तू अजमेर चली जा वहां पर सवाई भोज का लड़का मेहन्दूजी है जो तुमको तुम्हाराआधा गहणा दे देगा। अजमेर राजा बिसलदेव का राज्य होता है। उधर मेहन्दूजी अजमेर में बड़े हो जाते है। वहां राजा बिसलदेव के दरबार में बैठते है। मेहन्दूजी बटूर के थानेदार होते हैं जो कि राजा बिसलदेव के राज्य में होता हैं इसलिए व उनकी कचहरी में बैठते थे। जब बिजौरी कांजरी को विश्वास होता है की बगड़ावत भाई तो सभीरण

में मारे गये। और सवाई भोज के बड़े बेटे मेहन्दू जी के पास सवाई भोज ने उसकाआधा जेवर छोड़कर रखा है और वो अजमेर में है तो वह अपना सामान लादकर अजमेर आती है, वहीं अपना करतब दिखाना शुरु करती है। बहुत ऊंची आसमान में रस्सी बांध कर उस परचढ़ कर एक बांस हाथ मे लेकर अपने करतब दिखाती है। तमाशा दिखाते हुए वो सवाई भोज के गीत गाती है। बिसलदेव जी अपने छोटे बड़े सभी राजाओं को लेकर आते हैं और बिजौरी से कहते हैं कि बिजौरी मैं तुझे हाथियों का जोड़ा देता हूं, दस गांव का पट्टा लिख देता हूं। तू आज से सवाई भोज का नाम लेना छोड़ दे, और मेरा नाम लेने लगजा। बिजौरी कहती है कि आप अपने गांव किसी चारण भाटों को दे दो। मैं तो सवाई भोज का नाम नहीं छोड़ सकती हूं। मैं सारी पृथ्वी की परिक्रमा करके आई हूं लेकिन सवाई भोज जैसा दाता मुझे आज तक नहीं मिला। राजा बिसलदेव जी फिर कहते हैं कि एबिजौरी तू क्यों मरे हुए के गीत गा रही है, तुझे उससे क्या मिलेगा ? तू मेरे गीत गा, मैं तेरे को सोने की मोहरे दूंगा। बिजौरी वापस जवाब देती है कि सवा करोड़ केजेवर मैंने धारण कर रखे हैं। अगर तुम सवाकरोड़ के जेवर देकर ढाई करोड़ पूरा कर दो तो मैं तुम्हारे गीत गाने लग जाऊ,जब तक मैं सांस ले रही हूं तब तक तो मैं सवाई भोज को नहीं भूल सकती। ये बात भैरुन्दा का ठाकुर सुन लेता हैं और मेहन्दू जी को बताता है। मेहन्दू जी को याद आता है कि मेरे पिताजी ने मुझे कुछ धन-जेवर दिया था, वो पोटली इसी बिजौरी की अमानत है। मेहन्दू जी तिजोरी खोलकर तलाश करते हैं वहां एक ढाल के नीचे रुमाल मे बंधी पोटलीमिल जाती है। ढाल पर लिखा होता है बिजौरीकांजरी का शरीर का आधा जेवर जो

उसे दे देवें। मेहन्दू जी पोटली लेकर वहां आते हैं जहां बिजौरी अपना करतब दिखा रही है। मेहन्दू जी नीचे से बिजौरीको आवाज लगातेहैं कि में सवाई भोज का लड़का मेहन्दू तेरे शरीर का आधा जेवर तुझे देने आया हूं। मेहन्दू जी को आता देखकर बिजौरी उतावली हो जाती है।मेहन्दू जी आकर बिजौरी को सारा गहणा देते है और कहते है कि यह आपकी अमानत है। बिजौरी मेहन्दू जी से सारा श्रृंगार लेकर पहन लेती है। मेहन्दू बिजौरी को कहते है कि तेरे पीछे मैने बहुत गोते खाये, तुझे बहुत ढूंढा। पिताजी कह गये थे कि दिया हुआ दान घर में नही रखना। इसलिये हमने आपको अब यह अमानत दे दी। बिजौरी मेहन्दू जी को आशीष देती है और कहती है कि अपने बाप का बैर जरुर निकालना। बिजौरी कांजरी का जेवर देकर मेहन्दू जी अजमेर से अपने थाने बटूर में वापस आ जाते हैं।

बगडावत भारत कथा -27

जब राजा बिसलदेव को पता चलता है कि मेहन्दू जी ने बिजौरी को जेवर दिये हैं तो वो बहुत नाराज होते हैं। और उनको मरवाने की साजिश करते हैं। मेहन्दू जी को मारने की साजिश के लिये राण के रावजी के यहां संदेश भेजते हैं कि सवाई भोज का लड़का मेहन्दू जी मेरी आंख में कांटे की तरह चुभ रहा है। राण के रावजी का संदेश आता है, वो लिखते है कि भूणाजी भी मेरे को काला भुजंग नाग लगता है। ये कहीं मेरे से अपने बाप का बैर न ले ले। रावजी वापस लिखते है कि मेहन्दू जी को शिकार के बहाने

रोहड़्यां के बीहड़ में भेज दो, आगे मैं देख लूंगा। राजा बिसलदेव जी साडीवान भेज कर मेहन्दू जी को सूचना देते हैं कि मेवाड़ की भूमि पर नाहर (शेर) बहुत हो गये। आते जाते लोगो को खा जाते हैं। प्रजा के रखवाले तो आप ही हो। शिकार खेले भी बहुत दिन हो गये हैं। रोहड़्यां का बीहड़ में जाइए और शेरों का शिकार कर लीजिए। मेहन्दू जी बटूर से अजमेर आये तो पहले अगड़ पर हाथियों का मुकाबला कर प्रवेश किया। वहां से अपने मानकराय बछेरे पर सवार हो ५०० घुड़ सवार लेकर रोहड़्यां के जंगल में शेरों के शिकार के लिये निकल जाते हैं। इधर से रावजी भूणाजी को लेकर बीहड़ में आ जाते हैं और वचीनी की बुरज पर आकर अपने डेरे डाल देते हैं। भूणाजी दातुन कर रहे होते हैं। वहां उनको तड़ातड़ गोलियां चलने की आवाज सुनाईं देती हैं। जहां मेहन्दू जी शेरों का शिकार कर रहे होते हैं। रावजी कहते हैं कि भूणा ये कौन है जो अपनी रियासत में अपनी इजाजत के बगैर शिकार खेलने आया हैं ? जाओ और उसे मेरे पास पकड़कर ले आओ। सामना करे तो उसे मार डालना या उसे कैद करके दरबार में हाजिर करना। इतना कहकर रावजी तो वापस राण में आ जाते हैं। भूणाजी अपनी सेना में बन्ना चारण को साथ लेते हैं उसे सेना का सरदार बनाते हैं। बन्ना चारण कहता है सरकार हमला करने से पहले उसे संदेश तो भेज दो ताकि वो भी तैयार हो जाये। पीछे से हमला करना आप जैसे मर्दों का काम नहीं है। भूणाजी सांडीवान के हाथ संदेश दिलाते है कि मेरा नाम राजकुमार भूणा है, बिना आज्ञा से यहां शिकार खैलने की सजा देने आ रहा हूं। मेहन्दू जी के पास सांडीवान संदेश लेकर आता है। मेहन्दू जी संदेश पढ़ते है और सोचते की भूणाजी तो मेरा भाई है। क्या

भाई-भाई को मारेगा। जरुर इसमें बाबासा (बिसलदेव) की कोई चाल है, अपने रास्ते से मुझे हटाने की। मेहन्दू जी सांडीवान के साथ भूणाजी को संदेश भेजते हैं। कहते हैं कि आप पधारो में आपसे गले मिलने के वास्ते इन्तजार कर रहा हूं। हम दोनों मिलकर साथ मे माताजी की पूजा करेगें।सांडीवान भूणाजी के पास संदेश लेकर आते हैं। भूणाजी संदेश पढ़ते हैं कि वो तो मुझसे गले लगने के लिये इन्तजार कर रहे हैं। भूणाजी बन्ना चारण को कहते हैं कि बन्ना हमने उसे युद्ध करने का संदेश भेजा और वो हमें संदेश भेज रहा है कि हम साथ मिलकर माताजी की पूजा करेगें। बन्ना पूछते है कि कौन है वो। भूणाजी कहते हैं कि मेहन्दू है कोई। बन्ना पहचान जाता है और कहता है कि सरकार ये तो आपका भाई है। मेहन्दू सवाई भोज का लड़का है। ये क्या कहते हो बन्ना, मेरे बाबासा तो रावजी है। ये मेरा भाई कहां से आ गया फिर ? बन्ना सारी बात बताता है कि बगड़ावतों के मरने का बाद रावजी और उनके साथियों ने आपको भी मारने की कोशिश की मगर आप बच गये और रावजी आपको अपना बेटा बनाकर साथ ले आये। और इस बात का भूणाजी को सबूत देता है कि आपकी चंटी अगुंली कटी हुई है। रावजी का और आपका खून मिलाकर रावजी ने आपको बेटा बनाया है और आपको खाण्डेराव नाम दिया। ये बात सुनकर भूणाजी अपने बछेरे पर सवार होकर मेहन्दू जी से मिलने आते हैं। जहां दोनों भाई गले मिलते हैं और एक दूसरे का हाल पूछते हैं। मेहन्दूजी उन्हें सारी बात बताते हैं कि अपने खानदान के मरने के बाद अपना खजाना कौन-कौन लूट कर ले गये हैं।और बाबासा की बोर घोड़ी को धांधू भील ले गया है। सुना है उसके सवा मण की बेड़्या गले में डाल रखी हैं और कैद

करके रखी हुई है। जहां उसकी बड़ी दुर्दशा हो रही है। सबसे पहले आप उसे छुड़ाओ। और सारी बात मेहन्दूजी भूणाजी को बताकर रोहड़िया की बीहड़ से सीधे खेड़ा चौसला आ गए।

बगडावत भारत कथा -28

खेडा चौसला आकर मेहन्दू जी देवनारायण से मिले। देवनारायण से मिलने के बाद मेहन्दू जी साडू माता से भी मिले क्योंकि मेहन्दू जी देवनारायण के बड़े भाई थे इसलिए साडू माता ने उनको राजगद्दी सौंप दी और उनका राजतिलक कर दिया। फिर दोनों भाईयों ने साडू माता और छोछू भाट से सलाह लेकर तेजाजी के बेटे मदनो जी को संदेश भेजा और उन्हें भी खेड़ा चौसला बुला लिया। उधर भूणा जी मेहन्दू जी से मिलकर सीधे राण में पातु के पास आते हैं और पिछली सारी बात पूछते हैं। पातु बताती है कि हां तुम बगड़ावतों के लड़के हो यह सही है। अब भूणा जी के दिल में अपने बाप का बदला लेने की भावना जाग जाती है। भूणाजी पातू कलाली के यहां से सीधे दरबार में जाकर अरज करते हैं कि बाबासा मेरे को इजाजत दो मैं भीलों की खाल को फतेह करने जाना चाहता हूं। वहां एक बहुत अच्छी बोर घोड़ी है, उसे लेकर आना है। रावजी सोचते हैं कि इसे कहीं पता तो नहीं चल गया। लगता है मेहन्दू ने इन्हें सब कुछ बता दिया। रावजी कहते हैं बेटा भूणा भीला की खाल में खतरा है। वहां ८० हजार भीलो की सेना है। उनसे वहां लड़ाई में जीतना बहुत कठिन

काम है। भूणाजी कहते है बाबासा मैं तो जा रहा हूँ भीलों का मुझे कोई डर नहीं है, मेरे को तो बोर घोड़ी चाहिये। रावजी सोचते है जाना चाहता है तो जाने दो। खुद-ब-खुद ही मर जायेगा, अपने रास्ते का कांटा साफ हो जायेगा। रावजी भूणाजी के साथ दियाजी और कालूमीर पठान कोऔर उनके साथ १७,००० सैनिक और तौपें, गोला-बारूद देकर भेजते हैं। भूणाजी भीलों की खाल में जाकर भीलों से अपने बाप का बैर लेने के लिये धांधू भील को संदेश भेजते हैं कि धांधूजी हमारी बोर घोड़ी वापस कर हमारे सामने माफी मांगों नहीं तो युद्ध करने को तैयार रहो। मैं मेरे बाबासा (बगड़ावत) का बैर लेने आ रहा हूं। धांधू भील भूणाजी को संदेश भेजते हैं कि भूणा तेरा बाप को रण में मैंने मारा था और अब तू भी मरने के लिये तैयार हो जा । भीलमाल ठाकुर भूणा को कहते हैं कि तेरे बाप के खातिर हमारा धणी खारी के युद्ध में मारा गया। अब तू घोड़ी लेने चला आया। सारे के सारे भील भूणा पर चढ़ आते हैं। दोनों में घमासान युद्ध हो जाता है और युद्ध ५ महीने तक चलता है। जब भीलों की सारी फौज आ गई तब कालूमीर और दीया जी तो डर के भाग गये, सब भील १७ कोस तक भूणा जी घेर लेते है। भूणा जी समझ जाते हैं कि रावजी की फौज तो साथ नहीं दे रहीं है यह युद्ध तो अपने बलबूते पर ही लड़ना होगा। उधर राण में रावजी को तलावत खां खिलजी का युद्ध का संदेश मिलता है। तलावत खां खिलजी, खरनार के बादशाह का संदेश पढ़ कर रावजी घबरा जाते हैं। सोचते हैं कि उनके खास उमराव तो भूणाजी के साथ भीलों की खाल में लड़ाई कर रहें हैं, तलावत खां का क्या करे ? रावजी ने पहले तलावत खां को बगड़ावतों से युद्ध के समय कहा था कि युद्ध जीतकर

दीपकंवर बाई से आपका विवाह करवायेगें। मगर दीपकंवर बाई तो युद्ध में मारी जाती है। तलावत खां उस समय तो वापस लौट जाता हैं मगर फिर रावजी को संदेश भेजता हैं कि दीपकंवर न सही आपकी बेटी तारादे से मेरा विवाह(निकाह) करा दो, नहीं तो मेरे साथ युद्ध करो। मैं तुम्हें अपने साथ कैद कर के ले जाउंगा। रावजी तलावत खां के डर से तारादे को राताकोट में छिपा देते हैं और कहते है कि कुछ भी हो तुम यहां से बाहर मत निकलना। तलावत खान अपनी सेना के साथ राण पर चढ़ाई कर देता हैं। बहुत ढूंढने पर भी तलावत खां को तारादे कहीं नहीं मिलती है। फिर बादशाह तलावत खां नौलखा बाग में छुपकर रावजी के आने का इन्तजार करने लगा। रावजी का ग्यारस (ग्यारस का व्रत) नजदीक आ गया था। रविवार के दिन रावजी जब ग्यारस को व्रत खोलने नौलखे बाग में गये वहां बादशाह तलावत खां ने रावजी को कैद कर लिया।

बगडावत भारत कथा -29

तलावत खां ने राणाजी को कैद कर अपने साथ ले जाते समय रास्ते में शोभादे को, जो पुरोहित की लड़की होती है, उसको भी पकड़ लिया। खरनार के बादशाह को रावजी ने कहा तू शोभादे को छोड़ दे। बादशाह ने कहा कि मैं शोभादे को एक शर्त पर छोड़ दूंगा, तुम मेरा निकाह तारादे से करा दो। बादशाह एक लोहे का पिंजरा बना कर रावजी को बन्द कर लेता है और शोभादे से निकाह कर लेता है। और उन दोनों को साथ लेकर

खरनार वापस चला जाता है। जब तारादे को पता चलता है कि तलावत खां, बाबासा (रावजी) को कैद कर ले गया है तब तारादे सांडीवान के हाथ भीलों की खाल में अपने भाई भूणाजी को संदेश भेजती हैं कि भूणाजी मैं बहुत बीमार हूं और अगर आखिरी समय मुझसे मिलना हो तो जल्दी से आ जाओ। तारादे दूसरा परवाना दीयाजी और कालूमीर को लिखती है कि बाबा रावजी को खरनार का बादशाह पकड़ ले गया है।उधर भूणाजी धाधूं भील को मारकर वहां से अपनी बोर घोड़ी को छुड़ाकर, साथ लेकर राण वापस आते है। तारादे भूणाजी को सारी बात सुनाती है कि तलावत खां सात संमुदर पार रावजी को कैद कर ले गया है। विनती करती है कि उन्हें छुड़ाकर लायें। भूणाजी तारादे को कहते हैं कि अगर तू मुझे भीलमाल में ही पूरा समाचार लिख भेजती तो मैं बादशाह को रास्ते में ही रोक लेता,लेकिन तूने तो अपनी बीमारी का समाचार भेजा था। और फिर रावजी के सारे उमराव तो यहीं वापस आ गए थे। उन्होनें तलावत खां को क्यों नहीं रोका ? तारादे तब भूणाजी को बताती है कि वे सब तो महल में छिप कर बैठ गए थे। इस पर भूणाजी कहते हैं कि तारादे अब तक तो तलावत खां ने उन्हें मार दिया होगा। अब जाने से क्या फायदा। और सात संमुदर पार इतनी सारी सेना हाथी घोड़ो को लेकर जाना भी मुमकिन नहीं है। राणी सांखली भूणाजी को ताना कसती है कि भूणाजी आप मेरे जाये नहीं हो इसलिये आप नहीं जाना चाहते हैं। आप को राण का राज ज्यादा प्यारा है। राणी सांखली का उलाहना सुनकर भूणाजी जाने के लिये तैयार हो जाते हैं और बहादुर सैनिको का चुनाव कर, उमरावों, सरदारों औरराजाओं को इकट्ठा करते हैं। दीयाजी, कालूमीर, टोडा के सोलंकी और पिलोदा

ठाकुर को संदेश भेजते हैं कि रावजी को खरनार के बादशाह की कैद से आजाद कराने केलिए हम सबको साथ-साथ काबुल चलना होगा। भूणाजी तलावत खां खिलजी से युद्ध करने के लिये राणी सांखली से विदाई लेते हैं।वह भूणाजी की आरती करती है और तिलक लगा कर विदा करती हैं। भूणाजी की फौज खरनार के बाहर समुद्र के किनारे पहुंच जाती है। भूणाजी अपनी बोर घोड़ी को कहते हैं कि हम दोनों को यह समुद्र लांघकर अकेले ही खरनार पहुंचना होगा। इतने सारेसैनिक समुद्र लांघ कर कैसे जाऐंगे ? घोड़ी कहती है कि भूणाजी गढ़ कोटे होते तोमैं जरुर चढ़ जाती मगर पानी तो मैं नहीं लांघ सकती। तब भूणाजी बन्ना चारण से कहते हैं कि मैंने माताजी को वचन दिया हैतो बाबाजी को छुड़ाने तो जाना ही पड़ेगा। लेकिन इस समुद्र को कैसे पार किया जाए। बन्ना चारण कहता है भूणाजी भगवान देवनारायण का ध्यान कीजिए। वे ही इस समस्या को हल करेंगे। भूणाजी स्नान-ध्यान कर देवनारायण को याद करते हैं। देवनारायण भूणाजी की सहायता के लिए भैरुजी को भेजते हैं। भैरुजी आते हैं और पानी में पत्थर का रास्ता बना देते हैं। भूणा जी की फौज पानी के ऊपर के रास्ते पर चल पड़ती है। सात समुद्र को पार कर भूणा जी अपनी फौज के साथ खरनार पहुंच जाते हैं। भूणाजी खरनार के बादशाह पर हमला कर महल में जाकर उनको पकड़ लेते हैं। भूणाजी खरनार के बादशाह को मारने ही वाले होते हैं कि बीच में शोभादे आ जाती हैं और भूणाजी से कहती है कि दादा ये जैसे भी हैं अब मेरे पति हैं, आप इनको छोड़ दीजिए। भूणाजी तारादे की तरह शोभादे को भी अपनी बहन मानते थे इसलिए खरनार के बादशाह को माफ कर जीवित छोड़ देते हैं। और रावजी को कैद से छुड़ाकर वापस

राण की तरफ रवाना होते हैं। जब भूणाजी रावजी को साथ लेकर राण पहुंचते हैं तो रानीजी भूणाजी और रावजी की आरती करती हैं। राण में वापस खुशियां लौट आती हैं।राता कोट में घी के दिये जल उठते है इधर अजमेर में जब राजा बिसलदेव जी को पता चलता है कि देवनारायण ने मालवा से वापस आकर खेड़ा चौसला नामक गांव बसा लिया है तब वह बहुत ही नाराज होते हैं और सांड़ीवान के हाथ देवनारायण के नाम संदेश भेजते हैं कि मेरी आंखों केसामने पले बड़े बालक-टाबर ने गांव बसा लिया और हमको खबर भी नहीं करी। अब आकर इसकी करनी भरो और साथ ही यह भी लिखते हैं कि मेहन्दू जी को हमने छोटे से बड़ा किया था और इसको बटूर के थानेदार बनाया था, इसके पीछे जो खर्चा हुआ था वो भी हमें लौटाओ। देवनारायण बिसलदेव जी का संदेश पढ़कर छोछू भाट को लेकर अजमेर की ओर रवाना होते हैं। जैसे ही देवनारायण के घोड़े नीलागर के पांव की टांपे अजमेर शहर में पड़ती हैं वैसे ही बिसलदेव जी का राज धूजने (हिलने) लग जाता है। देवनारायण बाहर ही रुक जाते हैं और छोछू भाट अजमेर की कचहरी में जाकर बिसलदेव को बताता है कि देवनारायण पधारे हैं। देवनारायण फिर अजमेर के महल का कांगड़ा तोड़ते हैं। बिसलदेवजी देखते हैं कि देवनारायण तो बहुत बलवान हैं, कहीं ये महलों में आ गये तो महल टूट जायेगा। वो अपने दानव भैंसा सुर को बुलाते हैं और कहते हैं कि भैसा सुर एक ग्यारह वर्ष का टाबर नीलागर घोड़े पर सवार अजमेर में आया है, जाकर उसे खा जाओं।

बगडावत भारत कथा -30

भैंसासुर दानव जाकर देवनारायण को ललकारता है। देवनारायण अपनी तलवार से भैंसा सुर का वध कर देते हैं। लेकिन भैंसा सुर दानव के रक्त की बूंदे जमीन परगिरते ही और कई दानव पैदा हो जाते हैं। यह देख देवनारायण अपने बायें पांव को झटकते हैं, उसमें से ६४ जोगणियां और ५२ भैरु निकलते हैं। देवनारायण उन्हें आदेश देते हैं कि मैं दानवो को मारूंगा और तुम उनके खून की एक भी बूंदजमीन पर गिरने मत देना। सभी जोगणियां और भैरु अपना खप्पर लेकर तैयार हो जाते हैं, और देवनारायण एक-एक दानव का संहार करते जाते हैं। भैंसा सुर दानव व अनेक दानवों के मारे जाने की खबर बिसलदेव जी को लगती है तब बिसलदेव जी देवनारायण को गरड़ा घोड़ा देते हैं जो अपने ऊपर किसी को भी सवारी नहीं करने देता था और आदमियों को खा जाता था। देवनारायण उस घोड़े पर बैठकर वहीं एक पत्थर के खम्बे को तलवार से काट कर दो टुकड़े कर देते हैं। देवनारायण का बल देखकर बिसलदेव जी घबरा जाते हैं और दौड़ते हुए देवनारायण के पास आकर कहते हैं भगवान मुझसे गलती हुई, क्षमा करें। और बहुत सा धन देकर देवनारायण को वापस खेड़ा चौसला रवाना करते हैं। इसके बाद देवनारायण और मेहन्दू जी भाट से पूछते हैं कि हमारा क्या-क्या सामान कौन-कौन ले गया है और उसे कैसे लेकर आना है ? भाटजी उन दोनों को बताते हैं कि सवाई भोजकी बुंली घोड़ी

सावर के ठाकुर दियाजी के पास है, उसे वापस लेकर आना है। ये बात सुनकर मेहन्दू जी कहते हैं कि मैं अभी जाकर सांवर से बाबासा की घोड़ी छुड़ा कर लाता हूं, और छोछू भाट को साथ लेकर चल देते है। मेहन्दू जी मानकराय बछेरा पर सवार हो और छोछू भाट फुलेरे बछेरे पर सवार होकर सावर के लिये निकल पड़ते हैं। आगे एक जगह जाकर रुकते हैं जहां से सावर के लिए दो रास्ते फटतें हैं। मेहन्दू जी भाट से पूछते हैं भाटजी कौनसे रास्ते जाना चाहिये। भाट कहता है सरकार एक रास्ता एक दिन का और दूसरा रास्ता तीन दिन का है। एक दिन वाले रास्ते पर खतरा है और तीन दिन वाले रास्ते पर कोई खतरा नहीं है। आप हुकम करो उसी रास्ते चलते हैं। मेहन्दू जी कहते हैं कि अपने पास शस्त्र है, खतरा होगा तो निपट लेगें। और एक दिन वाले रास्ते चल पड़ते हैं। आगे घना जंगल आता हैं। वहां भगवान शिव और पार्वती जी दोनों विराजमान होते हैं। पार्वती जी छल करने के लिये नो हाथ लम्बाशेर अपनी माया से बनाकर मेहन्दू जी के सामने छोड़ देती है। मेहन्दू जी शेर देखकर घबरा जाते हैं कि इतना बड़ा शेर तो कभी देखा नहीं और वो पीछे हट जाते हैं, और वापस खेड़ा चौसला लौट जाते हैं। जब मेहन्दू जी खाली हाथ वापस आते हैं तब देवनारायण छोछू भाट को लेकर अपने नीलागरघोड़े पर सवार हो सांवर के रास्ते चल पड़तेहैं। रास्ते में वहीं जाकर रुकते हैं जहां दो रास्ते अलग-अलग दिशा में जाते हैं। देवनारायण भाटजी से पूछते हैं बाबाभाट कौनसे रास्ते जाना चाहिये। छोछू भाटकहता है एक रास्ता एक दिन का है जिसमें खतरा ही खतरा है, दूसरा रास्ता तीन दिन का है। देवनारायण कहते है भाटजी हम तो एकदिन वाले रास्ते ही जायेगें, और वो आगे चलते

हैं। आगे घना जंगल आता है जहां शिवजी आंखे बंद किये ध्यान में लीन है औरपार्वती जी शिव के पांव दबा रही है। पार्वती जी देखती है कि देवनारायण आ रहे हैं और वह शिवजी से कहती है कि भगवान मैं तो इनकी परीक्षा लूंगी। शिवजी मना करते हैं कि ये तो स्वयं नारायण हैं आपका शेर मारा जाएगा। पार्वती जी नहीं मानती हैं और वो अपने शेर को देवनारायण के आगे छोड़ देती है।

बगडावत भारत कथा -31

शेर देवनारायण और छोछू भाट के सामने आकर खड़ा हो जाता है। भाट डर के मारे उछल कर ऊपर एक पलाश के पेड़ पर चढ़ जाता है। देवनारायण शेर को कहते हैं कि भाई तुमने हमारा रास्ता क्यो रोका ,हमें जाने दो। शेर कहता है कि मैं तो तुम्हें खाउंगा अगर बचना चाहता हैं तो मुझसे लड़ना पड़ेगा। देवनारायण कहते हैं शेर तू तो है मांसाहारी जीव। मैं तुझे अपने शस्त्र से नहीं मारूंगा। ऐसा कर पहले तू नहा कर आ, मैं तेरा यहीं इन्तजार कर रहा हूं। शेर नहा कर आता है फिर शेर देवनारायण से कहताहै मैं भी आपसे नहीं लडूंगा। आपने जो चमड़े कि जूतियां पहनी है, उसे खोल कर मुझसे लड़ो। देवनारायण अपने जूते खोल कर अपने खांड़े के एक ही वार से शेर का सिर धड़ से अलग कर देते हैं। फिर भाट पेड़ से नीचे उतर कर कहता है कि अभी शेर नहीं मरा, इसके प्राण तो नाभी में है। और अपनी कटार निकाल कर शेर की नाभी में मारता है और कहता है कि

यह अब मरा है। देवनारायण यह देख कर भाट पर हंसते हैं। वहां से देवनारायण और छोछूभाट सावर की तरफ चलते है, सावर के बाहर एक टिमक्या तालाब होता है, वहां आकर देवनारायण बैठ जाते हैं और भाट को कहते हैं, बाबा भाटजी आप जाकर कोई भी बहाना बनाकर दियाजी को यहीं बुलाकर लाओ। भाट कहता है, दियाजी मेरे को वहीं खतम कर दे तो। और उन्हें बाहर लाने के लिए तो मुझे झूठ बोलना पड़ेगा। झूठ बोलूंगा तो वैसे ही मर जाउंगा देवनारायणभाट को ४ तीतर बनाकर देते हैं और कहते हैं कि भाटजी आप ४ बार झूठीं सोगन्ध खा सकते हो। इन तीतरों को अपनी कमर में बांधलो, और जहां झूठ बोलना पड़े वहीं तीतर पर हाथ लगा कर कहना कि मैं झूठ बोलू तो इस जीव की सोगन्ध और एक तीतर मर जायेगा। आपको कुछ नहीं होगा। और दियाजी से कहना की अजमेर के राजाजी के लड़के सुवर का शिकार करने के लिये आये हुए हैं। और गांवके बाहर डेरा डाल रखा है। ऐसा बोलकर दियाजी को साथ लेकर झट आना।

बगडावत भारत कथा -32

भाटजी कमर में तीतर बांधकर सावर गढ़ में घुसते हैं और परकोटे के दरवाजे पर आकर चौकीदार से कहते हैं कि मैं अजमेर से आया हूं राजाजी का भाट हूं। द्वारपाल भाटजी को लेकर दियाजी के पास जाता हैं। चौकीदार जाकर दरबार में जहांदियाजी का दरबार लगा हुआ है, आकर कहता हैकि अजमेर से भाट आया है। और भाटजी दियाजी की कचहरी में जाकर दुआ सलाम करते हैं। और कहते हैं मैं आपके ननीहाल अजमेर से आया हूं और साथ में राजाजी के कुंवर भी हमारे साथ शिकार खैलने के वास्ते आये हैं। गांव के बाहर टिमक्या तालाब पर बिराज रहे हैं और आपको याद किया है और आपको साथ लेकर आने को कहा हैं। सावर के जोधा दिया जी के साथ शिकार खैलने की इच्छा कुंवर जी ने की है। छोछू भाट दियाजी के नजदीक जाकर कहते हैं कि आप चालो कुंवर सा के पास, दो चार गांव और आपकी जागीर में बढ़ा देगें। दरबार में बैठे कालूमीर ने कहा कि दियाजी ये तो मुझे बगड़ावतों का भाट लगता है। यह सुनकर दियाजी भाला उठाकर छोछू को कहते है क्यों रे भाट तू बगड़ावतों का भाट है क्या ? भाट बोलता है कि मैं झूठ बोलूं तोइस जीव की सोगन्ध, मैं अजमेर के राजा जी, जो आपके मामा जी हैं, उनका भाट हूं। भाट के झूट बोलते ही एक तीतर मर जाता है। आप दो-चार गांव अपनी जागीर में बढ़वाना चाहो तो जल्दी चलो, कुंवर सा आपका इन्तजार करे रहे हैं। चालो दियाजी बुंली घोड़ी पर सवार होकर चालो सुवर का शिकार करने। दियाजी कहते हैं कि भाट जी बुंली घोड़ी पर तो मैं नहीं बैठूं। वो मनुष्य को तो अपने पास ही नहीं आने देती है। बांस के धकेले तो खल (खाना) खाती है और नली से

पानी पीती है। और १२ मण की जंजीर उसके आगे पीछे के पांवों में और १२ मण की जंजीर उसके गले में बंधी हुई हैऔर ग्यारह वर्षो से सूरज के दर्शन तक नहीं किये, बुरां (गुफा) में बंधी पड़ी है, दियाजी कहते हैं। भाट बुंली घोड़ी के तो नजदीक जाना ही मुश्किल है, सवारी कैसे करें ? भाट कहता है मैं सवाई भोज कीघोड़ी के बारे में जानता हूं। उसको थोड़ी दारु पिलानी पड़ेगी और उसको समझाने का काम मेरा। दियाजी को शक होता है। भाट की और भाला उठाकर कहते है कि भाट तू बगड़ावतों का भाट तो नहीं। भाट सोगन्ध खाकर कहता है सरकार मैं झूठ बोलूं तो इस जीव की सोगन्ध और दूसरा तीतर मर जाता है। दियाजी को विश्वास हो जाता है कि भाट तो अजमेर का ही है और भाट को कहते हैं कि जाओ और बुंली घोड़ी को सवारी के लिये तैयार करो। देखे कर पाते हो कि नहीं। छोछू भाट दारु की मश्क लेकर वहां आ जाता है जहां सवाई भोज की बुंली घोड़ी बंधीं है और घोड़ी के साथ वार्ता करता जाता है और उसे मश्क से दारु डालता रहता है फिर उसे वीणा बजाकर खुश करता है। घोड़ी छोछू भाट को पहचान जाती है। भाट कहता है की है माताजी (बुंली घोड़ी देवी का अवतार होती है।) आप को थोड़ी देर के वास्ते दियाजी को अपनी पीठ पर बैठाना पड़ेगा और बाद में गांव के बाहर आते ही हमआप को छुड़ा कर गोठां (चौसला खैड़ा) ले जायेगें। घोड़ी पहले तो मना करती है कि मैंने अपनी पीठ पर सवाई भोज को बिठाया था अब उनके दुश्मनों को नहीं बिठा सकती फिर भाट के समझाने से घोड़ी मान जाती है और घोड़ी की जंजीरे खोलकर और उसका श्रृंगार कर भाट दियाजी की कचहरी के बाहर लेकर आ जाता है। घोड़ी को देखकर फिर दियाजी को शक होता है कि ये

घोड़ी किसी कोअपने पास तक नहीं आने देती है और ये भाट कैसे खोल कर ले आया। दियाजी भाट के ऊपर अपना भाला उठाकर कहते हैं कि भाट तूं कहीं बगड़ावतों का भाट तो नहीं है ? भाट कमर में बंधे तीतर पर हाथ लगाकर सोगन्ध खाता है कि मैं झूठ बोलूं तो इस जीव की सोगन्ध और तीसरा तीतर मर जाता है। दियाजी को विश्वास हो जाताहै कि झूठ बोलता तो अभी ये भाट यहीं मर जाता। और दियाजी बुंली घोड़ी पर सवार होकर पहले अपने महलों में आते हैं और रानियों से (दियाजी के चार रानियां होती है।) कहते हैं कि मैं अजमेर से पधारे कुंवर के साथ शिकार खैलने जा रहा हूं। दियाजी जैसे ही रवाना होने के लिये तैयार होते हैं अपशगुन होने लग जाते है और रानियां उन्हें जाने के लिये मना करती है कि धणीजी आप नहीं जाओ शगुन अच्छे नहीं है। और दियाजी वापस घोड़े से नीचे उतर जाते हैं। भाट देखता हैं कि बड़ी मुश्किल से तो चलने को तैयार हुए और ये फिर रुक गये।भाट दियाजी से कहते हैं सरकार कुंवर सा आपका इन्तजार कर रहे हैं। आप चलो आपकी जागीरी में दो-चार गांव बढ़ा देगें। शगुन वैसे ही अच्छे हो जायेगें। और दियाजी घोड़े पर चढ़कर वापस चलने लगते हैं। रानियां फिर से दासियों के हाथ कहलवाती है कि धणी जी अभी मत जाओ शगुन अच्छे नहीं है। आज खाली घड़ा पनिहारियांमिली और काला वलदा घोड़ा सामने से आ रहा है। शगुन खराब हो रहे हैं। भाट कहता है दियाजी बुरा नहीं मानो तो एक बात कहूं, सरकार मेरे भी दो औरतें हैं और यदि मैं कहीं जाता हूं तो औरतें जाने के लिये मना करती हैं तो मैं तो उनको पीट देता हुं। शगुन अच्छे हो जाते है। अभी आया था तब भी ऐसा ही हुआ और मैं तो पीट कर आया शगुन वैसे

हीअच्छे हो गये। दियाजी भाट के बहलावे में आ जाते हैं और महलों में जाकर घोड़ी के ताजणे से अपनी रानियों को पीटते हैं। रानियां रास्ता छोड़ देती हैं। दियाजी बुंली घोड़ी पर सवार होकर चल पड़ते हैं। और भाट से कहते हैं भाट कहीं तूं झूठ तो नहीं बोल रहा है, कहीं तू बगड़ावतों का भाट तो नहीं भाट जल्दी से बोलता है सरकार झूठ बोलूं तो इस जीव की सोगन्ध और चौथा तीतर भी मर जाता है। और भाट सोचता है कि यदि अब झूठ बोलना पड़ातो मैं तो मर ही जाउंगा।

बगडावत भारत कथा -33

भाट दियाजी से कहता है सरकार आप बार-बारमुझे सोगन्ध खाने को कहते हैं, मैं कोई पत्थर थोड़ी हूं, मैं भी इन्सान हूं। अब में सोगन्ध नहीं खाऊंगा इस तरह छोछू भाट दियाजी को पटाकर गांव के बाहर टिमक्या तालाब पर ले आता है और वहां देवनारायण सामने आ जाते हैं। देवनारायण को देखकर दियाजी के तो होंश उड़ जाते हैं और भाट से कहते हैं कि भाट तूने तो मेरे साथ धोखा किया है। भाट अपनी कमर में बंधे तीतर निकालता है, और चारों तीतर जो मर चुके होते हैं उन्हें दिखाता है।देवनारायण दियाजी के सामने आकर अपने भाले से दियाजी के मुंह पर प्रहार करते है जिससे दियाजी के दांत टूट जाते हैं और घोड़ी से गिर पड़ते हैं। वहां देवनारायण दियाजी से बुंली घोड़ी ले लेते हैं और दियाजी से कहते हैं कि मैं तुझे अभी नहीं मारूंगा, तुझे तो मैं रातीकोट की लड़ाई में मारूंगा। जा

अभी तुझे छोड़ता हूं। देवनारायण और छोछू भाटबुंली घोड़ी को लेकर अपने गांव की ओर प्रस्थान करते हैं। दियाजी का बेटा उत्तम कंवर शिकार खेलने गया होता है। जब शिकार खेलकर वापस लौटता है तो महलों में आकर उसे पता चलता है कि पिताजी बुंली घोड़ी को लेकर भाट के साथ टिमक्या तालाब की ओर गये हैं। कहीं दियाजी के साथ धोखा न हो जायें इसलिए उत्तम कंवर अपने घोड़े पर सवार होकर तालाब की ओर आते हैं। उसे अपने पिताजी मिलते हैं और सारी बात बताते हैं उत्तम कंवर देवनारायण का पीछा करता है। उत्तम कंवरसांखली घाटी पर आकर देवनारायण का रास्ता रोक लेता है और दोनों में युद्ध होता है और इस युद्ध में उत्तम कंवर मारा जाता है। देवनारायण और भाट जी बुंलीघोड़ी को लेकर खेड़ा चौसला में आते हैं। साडू माता को खबर होती है, साडू माता बुंली घोड़ी की आरती करती है और पीपलदे देवनारायण की आरती करती है। जब देवनारायण बुंली घोड़ी को कैद से छुड़ा लाते हैं तब साडू माता उन्हें राज का मालिक बना देती है लेकिन न्याय करने का अधिकार मेहन्दूजी को ही देती है। एक बार खेड़ा चौसला में चारे की कमी हो गई।तब देवनारायण का नीलागर घोड़ा चांपानेरी के पटेल रायमल के खेतों में घुस कर घास खा गया। पटेल ने वहीं नीलागर घोड़े को कैद कर बांध लिया। जब देवनारायण को इस बारे में पता चला तो उन्होंने पटेल के यहां जाकर अपने घोड़े को छुड़ाया और फिर रायमल पटेल को कैद कर अपने दरबार में बुलवाया। रायमल की गलतीकी सजा भांगी जी ने सुनाई कि पटेल को नीलागर घोड़े के पैरों में गुड़बेल के साथ बांध दो फिर जैसे घोड़े को ठोकर लगेगी पटेल भी साथ-साथ इधर से उधर गिरताफिरेगा।

बगडावत भारत कथा -34

एक दिन देवनारायण भाट जी से कहते हैं बाबा भाटजी मेहन्दू जी आ गये, मदनाजी आगये, भांगीजी आ गये अब बचे भूणाजी। अब उनको लाने की तैयारी करो। और कल सुबह ही रवाना हो जाओ।भाट देवनारायण से कहता हैकि सरकार वहां दरबार में कोई मुझे पहचान लेगा तो मुझे मार डालेगा, मैं तो नहीं जाता देवनारायण भाट की काया ही बदल देते हैं और उसे २५ साल का जवान बना देते हैं। और कहते हैं कि यदि तुझे जन्म देने वाली तेरी मां तुझे पहचान जायेगी तो वहां भी तुझे कोई पहचान लेगा और यदि तेरी मां तुझे नहीं पहचान सकी तो तुझे वहां भी कोई नहीं पहचान सकता। भाट सबसे पहले अपनी मां के पास जाता है। वो उसे नहीं पहचाती है, तो भाट को विश्वास हो जाता है कि अब मुझे डर नहीं है। छोछू भाटमाता साडू के पास आता है और जाने की इजाजत लेता है। साडू माता छोछूभाट को भूणाजी को देने के लिए संदेश लिखकर देती है। देवनारायण और मेहन्दू जी भी अपनी ओर से अलग-अलग पत्र लिखकर देते हैं। माता साडू पातु कलाली के नाम भी पत्र लिखकर देती है क्योंकि पातु कलालीको सवाई भोज ने बहन बनाया था। लिखती है ननद बाईसा भाट जी को भूणा जी से मिलवा देना। भाट जी को जाते समय देवनारायण कहते है जब भी तेरे पर विपदा आये तू मुझेयाद कर लेना मैं तेरी मदद कर दूंगा। अब छोछू भाट गोठां से राण के रास्ते चल पड़ता है। छोछू भाट

२५ साल का जवान लगता है। कोई उसे पहचान भी नहीं सकता है। छोछू भाट राण में आते समय रास्ते में आम्बासर की बावड़ी पर आकर रुकते है। बावड़ी पर बैठ जाते हैं और वहीं अपनी वीणा से सुर निकालने लगते हैं। वीणा की आवाज सुनकर वहां पानी भरने आने वाली पनीहारिने मुग्ध हो जाती है। वहां आने वाली नेनोली कुम्हारी की दासियां सवाई भोज के गीत गाते हुए भाट को पहचान लेती हैं। उन्हें पता चल जाता है कि ये तो बगड़ावतों का भाट है। नेनोली कुम्हारी की दासियां जाकर बताती है कि बाईसा आज तो बगड़ावतों का भाट आया हुआ है और वो सीधा यहीं आ रहा है। भाट सबसे पहले राण में आते ही नेनोली कुम्हारी के यहां आता है। नेनोली कुम्हारी परदेसियों के रात को ठहरने व खाने-पीने की व्यवस्था भी करती थी।। नेनोली उसे वहां ठहराने के लिये मना कर देती है और कहती है कि वो तो बगड़ावतों को जानती ही नहीं है और भाट को वहां से भगा देती है, और अपना दरवाजा बन्द कर लेती है। और भाट के पीछे अपनी दासियों को भेजकर कहती है कि भाट का ध्यान रखना ये कहां जाता है और क्या करता है, यह सब देखना ? वहां से भाट पातु कलाली से मिलने जाता है। पातु कलालीके महल के बाहर आकर भाट अपनी मोहिनी वीणा बजाने बैठ जाता है। पातु सोचती है बगड़वतों को तो मरे ११ वर्ष हो गये है लेकिन ये तो छोछू भाट की मोहनी वीणा की ही आवाज है। पातु भाट जी को अपने महलों में बुलवाती है। भाट पातु को आकर नमस्कार करता है और माता साडू का लिखा पत्र देता है। पातु पत्र पढ़कर खुश होती है। और भाट को भूणा जी से मिलाने सेपहले उन्हें भोजन करने का आग्रह करती है और कहती है कि खाण्डेराव (भूणाजी) तो शिकार करने

गये हुए हैं, शाम तक आयेगें। तब तक खाना खाकर आराम करो। शाम को उठकर उड़दू के बाजार में जाकर उनसे मिल लेना। भाटजी खाना खाकर सो जाते हैं। शाम को पातु भाट जी को उठाती है। भाटजी हाथ मुंह धोकर तैयार हो जाते हैं और पातु से पूछते हैं कि मैं भूणाजी को कैसे पहचानूंगा,कोई निशानी हो तो बताओ। पातुबताती है कि बोर घोड़ी पर बैठकर सैर-सपाटा करने जाते है। शक्ल हू-बहू बाहरावत जैसी है और चाल भी अपने बाप जैसी ही है और देखने में सबसे अलग दिखते हैं। भाट उड़दू के बाजार में आकर आसपास की सारी धूल-रेत इकट्ठी कर अपने पास ढेरी लगा लेते हैं और अपनी ढाल से धूल उफणने लग जाते हैं। सारे बाजार में धूल ही धूल उड़ने लगती है। सबसे पहले नीम देवजी की सवारी आती है और नीम देवजी देखते हैं कि एक आदमी अच्छे सफेद कपड़े पहने धूल को अपनी ढाल में लेकर डोल रहा है। नीम देवजी आकर उससे पूछते है कि भाई धूलिया, तू कौन है, और क्या कर रहा है ? भाट जवाब देता है महाराज परदेशी हूं। खर्चा पानी के पैसे खतम हो गये, अमल पानीके पैसे भी नहीं है। मुझे पता चला की ११ साल पहले बगड़ावत अपने घोड़ो के गले में कच्चे धागे में सोने की मोहरे पिरो कर बाजार से निकलते थे। कहते हैं कि जब उनके घोड़े दौड़ते थे तो कुछ मोहरें रास्ते में गिर जाती थी, वो शायद इस धूल में मिल जाये तो खर्चा पानी का जुगाड़ हो जाये। नीम देवजी भाट की बात सुनकर बिगड़ जाते हैं कहते हैं बगड़वतों को मरे ११ बरस हो गये हैं। अब तुझे मोहरें कहां से मिलेगी। भाट कहता है सरकार धूल में मोहरें मिल जायेगी। नीम देवजी कहते है कि मोहरें नहीं मिली तो मैं तेरे को यही मार डालूंगा। भाट ने सोचा कि कह तो दिया

अब तो देव महाराज ही रक्षा करेगें। देवनारायण का नाम लेकर ढाल में धूल भरकर धीरे-धीरे नीचे गिराने लगा। देवनारायण समझ जाते हैं कि भाट याद कर रहा है। वो भाट की ढाल में पांच मोहरें भैरुजी के हांथों रखवा देते हैं। भाट की ढाल में से धूल के साथ-साथ मोहरें गिरती है। भाट मोहरे देखकर नीम देवजी से कहता है ये देखो। नीम देवजी मोहरों को देखकर भाट से कहते है कि तेरा अमल पानी आज मेरी ओर से है, बोल कितनी खायेगा? भाट कहता है, आप क्या कराओगे मेरा अमल पानी ? नीम देवजी कहते है बोल तो सही, अभी व्यवस्था करवाता हूं। भाट बताता है, सवा मण अमल अढाई मण भांग और अढाई मण मुगंड़ा और सवामण मावा करूं हूं।नीम देवजी कहते हैं कि भाट इतनी अमल खाकर कहीं मर गया तो। भाट कहता है महाराज ये तो मेरा एक वक्त का अमल है।इतनी तो मैं सुबह शाम रोज खाता हूं।

बगडावत भारत कथा -35

नीम देवजी भाट के कहे अनुसार सारा सामान मंगवाते हैं और ढेर लगा देते हैं। और भाट से कहते हैं देख भाट अगर तू ये सब नही खा सका तो तुझे यहीं, इसी समय जमीन में गड़वा दूंगा। भाट कहता है सरकार खुले में तो मैं नहीं खा सकता इतने सारे लोग देख रहे हैं। मेरे को नजर लग जाये और कहीं मैं मर गया तो इसलिए पहले पर्दा कराओ । नीमदेवजी भाट के चारों तरफ कनात लगवा देते है। भाट अन्दर बैठकर भगवान

देवनारायण को याद करता है।देवनारायण अपने ६४ जोगणियों और ५२ भैरुओं को भाट की रक्षा के लिये भेजते हैं। भाट देखकर कहता है तुम सब आ गये हो तो ये सब अमल भांग भूंगड़ा चट कर जाओ। जोगणियां और भैरु सारी अमल और भांग भूंगड़ा सब साफ कर जाते हैं और फिर गायब हो जाते हैं। थोड़ी देर बाद भाट कनात फाड़कर बाहर निकलता है और जोर की उबासी लेता है और कहता है महाराज अभी थोड़ी सी कसर रह गयी है। नीम देवजी कनात हटवाकर देखते हैं कि भाट तो सब माल साफ कर गया है और साथ घर चलने के लिये कह रहा है कि बाकि कसर आपके घर में जाकर पूरी करूंगा। यह सोचकर कि यह तो पीछे पड़ जाएगा, नीम देवजी वहां से जल्दी से रवाना हो जाते हैं। नीम देवजी की सवारी जाने के बाद भूणाजी की सवारी आ जाती है। भाट वापस धूल लेकर डोलने लग जाता है। खाण्डेराव धूलीया देखकर सवाल करते हैं कि भाई ये क्या कर रहा है, इस धूल में तू क्या ढूंढ रहा है, क्या खो गया है तेरा ? भाट कहता है सरकार मेरे २४ लाल और १ हीराखो गया है, उसे ढूंढ रहा हूं। भूणाजी कहते हैं कि धूल में हीरा कहीं मिलता है क्या ? और सोचते है कि इसका कोई टाबर (बालक) खो गया है जिसे ये हीरा कह रहा है। भूणाजी के साथ दियाजी और कालूमीर पठान होते है वो उन्हें समझाते हैं कि ये बगड़ावतों का भाट है, आप कहां इससे बातें कर रहे हो,आप तो चले यहां से। भूणाजी कहते है कि ये बातें अच्छी कर रहा है और फिर भाट से बातों में लग जाते हैं। भाट जब सारी बात साफ-साफ कहता है कि ये जो आप के साथ राव उमराव है इन्होंने रण में आपके बाप, काका, दादा कोमरवा दिया। इतनी बात सुनते ही राव उमराव सब भाग कर रावजी

के पास आकर कहते हैं कि भूणाजी को बगड़ावतों के भाट ने बाजार में रोक लिया है और पोथी पत्री सुना रहा है। अब कुंवर खाण्डेराव अपने नहीं रहे, दुश्मनों के हो गये हैं। रावजी भाट को मरवाने के लिये अपने हाथी को दारु पिलाकर छोड़ देते हैं। इधर भूणाजी को जब विस्तार से सारी बात पता चल जाता है कि मेरे बाबा बहरावत जी और काका सवाई भोज को रावजी ने मरवाया है तो वो भाट से और भी वार्तालाप करते हैं। थोड़ी देर में रावजी का हाथी बाजार में आता है और भाट को मारने की कोशिश करता है। वहां भूणाजी अपनी तलवार से हाथी की गर्दन काट देते हैं और भाट की रक्षा करते हैं। रावजी को पता चलता है कि हाथी मारा गया है। अगर भूणाजी गुस्से में यहां आ गये तो सब सफाया कर देगें। इसलिए भूणाजी को वहीं से पुष्कर जाने का आदेश करा देते है। भूणाजी भाट से कहते है, भाटजी चलो पुष्कर मेला देखने चलते हैं, बाकि बात वहीं करेगें। पुष्कर मेले मेंजाने से पहले भाट भूणाजी को अपने साथ लेकर पातु कलाली के यहां आता है और देवनारायण का पत्र, मेहन्दू जी का पत्र और साडू माता का पत्र देता हैं। पत्र पढ़कर भूणाजी की आंखों में आंसू आ जाते हैं। और पातु कलाली भी भूणाजी को बगड़ावतों की सारी बात बताती है। पातू कलाली के यहां से भूणाजी भाट को लेकर सीधे पुष्कर मेले में चले जाते हैं। रावजी भूणाजी के साथ दियाजी, टोड़ा का सोलंकी, बन्ना चारण और बहुत सी सेना को भी पुष्कर मेले में भेजते हैं। भूणाजी पुष्कर में आकर गऊ घाट पर ठहरते हैं। वहां वो तराजू में अपने वजन के बराबर सोने की मोहरे तोलकर ब्राह्मणों को दानकरते हैं और ब्राह्मणों को भोजन भी करवाते हैं। गऊ घाट पर छोछू भाट भूणाजी से मेला देखने की इजाजत

लेकर मेला देखने निकल जाते हैं। वहां उन्हें ब्रह्माजी के मन्दिर में जाते समय पीलोदा का चारण (भाट) मिल जाता है। उसके साथ पीलोदा के कुम्हार भी होते हैं। यहां छोछू भाट पीलोदा के चारण को भला बुरा कहकर भड़काता है कि तुम्हारे मालिकपुष्कर मेले में इसलिये नहीं आये की वो भूणाजी से डर गये हैं। पीलोदा का चारण वहां से सीधा पीलोदा आता है और दरबार में आकर सारी बातें बताता है और चारण पीलोदा ठाकुर को युद्ध के लिये भड़काता है। पीलोदा ठाकुर कुमारो जोध सिंह और जग सिंह को भूणाजी से युद्ध करने के लिये पुष्कर भेज देते हैं। उनके साथ बगड़ावतों के जय मंगला हाथी, गज मंगला हाथी और कश्मीरी तम्बू और उनकी लूटी हुई चीजें भी होती है। पुष्कर में जोध सिंह और जग सिंह अपनी फौजों के साथ युद्ध के लिए डट जाते हैं।

बगडावत भारत कथा -36

उधर छोछू भाट गऊ घाट पर आकर भूणाजी को भड़काता है और कहता है महाराज पीलोदा के कुमार आपसे लड़ने के लिये आये हैं। आपके बाप-दादा के हाथी भी साथ लाये हैं। भूणाजी कहते हैं कि भाट जी पुष्कर तीर्थ है कोई लड़ाई का मैदान नहीं है। यहां बहुत से साधु संत महात्मा आये हुए हैं। यहां युद्ध नहीं कर सकते हैं। तो भाट कहता है कि भूणाजी अपने दोनों हाथियों को तो इन बैरियों से छुड़ा लेते हैं। छोछू भाट कहता है कि भूणाजी दियाजी, मीरजी और टोड़ा का सोलंकी को भेजकर जग सिंह और

जोध सिंह को समझाकर हमारे हाथी छुड़वा लीजिए। अगर वो मना करें तो युद्ध करना पड़ेगा। दियाजी,मीर और सोलंकी जग सिंह, जोधसिंह के पास जाकर समझाते हैं कि भूणाजी को दोनों हाथी और बगड़ावतों का जो भी सामान आप लूटकर ले गए थे वो सोंप दो नहीं तो जुल्म हो जायेगा। जोध सिंह जवाब देते हैं कि भूणाजी में दम हो तो हमसे युद्ध करके छुड़ा ले जाये। नहीं तो बहारावत की बोर घोड़ी भी हमारे को सोंप दे। ये बात सुन कर दियाजी वापस आकर भूणाजी को सारी बात बताते हैं। यह सब सुनकर भूणाजी अपने घोड़े पर सवार होकर युद्ध का डंका बजाने का हुक्म देते हैं और जोध सिंह व जग सिहं पर चड़ाई कर देते हैं। घमासान युद्ध होता है। वहां पिलोदा के राजकुमार जोध सिंह और जग सिहं मारे जाते हैं। पीलोदा की बाकि बची सेना वहां से वापस पिलोदा भाग जाती है। भूणाजी पिलोदा जाकर जय मंगला-गज मंगला हाथी और बगड़ावतों से लूटा हुआ सामान हांसिल कर राण वापस आते हैं। अब भूणाजी छोछू भाट को सौ घुड़ सवारों के साथ जय मंगला हाथी, गज मंगला हाथी और सारा सामान इकट्ठा कर गोठां वापस भिजवादेते हैं और नारायण के नाम पत्र लिखकर भेजते हैं। जब जय मंगला हाथी गोठां पहुंचता हैं तब सा माता उसकी आरती उतारती है क्योंकि ११ वर्षो बाद बगड़ावतों का हाथी वापस आयाहै। छोछू भाटदेवनारायण के पास आकर भूणाजी का लिखा पत्र देता है और सारी बात बताता है। देवनारायण पत्र पढ़ते है कि नारायण पहले आप पीलोदा के ऊपर चढ़ाई करो। यह गढ़ फतेह करने के बाद राण पर चढ़ाई करना आसान हो जायेगा। तब तक मैं आपके पास आ जामुझे अभी वहां राण का थोड़ा हिसाब बराबर करना है, वो पूरा करके मैं लौट आ

देवनारायण भूणाजी का संदेश पढकर छोछू भाट से पूछते हैं कि बाबा भाट ये पीलोदा कहां है और वहां के ठाकुर कौन है। छोछू भाट कहता है दरबार पीलोदा के राजा रतन सिंह बड़े वीर और बहादुर है। वो ही अपने हाथी गज मंगला और जय मंगला लूट कर ले गयेथे। पीलोदा राण का सबसे मजबूत गढ़ है। इसको फतेह करना जरुरी है। देवनारायण काहुकम हुआ और मेहन्दूजी, मदन सिंह जी, भांगीजी को बुलाया और पीलोदा पर चढ़ाई करने की बात कही और चारों भाई अपने-अपनेघोड़े पर सवार होकर अपनी सेना लेकर निकल पड़े। देवनारायण को ध्यान आया की हम चारों भाई लड़ने चले गये पीछे से गोठां का रखवाला कौन है ? अपने घर बार गांव की रखवाली करने के लिये भांगी जी को छोड़ कर जाते हैं। भांगीजी कहते है कि मेरे बाप का बैर लेने तो मैं भी चलूंगा। लेकिन देवनारायण के समझाने पर भांगीजी मान जाते है और वहीं रुक जाते हैं।

बगडावत भारत कथा -37

रास्तें में पीलोदा गांव के बाहर ग्वाले गायें लेकर आ रहे थे उन्हें भाट ने पूछा कि भाई ग्वालों कहां के हो ? ग्वालों ने कहा पीलोदा के। तुम्हारे राजाजी अभी इस समय क्या कर रहे हैं ? ग्वाल बोले तलवारे बो रहे हैं और देव मेहन्दू को मारकर उनकी गायें हमें दे देगें। वो भी हम चरायेगें। ये बात सुनकर देवनारायण, मदनोजी और मेहन्दूजी ने ग्वालों को मारना शुरु किया। कुछ तो मारे गये और बाकि जो बचे वहां से भाग गये। ग्वाले

सीधे दरबार में जाकर राजा रतन सिंह से जाकर दुहाई करते हैं कि महाराज देवनारायण ने हमसे सारी गायें छीन ली और उसके भाई ने हमारे भाई ग्वालों को मार डाला। हम भाग कर आपके पास आये हैं। पीलोदा के राजा रतन सिंह जी अपनी सेना को तैयार कर सत्तर हजार फौज लेकर युद्ध के लिये तैयार हो जाते हैं। और देवनारायण के सामने आकर कहते है कि ए बालक तू यहां से वापस चला जा। तेरी अभी युद्ध करने की उम्र नहीं है। तू हमसे क्या लड़ाई करेगा ? हमने तेरे बाप दादा को रण में मारा है, जो बड़े वीर योद्धा थे। ये बात सुनकर देवनारायण कहते है कि रे कुम्हार तुम राजपूत कब से हो गये हो ? काम तो तुम्हार मिट्टी का हैऔर तलवारो की बातें करते हो। कुम्हारोंका काम करो और हार मान लो। रतन सिंह अपनेको कुम्हार कहते ही उखड़ जाते हैं और हमला शुरु कर देते हैं। देवनारायण मेहन्दूजी और मदन सिहं जी को कहते हैं जाओ चढ़ाई करो। महन्दूजी लड़ाई में कूद पड़ते हैं और पीलोदा के चारों ओर आग लगा देते हैं। ये सब देख रतन सिंह दुगने जोश से देवनारायण पर टूट पड़ते हैं। देवनारायण रतन सिंह की सारी सेना का सफाया कर देते हैं और रतन सिंह को कुम्हार बना देते हैं। उसे मारते नहीं है और उसे मिट्टी के घड़े और घोड़े की जगह एक गधा दे देते हैं, और मटके बनाने का एक चाक भी देते हैं और कहते हैं कि तेरा जो पुस्तेनी काम है तू वहीं करेगा आज से। जब देवनारायण पीलोदा जीतकर आते हैं तो पीपलदे जी उनकी आरती उतारती है और माता साडू बाकी सब भाईयों की आरती उतारती हैं। माता साडू छत पर चढ़कर देखती है,पीलोदा की ओर धुंआ ही धुंआ दिखाई देता है। पीलोदा जल कर राख हो जाता है। पीलोदा से उठता हुआ धुंआ राण

के रावजी को भी दिखाई देता है, रावजी भूणाजी से पूछते हैं कि भूणा पिलोदा में इतना धुंआ क्यों हो रहा है ? भूणाजी समझ जाते हैं जरुर देवनारायण ने पीलोदा पर चढ़ाईकर दी है। लेकिन रावजी से कहते हैं वहां सत्तर हजार राणियों का ब्याह है, तो खाना पक रहा होगा। रावजी कहते हैं हमारे बराबर के वहां के सरदार है। हमें तो न्यौता नहीं आया। भूणाजी कहते हैं दरबार मुझे तो तीन दिन पहले ही न्यौता आ गया है। आपके पास भी आ रहा होगा। भूणाजी के इतना कहते ही सांडीवान संदेश लेकर आ जाता है। रावजी सोचते हैं कि न्यौता आया है लेकिन सांडीवान कहता है पीलोदा खत्म हो गया। सब कुछ जलकर राख हो गया है।देव, मेहन्दू ने पीलोदा पर चढ़ाई कर दी। भांगीजी ने पीलोदा को आग लगा दी है। रावजी देखकर सोचते हैं भूणाजी को सब पता था इसने हमें बताया नहीं और वो भूणाजी से कहते हैं बेटा भूणा इसका न्याय अब तेरे को ही करना है। भूणाजी कहते है बाबासा मैं तो इस भाले की अणी सेन्याय करूंगा, आ जाओ सामने। इतनी बात सुनकर रावजी घबरा जाते हैं और महलों की ओर भाग जाते हैं।

बगडावत भारत कथा -38

महलों से रानी सांखली भूणाजी को पत्र लिखकर बुलवाती है। भूणाजी रानी जी के पास जाते हैं और पूछते है माँ जी कैसे याद किया ? माँजी कहती है कि दोनों बाप बेटों में क्या लड़ाई हो रही है ? भूणाजी सारी बात बताते

हैं कि पिलोदा पर देव, मेहन्दू ने चढ़ाई कर दी है। रानी ये बात सुनकर भूणाजी से कहती है बेटा भोजन कर। माताजी भूणाजी को भोजन कराती है और पंखा झुलाती है और कहती है बेटा यदि तू मेरे को देव, मेहन्दू का सिर काटकर ला देवे तो मैं तेरा दो-दो ब्याव करा रानी पद्मनी से तेरी शादी करा और सवा कोस पैदल चलकर सामने आकर तेरी आरती उतारूं।यहां का राजपाट सब तुझे सोंप दूं। रानी सांखली कहती है कि सेना साथ में लेकर जाओ और देव, मेहन्दू के सिर काट कर लाओ। भूणाजी अच्छे जवानों और अच्छे घोड़ो को छांटकर १७ हजार की फौज तैयार करके महल में आकर रानी जी से कहते हैं कि मुझे दरबार की मोहर लगाकर कागज लिखकर दो कि मेरे सारे गुनाह माफ हो तो मैं जाता हूं। रानी रावजी को बुलाकर कहती है कि भूणा देव, मेहन्दू का सिर काटने जा रहा है, इसे दरबार की मोहर लगाकर पत्र लिखकर दे कि इसके सारे गुनाह माफ है। रावजी कागज पर लिखकर भूणाजी के हवाले कर देते हैं। भूणाजी सेना लेकर निकलते हैं और सोचते हैं कि रानी ने मेरे भाईयों के सिर मांगे हैं क्यों न रानी को उसी के भाइयों के सिर काटकर दे दूं ?अपनी उंगलीकाटी उसका बैर भी निकल जायेगा। सातल-पातल ने जब मेरी उंगली काटी थी तब कहा था कि बड़ा होकर अगर अंगुली का बैर लेसके तो ले लेना। भूणाजी की सवारी मारवाड़ में चान्दारुण की ओर चल पड़ती है। चान्दारुण मारवाड़ की ओर जाते समय रास्ते में ग्वालें गायें चरा रहे होतेहैं। भूणाजी ग्वालों से पूछते हैं कि ये गायें किसकी है ? एक ग्वाला कहता है चान्दारुण के राजा सातल और पातल सांखलाकी हैं। भूणाजी कहते हैं मैं उनका भाणजा हूं और वो मेरे मामाजी है। भूणाजी पत्र लिखकर मामाजी को

भेजते है, मैं भूणा आपने जो मेरी उगली काटी उसका बैर लेने आया हूं। मिलने के लिये सामने आ जाओ । ग्वाले पत्र ले जाकर मामाजी को दरबार में सोपतें हैं और कहते हैं कि भूणाजी चान्दारुण गांव के बाहर बीहड़ में मामाजी का इन्तजार कर रहे हैं। मामा सातल-पातल पत्र पढ़ते हैं और दोनों भाई सलाह कर अपने हथियार साथ लेकर भूणा से मिलने आते हैं। भूणा से कहते हैं भाणजे राम-राम। आज तुझे हमारी याद कैसे आई है ? भूणाजी कहते हैं जब मेंढ महीने का था तब आपने मेरी अंगुली काटी थी, उसी का बैर लेने आया हूं। मामा कहते हैं भाणजे रहने दे। तू हमारी बहन का एक ही बेटा है, क्यों लड़ता है ? भूणाजी कहतेहैं कि बिना बैर लिये तो मैं पीछे हटूंगा नहीं । सातल-पातल दोनों भाई मिलकर भूणा पर वार करते हैं मगर भूणाजी उनके वार से हर बार बच जाते हैं और कहते हैं कि मामाजी एक बार मेरे को भी तो वार करने दो। इतना कहते ही अपनी बोर घोड़ी को हाथी के होदे पर चढ़ा देतें हैं और दोनों भाईयों को एक ही वार में खत्म कर देतें हैं। सातल और पातल को मारकर उनके सिर काट कर, उनकी चोटी को पकड़ कर सीधे पुष्कर आते हैं वहां अपने खाण्डे को पानी में धोते हैं और चान्दारुण से लाई गायों को दान कर देते हैं। वहां से राण लौट आते हैं और पत्र लिखकर सांडीवान को आगे भेज देते हैं कि रानी सा आरती लेकर सामने आओ मैं दोनों भाईयों के सिर काट कर लाया हूं। आरती करने सामने पधारों। रानी समाचार पढ़कर बहुत खुश होती है और आरती लेकर भूणाजी के सामने आती है। भूणाजी की आरती करती है। भूणाजी दोनों भाईयों के कटे सिर चोटी से पकड़ कर आरती की थाली में रख देते हैं। रानी सोचती है कि इन बैरियों का मुंह नहीं देखूगीं

और रावजी को कहूंगी के गेंद की जगह देव,मेहन्दू जी के सिर से खेलों। तब उनके मुंह देखूंगीं। रानी दोनों भाईयों के कटे सिर लेकर महल में आती है। उसे एक दासी आकर बताती है रानी जी ये देवऔर मेहन्दू के सिर नहीं है, ये सिर तो आपके भाई सातल और पातल के हैं। ये बात सुनकर रानी दासी को डाटती है और कांच (आईना) मंगवाती है। और कांच के सामने दोनों कटे हुवे सिर रखकर देखती है। जब उसे पता चलता है ये सिर तो मेरे भाई सातलऔर पातल के हैं। तब कोप भवन में जाकर विलाप करती है और भूणाजी को कोसती है कि क्यों मैंने सांप को दूध पिला कर बड़ा किया ? इसने अपने मामा को ही मार दिया, इसको दया नहीं आयी।

बगडावत भारत कथा -39

भूणाजी रानी सांखली के महलों से सीधे बादल महल में जाते हैं वहां बहन तारादे के साथ बैठकर खाना खाते हैं और तारादे को सारी बात बताते हैं। तारादे कहती है भाईसा आप सावधान रहना। आपको मारने की कई कोशिशे हो रही हैं। दादा भाई आप मेरे महल में ही ठहरो। यहां से कहीं भी जाओ तोमुझे बता कर ही बाहर जाओ। इधर रानी सांखली वचन लेती है जब तक भूणा मर नहीं जाये तब तक अन्न जल ग्रहण नहीं करूंगी। रावजी और रानी मिलकर भूणाजी को मारने की साजिश करते हैं। उन्हें पता था कि भूणाजी शिवजी का भक्त है और भोलेनाथ शिवजी की पूजा करने प्रतिदिन मन्दिर जाते हैं। वहां ध्यान करते हैं। उस समय उनके पास शस्त्र

भी नहीं होते हैं। वहीं उन्हें जंजीरों में जकड़ कर कैद किया जाए। रानीजी कीरों को बुलवाती है और उन्हें भूणा को कैद करने पर बहुत धन देने का लालच देती हैं। कीरो का मुखिया कालिया पीर भूणाजी को कैद करने का वचन देता है। राजकुमारी तारादे को इस षडयंत्र का पता चल जाता है। वो भूणाजी को मन्दिर जाने के लिये मना करती है, कहती है दादा भाई आज आप मत जाओ। आपको कीरलोग वहां जंजीरों में जकड़ लेगें। भूणाजी कहते है, बहना भोले नाथ की भक्ति करते मुझे ११ वर्ष हो गये है। आज नहीं जाउंगा तो व्रत खण्डित हो जायेगा।जैसे भोलेनाथ शिवजी को मंजूर होगा वही होगा।उनकी इच्छा के सामने किसी की नहीं चलती है। भूणाजी महादेव जी की सेवा करने मन्दिर में आते हैं। शिवजी की आरती करते हैं और जल चढ़ाते है, बेल पत्र चढ़ाते हैं, भांग, धतुरा चढ़ाते हैं और पूजा पाठ करके शिवजी का ध्यान करने बैठ जाते हैं। जब भूणाजी ध्यान कर रहे होते हैं तब कालीया कीर और उनके साथी भूणाजी को जंजीरों में जकड़ लेते हैं और पींजरे में बंद करके दरबार में लाकर पेश करते हैं। उस समय भी भूणाजी शिवजी के ध्यान में लीन होते हैं। रावजी कीरों से कहते हैं कि इसे चोर बरड़िया में (जहां कातिलाना सजा दी जाती है) ले जाओ। और इसका सिर काटकर इसकी आंखे निकालकर ले आना और इसके सिर को पेड़ पर लटका देना। येबात तारादे को पता चलती है कि भूणाजी को शिव मन्दिर से कीरों ने जंजीरों में जकड़ कर पिंजरे में बंद कर सजा देने के लिये चोर बरड़िया ले गये हैं। तारादे हाथ में कटार और भाला लेकर रावजी के दरबार में पहुंचती है और कहती है कि मेरे भाई को छोड़ दो नहीं तो मैं खुद मारती हूं। उसके बाद राजकुमारी तारादे मर्दाना भेष धारण कर

चोर बरड़िया पहुंच जाती है और भूणाजी को आवाज लगाती है भूणाजी का ध्यान टूटता है तो अपने को जंजीरो में जकड़ा हुआ पाते हैं और तारादे को आते हुए देखते हैं। भूणाजी वहां से तारादे को वापस जाने को कहते हैं लेकिन तारादे उनको छुड़ाये बगैर जाने को तैयार नहीं होती। वहां तारादे देवनारायण भगवान का ध्यान करती है कि नारायण आपके भाई पर विपदा आ पड़ी है। देवनारायण काला गोरा भैरु को भूणाजी कोछुड़ाने भेजते हैं। काला गोरा भैरु भूणाजी की दोनों बाजुओं में समा जाते हैं और भूणा जी जोर लगाकर जंजीर तोड़ देते हैं। ये देख कर कीर वहां से भाग कर झाड़ियों में छिप जाते हैं।तारादे और भूणाजी दोनों आकर गले मिलते हैं और तारादे कहती दादा भाई आप यहीं से अपने भाईयों के पास खेड़ा चौसला चले जाओ। यहां सब आपके दुश्मन हो गये हैं। आपको कभी भी मार सकते हैं। भूणाजी कहते है बहना बिना बाबाजी से विदाई लिये नहीं जा सकता हूं। उनसे आखरी बार मिलकर मैं लौट जाउंगा तारादे के साथ बादल महल में आकर दोनों भाई-बहन साथ भोजन करते हैं। भूणाजी बाजार में जाकर चीर (कपड़ा साड़ी) खरीदकर लाते हैं और अपनी धर्म बहन तारादे को ओढ़ा कर जाने की आज्ञा लेते हैं। वहां दोनों भाई-बहन खूब रोतें हैं। दोनों के कपड़े आंसुओं से भीग जाते हैं। भूणाजी को मारने की एक और साजिश रावजी अपने दरबार में दियाजी, मीरजी और सोलंकी जी के साथ मिलकर करते हैं कि भूणाजी अपने भाईयों के पास जा रहे हैं। इनको छोड़ने तीनो मीर, उमराव साथ जायेगें और रास्ते में मटियानी की बावड़ी पर भूणाजी पर वार करेगें। ये बात तारादे को पता चल जाती है। और तारादे भूणाजी को जाते वक्त सावधान कर देती है कि मटियानी

बावड़ी पर आप सावधान रहना। भूणाजी अपनी बोर घोड़ी पर सवार होकर रानी जी से विदाई लेकर सीधे घोड़े सहित ही रावजी के दरबार में आ जाते हैं और रावजी से कहते हैं बाबासा मैं अपने भाइयों के पास जा रहा हूं। मुझे इजाजत दीजिए। भूणाजी रावजी के यहां से निकलतेहैं और दियाजी और मीरजी और टोड़ा का सोलंकी रावजी के जंवाई भूणाजी को पहुंचाने के लिये साथ जाते हैं। वहां साथ में रावजी का गांगा भाट भी साथ हो जाता है।

बगडावत भारत कथा -40

नियाजी भूणाजी से कहते है कुंवर सा आज हम लोगो के साथ आखरी बार शिकार खेल लीजिए।सुवर का शिकार। भूणाजी कहते हैं कि सरदारों आप की ये इच्छा भी पूरी कर देते हैं। और पूछते हैं कि शिकार खेलने के बाद सारे कहां इकट्ठे होगें। दियाजीकहते है मटियानी बावड़ी पर इकट्ठे होगें। वहां पानी पीयेगें और वहां से भूणाजी को विदा कर हम वापस लौट आयेगें। चारों जने अलग-अलग शिकार पर निकल जाते हैं। भूणाजी सीधे मटियानी बावड़ी पर पहुंच जाते हैं और बावड़ी में उतर कर अपनी घोड़ी को भी पानी पिलाते हैं और खुद भी पानी पीकर वहां जोर से किलकारी मारते है तो आसपास के परिन्दे इकट्ठे हो जाते हैं। भूणाजी उन सब को

मारकर उनके कान, नाक काट लेते हैं और बावड़ी के बाहर आकर बैठ जाते हैं। वहां थोड़ी देर में तीनों उमराव पहुंच जाते हैं। उनके साथ भाट भी होता है। बावड़ी पर आकर वो भूणाजी से कहते है कुंवर सा आज तो थक गयेशिकार के पीछे दौड़ते दौड़ते। शिकार ही हाथ नहीं लगा। भूणाजी से कहते हैं आओ बावड़ी में से पानी पीलो। भूणाजी कहते हैं मैनें तो पानी पी लिया और घोड़े को भीपिला दिया। अब आप जाकर पी लो। मगर अस्त्र-शस्त्र बाहर ही रख कर जाना बावड़ी मेंनहीं ले जाना। तीनों मीर और उमराव और भाट चारों जने अपने अस्त्र-शस्त्र बाहर ही रख कर बावड़ी में पानी पीने उतरते हैं और पीछे से भूणाजी बावड़ी का दरवाजा बंद कर देते हैं और पास ही खड़े बावड़ी के रखवाले को कहते हैं आसपास खेत में क्या बो रखा है लाकर दो। रखवाला खेत से ककड़ी और तरबूज तोड़कर ढेर लगा देता हैं। भूणाजी बाहरसे बावड़ी में तरबूज और काकड़ी से सभी को जोर जोर से मारते हैं और एक-एक कोबाहरआने के लिये कहते है। सबसे पहले दियाजी की एक मूंछ और एक तरफ की कलम का लेते हैं।और फिर मीर जी का एक कान काट लेते हैं। और सोलंकी के कटार से निशान कर देते हैं और भाट को छोड़ देते हैं और उनके घोड़े घेरकर अपने साथ ले आते हैं। और चारों जनों से कहते हैं कि घोड़ी के काठियां अपने सर पर रख कर पैदल-पैदल जाओ। वहां से चारों जने अपनी-अपनी घोड़ी के काठियां जींण अपने-अपने सिरों पर लादकर राण में लौटते हैं वहां से भूणाजी सीधे अपने १८ हजार घोड़ो और अपने सेना प्रमुख बन्ना चारण के साथ राठोडांकी पाल पर आकर रुकते हैं। वहां आकर देखते हैं कि थोड़ी दूर देवलियों के चबूतरे बने हुए हैं। भूणाजी बन्ना चारणसे पूछते हैं ये क्या बना हुआ है

? चारण कहता है यहां बगड़ावतों का युद्ध हुआ था।ये उनकी सतियां है इसे सतीवाड़ा कहतेहैं। भूणाजी ने पूछा यहां मेरी माताजी की देवलियां भी होगी, इनमें से कौनसी है? चारण कहता है ये तो मुझे पता नहीं है कीआपकी माताजी की देवलियों का कौनसा चबूतरा है। यहां पास ही एक गांव है आसीन्द। वहां के पटेल, सुजा पटेल को जरुर पता होगा। भूणाजी कहते है गांव से सुजा पटेल को बुला कर ले आओ और उनको दो गांव नजराना दे दो। बन्ना चारण सुजा पटेल को बुलाकर लाता है। भूणाजी उनसे पूछते हैं कि उनकी माता सलूण की कौनसी देवलियां है। सुजा पटेल माताजी सलूण बाई की देवली की पहचान कर बताता है। भूणाजी अपनी माताजी के चबूतरे पर जाकर देखते है वहां झाड़-झंखड़ हो रहे हैं। चबूतरा खंडित हो रहा है। वहां सतीवाड़े में भूणाजी सभी देवलियों की सफाई करातेहैं और चबूतरों की मरम्मत करवाते हैं, गंगा जल से स्नान कराते हैं। धूप-दीप करते हैं और अपनी माताजी के चबूतरे पर जाकर उन्हें याद करते है और कहते हैं कि माँजी ११ वर्षो बाद आपके पास आया हूं, मुझे दर्शन दो। भूणाजी के सत और धर्म के कारण भगवान भूणाजी की पुकार सुन लेते हैं और माता सलूण की देवली में प्राण आ जाते हैं और वह भूणाजी से बातें करती हैं। भूणाजी कहते हैं माताजी जब मैं ६ महीने का था तब आपसे बिछुड़ा था आपसे तो मेरा दूध भी बाकि है और मेरे को आशीष भी दो। सलूण की मूर्ति में से एक हाथ बाहर निकलता है। भूणाजी को आशीष देता है और दूध की धार फूट पड़ती है जो सीधी भूणाजी के मुंह में आती हैं। भूणाजी की आंखों से आंसू आ जाते हैं और वह माताजी से सारीबातें करते हैं कि वो कैसे छोटे से बड़े हुए। राण की सारी बातें

अपनी माता को बताते हैं। सलूण माताजी कहती है बेटा अपने बाप और काका को बैर लेना मत भूल जाना और आशिर्वाद देकर वापस लौट जाती है। वहां से भूणाजी वापस आकर अपनी सेना के साथ दड़ावत (गोठां) की ओर प्रस्थान करते हैं। भूणाजी अपने आने की सूचना अपने भाईयों को करवाते हैं। चारों भाई भूणाजी से सामने आकर गले मिलते हैं जैसे ही देवनारायण और भूणाजी गले मिलतेहै, भूणाजी की कटी हुई अंगुली ठीक हो जाती है और देवनारायण के शरीर का लांछन ठीक हो जाता है। देवनारायण को राम का अवतार और भूणाजी को लक्ष्मण का अवतार बताया गया है। इसके बाद भूणाजी खेड़ा चौसला में ही अपना रावड़ा बनाते हैं।

बगडावत भारत कथा -41

पांचो भाई जब एकत्रित हो जाते हैं तो गोठां में भगवान देवनारायण का आसन पाट लगता है, जहां बासक नाग आकर सेवा में खड़ेहोते हैं। आस-पास बिच्छु होते। अजगर बेसवा में होता है। काला गोरा भैरु अपने वाहनों के साथ सेवा में खड़े होते हैं। अब भगवान देवनारायण छोछू भाट से पूछते हैं कि अपना सभी लूटा हुआ सामान तो इकट्ठा कर लिया और दूसरे सभी बैर भी ले लिए। अब राण के राजा रावजी से बैर लेना शेष रहा है जो कैसे लिया जाए ? छोछूभाट ने टीटोड़ियां समन्द उलीचियो भाई परिवारों के पाल वाला दोहा सुना कर पांचो भाइयों को समझाया कि अगर सभी भाई

एक साथ मिल कर चलें तो रावजी को हराना मुश्किल नहीं होगा। फिर यह तय रहा कि अपनी गायों के द्वारा रावजी के क्षेत्रमें नुक्सान करेगें ताकि वहां के किसानपरेशान होकर रावजी से शिकायत करे और रावजी खुद ही लड़ाई छेड़े। नापा ग्वाल को बुलाते हैं और कहते हैं नापाजी अपनी गायों को गुदलियां तालाब पर लेकर जाओ और अपनी गायों को घेर कर राण के खेतों में चराओं। जब रावजी को समाचार मिलेगा वो लड़ने के लिये खुद ही आ जायेगें। नापाजी कहने लगे पहले हम सभी ग्वालों को बींद बनाओ और गायों का श्रृंगार कराओ तब हम जायेगें। नापाजी की बात सुन देवनारायण साडू माता को कहते हैं माताजी गायों का गहणा कहां रखा है। सब निकालो और गायों को पहनाओं। माता साडू गायों का और ग्वालो का गहना और कपड़ा सब निकाल कर ग्वालों को दे देती हैं। १४४४ ग्वाल और १,८०,००० हजार गायों को सोने कागहना पहनाकर सारे ग्वाल बींद बनकर गायों को लेकर राण के खेतो में जाकर छोड़ देते है, गायें राण के खेतो में चारों ओरउजाड़ कर देती हैं। वहीं गांव के पटेल रायमल पटेल और बीजा पटेल दोनो आकर देखते हैं कि गायों ने सारे खेत उजाड़ दिये हैं। वह दोनों रावजी के पास शिकायत करने के लिये जाते है। दरबार में रावजी और सभी मीर और उमराव बैठे हैं और दोनों पटेल देवनारायण की गायों की शिकायत करते हैं और कहते हैं कि गायों ने सारे खेत उजाड़ दिये हैं और फसल चौपट कर दी है। रावजी दियाजी और कालूमीर को सेना लेकर गायों को घेर कर लाने का हुकम देते हैं। दियाजी और मीरजी सेना लेकर गुदलिया तालाब की ओर चल पड़ते हैं। रास्ते में उन्हें कपूरी धोबन मिलती है। कपूरी धोबन पूछती है की आज सवारी कहां जा रही है

? दियाजी कहते है कि देव की गायों को घेरने जा रहे है और ग्वालों को भी पकड़ कर लायेगें। कपूरी धोबन कहती है कि दरबार आपके घोड़े देखकर ही ग्वाले भाग जायेगें, आप किसको पकड़ कर लाओगे। ये काम तो मैं ही कर दूंगी। ग्वाले तो रोज मेरा काम करते हैं। मैं तो वहां पेड़ के नीचे आराम से बैठी रहती हूं और सारे कपड़े ग्वालों से धुलवाती हूं। मीर और उमराव कपूरी धोबन की बात सुनकर उसे अपने साथ लेकर रावजी के दरबार में वापस आ जाते हैं। रावजी कहते है वापस कैसे आ गये ? तो दियाजी बताते हैं ये कपूरी धोबन है, जो कहती है कि ये काम तो मैं ही कर दूंगी। रावजी कपूरी धोबन को अपने सामने बुलवाते हैंऔर कहते हैं कि अगर ये काम तू कर देगी तो मैं १० गांव तेरे नाम कर दूंगा। कपूरी धोबन रावजी से कहती है कि शहर के सारे धोबियों को मेरे अधीन कर दो और गुदलिया तालाब पर मेरे लिये तम्बू लगवा दो, आपका काम हो जायेगा। गांव के सभी धोबियों को इकट्ठाकरके कपूरी धोबन को सोंप देते हैं और उसके लिये गुदलिया तालाब पर तम्बू लगवादेते है। सारे धोबियों से कहते हैं कि आज से इसे कपूरी धोबन कोई नहीं कहेगा, सबइसे कपूरी काकी के नाम से पुकारेगें।

बगडावत भारत कथा -42

कपूरी धोबन सारे धोबियों की फौज को अपने साथ लेकर गुदलिया तालाब पर आती है और सबको कहती है कि अगर देव की गायें पानी पीने के

लिये आये तो उन्हें पानी पीने मत देना और ग्वालों को पकड़ कर मेरे सामने लेकर आना। ये कहकर कपूरी धोबन अपने तम्बू में विश्राम करने चली जाती है। इधर ग्वाले शिखराणी के जंगल में गायें चराने आते हैं, वहां डूंगर पर से देखते हैं कि आज गुदलिया तालाब पर इतनी भीड़ भाड़ और कपड़े धोने की आवाजें आ रही है, क्या बात है ? पदमा पोसवाल और कुछ ग्वालों को भेजकर नापाजी पता करवाते हैं और कहते हैं कि कोई खतरे की बात हो तो लकड़ी पर कपड़ा बांध कर फहरा देना। हम सब दौड़ कर आ जायेगें। पदमा पोसवाल और ६-७ ग्वाले गुदलिया तालाब पर आते हैं तोदेखते हैं कि धोबियों की भीड़ लगी हुई है। चारों तरफ कपड़े सुखा रखे हैं और सारे तालाब का पानी खराब कर दिया है। पदमा पोसवाल कहता है, ऐ धोबियों ये सब अपने कपड़े लत्ते समेटो और यहां से भाग जाओ। अभी देवनारायण की गायें आयेगीं तोसारे कपड़े खराब कर देंगी। ये बात सुनकर एक धोबी कहता हैं कि तम्बू में हमारी काकीजी बैठी हुई हैं। ये बात उनको जाकर कहो। गरड़ डांग नाम का ग्वाला जाकर सीधा तम्बू में जा घुसता है और कपूरी धोबन से जाकर कहता है कि अपने सारे कपड़े समेट ले,नहीं तो हमारी गायें सारे कपड़े खराब कर देगीं। कपूरी धोबन तम्बू से बाहर आकर धोबियों से कहती है कि इन ग्वालों को पकड़ कर बान्ध दो। सारे धोबी मिलकर ग्वालों के पीछे दौड़तें हैं। एक ग्वालालकड़ी के कपड़ा बांध कर हवा में फहरा देता हैं सारे ग्वाले दौड़ते हुए वहां पहुंच जाते हैं और एक-एक धोबी पर दो-दो ग्वालेटूट पड़ते हैं। धोबी तो सारे वहां से भाग जाते हैं और ग्वाले कपूरी धोबन को पकड़ कर पीटने लगते हैं। गेंद्या धोबी वहीं पेड़ पर चढ़ कर छुप जाता है, बाकि सारे धोबी भाग जाते

हैं। सारे ग्वाले मिलकर कपूरी धोबन को पीटते हैं और उसके बाल पकड़ कर उसे तालाब में डुबोते हैं और वापस बाहर निकालते हैं। कपूरी धोबन के सारे बाल काट देते हैं और उसे पानी में डुबो-डूबो कर पीटते हैं जिससे कपूरी धोबन अचेत हो जाती है। ग्वाले समझते हैं कि मर गयी है, इसका यही पर दाह संस्कार कर दो और आस-पास के काटें और लकड़ियां इकट्ठी कर ढेर लगा देते हैं। इतनी बात सुनकर कपूरी धोबन उठकर खड़ी हो जाती हैं। सब ग्वाले समझते हैं कि भूतनी कहां से आ गयी और सब उसको मारने लगते हैं। नापाजी सब ग्वालो को रोकते हैं और मना करते हैं इसको अब छोड़ दो इसकेपीड़ा हो रही है। इसको अब ठण्डा करने के लिये माथे में दही लगाओ इसके सारे बाल काट लेने से माथे में जलन हो रही है। एक ग्वाला कहता है कि आकड़े का दूध लगाओ उससे सारी पीड़ा दूर हो जायेगी। ग्वाले पास में लगे आंकड़े के पेड़ के पत्ते तोड़ कर उसका दूध इकट्ठा कर धोबन के माथे में लगा देते हैं। जिससे उसके और जोरों से जलन होने लग जाती हैं और वो उछलने लगती है। सारे ग्वाले हंसते हैं और नापा ग्वाल कहता है कि अपनी एक-एक अंगुठी खोलकर इसे देते जाओ और इसके माथे में मारते जाओ। सारे ग्वाले कपूरी धोबन को एक-एक अंगुठी देते जाते हैं और उसके माथे में मारते जाते हैं। कपूरी धोबन के पास अंगुठियों का ढेर लग जाता है। उसे वो अपनी सभी अंगुलियों में पहन कर वापस गांव की ओर आती हैं। और रानीजी के महल मे जाने से पहले एक पड़ोसन के बच्चे को अपनी गोद में उठाकर साथ लाती हैं। रानीजी कहती हैं काकी जी राम-राम। कपूरी धोबन कहती है जीवती रहो, मेरे साथ हुआ वो सब के साथ होए। रानीजी पूछती है काकीजी आपसे

साथ क्या हुआ।धोबन कहती हैरानीसा गुदलिया तालाब पर छप्पनीयां भैरु प्रकट हुए है। उन्होनें मुझे बच्चा दिया है, मैं वहां पर जाकर लकड़ी लेकर बैठती हूं। देवनारायण के ग्वाले आते हैं, उनको पीटती हूं। मुझे सब एक-एक अंगुठी देते हैं। इसलिए मेरे पास इतनी सारी अंगूठियां हैं। रानी को विश्वास आजाता है और धोबन को कहती है काकी मेरा कोई बेटा नहीं हैं। एक भूणा को बेटा बनाया था सो वह तो चला गया। क्या मेरे कोभी बच्चा दे देगें भैरुजी। धोबन कहती है रानीसा अगर आप छप्पनीयां भैरु की एक जात जिमाओं तो वो आपकी गोद भर देगें।

बगडावत भारत कथा -43

सांखली रावजी से कहती है कि गुदलिया तालाब पर छप्पनीयां भैरु प्रकट हुए हैं, वो सब को बच्चा देते हैं, जिसके बच्चा नहीं होवे उसकी गोद भर देते हैं। रावजी कहते हैं भैरुजी की जात में क्या चढ़ाना पड़ता है ? रानी कहती है भैरुजी की जात न्योतने में सवा मण पापड़िया, सवामण पुवां चढ़ाना पड़ेगा। रावजी कहते है आज ही जाओ और भैरुजी की जात जिमाओ। कपूरी धोबन रानी को अपने साथ लेकर गुदलिया पर आती है। वहां एक पेड़ के नीचे रानी जी को धूप-दीप लगाने को कहती है। पेड़ पर छिपा बैठा गेद्यां धोबी सारी बात देख रहा होता है। रानी सांखली भैरुजी का ध्यान करती है और धूप-दीप लगाती है। अचानक पेड़ पर बैठा गेद्यां धोबी पेड़ से गिर जाता है और सीधा रानी कीगोद में जा पड़ता है। रानी

सोचती है भैरुजी ने मेरी सुनली और बेटा भेजा दिया है। उधर से देव के ग्वाले गायों को चराते हुए आते हैं। ग्वालों को देखकर कपूरी धोबन एक झाड़ी के नीचे छुप जाती है। एक ग्वाला झाड़ी के पीछे जाकर देखता है कपूरी धोबन छिपी हुई है। उस बाहर निकलने को कहता है। कपूरी धोबन कहती है अरे ग्वालों ये रानी यहां भैरुजी को पूजने आयी हैं और सवामण पापड़ी और सवामण पुवां चढ़ाने आयी है वो सब मिल कर खाओ मुझे छोड़ दो। कपूरी काकी के कहने पर एक ग्वाला पेड़ के नीचे भैरुजी बनकर बैठ जाता है। रानी देखती है साक्षात भैरुजीप्रगट हुए हैं और उनके ढोक (चर्णस्पर्श)लगाती है। और कपूरी धोबन के कहे अनुसार वहां से एक लकड़ी लेकर ग्वालों को मारने दौड़ती है। गरड़ डांग को रानी के हाथ की लकड़ी की लगती है तो गरड़ डांग रानी के कमरमें बंधा सोने का जेवर छीनकर उसे कादे (कीचड़) में धकेल देता है और फिर सब ग्वाले मिलकर रानी को छेड़ते हैं। रानी कहती है अरे ग्वालों मैं तुम्हें देख लूंगी। तुम्हें इसकी सजा मिलेगी। रानी की बात सुनकर नापाजी रानी को कीचड़ से बाहर निकाल कर उसे गाड़ी में बैठा कर गाड़ी को हांक कर छोड़ देते हैं। रानी वहां से सीधे अपने महल में आकर रावजी से ग्वालों की शिकायत करती है। रावजी गुस्से में आकर अपनी सेना के साथ दियाजी और मीरजी को भेजते हैं और ग्वालों को मारकर देव की गायों को घेर कर लाने का हुक्म देते हैं।

नियाजी और मीरजी दोनों सेना लेकर गुदलिया तालाब पर आते हैं जहां देवनारायण की गायें पानी पीने के लिये आती हैं। वे गायों को पानी भी नहीं पीने देते हैं और उन्हें घेर कर अपने साथ ले जाने लगते हैं तभी नापाजी सामने आ जाते हैं और विनती करते हैं दियाजी आप हिंदू हो और हिंदू धर्म की लाज राखों। गायों को पानी पीने दो और फिर आप घेरकर अपने साथ ले जाये। मीर जी गायों को बिना पानी पिये ही ले जाने को कहते हैं कि गायें पानी पीने के बाद अपने हाथ नहीं आयेगी, इनको तो अभी ले चलों। फिर नापाजी विनती करते हैं गायें प्यासी हैं और राण तक नहीं जा पायेगी, रास्ते में ही प्यास से मर जायेगी। और दियाजी नापा की बात सुनकर गायों को पानी पीने देते हैं और कहते हैं कि आप सभी घोड़े से नीचे उतर जाओतब तक गायें पानी पीती हैं। दियाजी घोड़े से नीचे उतर कर अपना तीर कमान नीचे रखते हैं और नापा तीर कमान उठा लेता हैं और दियाजी को निशाना बना कर कहता है कि आप के माथे का टोप हमारे को दे दो। हम आपको जाने देते हैं। तब तक आसपास के सारे ग्वाले वहां आ जाते हैं। नापाजी सभी ग्वालों को आदेश देते हैं कि पहले इनके सारे घोड़े मार दो। ग्वाले नापाजी की बात सुनकर लड़ाई करने के लिये तैयार हो जाते हैं और आसपास के मंगरे पर चढ़कर तीर चलाते हैं। सारी सेना के घोड़ो को मार गिराते हैं और अपनी गायों को लेकर वापस गोठां में आ जाते हैं। दियाजी और मीर जी अपने-अपने घोड़ो की जीन्द अपने सिरों पर लाद कर वापस रावजी के पास आते हैं। रावजी समझ जाते हैं कि इन्होंने घोड़ो को खो दिया है और सरदारों को कहते हैं घोड़ो को मरवा दिया और आप लोग खाली हाथ वापस कैसे आ गये ? एक

भील बोल देता है कि हमने तो घोड़े ही गंवाये हैं आपने तो अपनी रानी ही गंवा दी थी। ये बात सुनकर रावजी को गुस्सा आ जाता है और एक लाख फौजों और सभी मीर और उमरावों को साथ लेकर गोठां की ओर चल पड़ते हैं और हियाला का खाल में आकर फौजो को रोकते हैं। दूसरे दिन सुबह जब नापाजी सो कर उठते हैं तो सोचते हैं कि आज तो जंगल में रावजी की सेना आयेगी और गायों को ले जायेगी। अगर हमें भी मार दिया तो। यह सोचकर नापाजी गऊशाला के दरवाजे पर आकर बैठ जाते है। इतने में भूणाजी आते हैं और कहते हैं दादा नापाजी आज सूरज सिर पर चढ़ आया है। गायों को अभी नहीं हांका। गायों को उछेरो फिर थोड़ी देर बाद सभी भाई आते हैं और कहते हैं कि आज तो काफी दिन उग आया है। गायों को चराने नहीं गये दादा नापाजी। देवनारायण तो सारे अन्तकरण की जानते हैं। उन्हें पता चल जाता है कि रावजी सेना लेकर खाल में डेरा डाले हुए हैं। वो आकर नापाजी से कहते हैं दादा नापाजी आज गायों को नहीं उछेरी क्या बात है ? नापाजी कहते हैं आज गायें उछर ही नहीं रही हैं, मैं क्या करूं ? देवनारायण सुराह माता गाय के पासजाकर कहते हैं माता उछरो और राता कोट में जा घुसो। यदि आप नही उछरोगे तो हम हमारे बाबा का बैर कैसे लेगें ? देवनारायण गायों से विनती करते हैं और कहते हैं, गऊ माता उछरो और राताकोट में जाओ। मैं आपके पीछे-पीछे ही आ रहा हूं। मैं अपने बाप-दादा का बैर लेकर वापस आपको छुड़ा लाउंगा गायें वापस देवजी से कहती है कि आप बालक हो देव। आप यदि भूल गये तो हम तो राताकोट में ही रह जायेगी। वहां का तो हमें पानी भी नहीं लगेगा। गायें फिर कहती हैं, आपको याद नहीं रहेगा।

आप तो भाटजी से कहो वो ही उछेरेगें। ताकि उन्हें याद रहेगा और वोआपको याद दिला कर हमें लाने की कहेगें। देवनारायण भाटजी से कहते हैं भाटजी बदरावणी गाओ। आप उछेरोगे तभी गायें जंगल में चरने जायेगी। और भाटजी बदरावणी गाता है, साथ में ढोल भी बजाता है। तब गायें जंगल में चरने जाती हैं। साथ में १४४४ ग्वालें और नापाजी गुदलिया पर आते हैं। ग्वाले और नापाजी गुदलिया तालाब पर आकर देखते हैं कि रावजी की फौजे खड़ी हुई हैं। सारी गायों और ग्वालों को रावजी के सैनिक घेर लेते हैं। गायों को सेना के साथ घेर कर मीरजी कहते हैं कि रावजी गायों को तो घेर कर लेचलते हैं, ग्वालो को ले जाकर बेकार में क्या खिलायेगें ? इनको यहीं छोड़ देते हैं। दियाजी कहते हैं सरकार बाकि ग्वालों को तो आप छोड़ दो, लेकिन नापा को जरुर सजा देगें। रावजी पूछते हैं कि कौन है नापा, सामने आये। इतने में गरड़ डांग कहता है ये रहे नापा जी और नापाजी को सामने कर देता है। नापाजी और रावजी के संवाद होता है। नापा कहता है रावजी इतनी सारी सेना लेकर गायों को घेरने आये थे क्या इनके मालिक लोगों को जानते हो ? ग्वाले कहते है नापाजी आदेश करो, अभी इनकी सेना को पीछे हटा देगें। नापाजी ग्वालों को आदेश देते हैं। सारेग्वाले तीरकमान उठाकर सेना पर चलाना शुरु कर देते हैं। नापा के एक ही तीर से रावजी के हाथी के होदे पर लगा छतर कटकर गिर पड़ता हैं। रावजी तो धक-धक धूजने लग जाते हैं। देवनारायण इधर अपने महल में बैठे सोचते हैं कि अगर रावजी और उसकी सेना को ग्वालों ने ही खत्म कर दिया तो हम अपने बाप-दादा का बैर कैसे निकालेगे। देवनारायण अपनी दिव्य दृष्टि ग्वालों पर डालते हैं। अब नापाजी और

ग्वालों के तीर कोई भी निशाने पर नहीं लगते, इधर-उधर निकल जातेहैं। ये सब देखकर नापाजी ग्वालों से कहते हैं गायों को छोड़ कर यहां से जान बचा कर भागो।

बगडावत भारत कथा -45

सभी ग्वाले अपनी जान बचाकर वहां से भागकर शिखरानी के मंगरे पर इकट्ठे हो जाते हैं, देखते हैं कि सब आ गये मगर एक ग्वाला नहीं आ रहा है। उसको रावजी अपने होदे के पीछे बैठाकर हाथ में झण्डी देकर गायों को हांक कर ले जाते हैं। और गायों के पीछे-पीछे रावजी की सेना जाती है। रावजी गायों को रातीकोट में लाकर बंद कर देते हैं और युद्ध का मोर्चा बांधना शुरु कर देते हैं। उन्हें पता था कि अब देवनारायण अपनी गायें छुड़ाने जरुर आयेगें। वह रातीकोट के चारो ओर तोपें तैनात कर गोला बारुद का ढेर लगवा देते हैं और एक लाख सेना को सुरक्षा के लिये तैनात कर देते हैं। इधर ग्वाल वापस गांव की ओर लौट आते हैं। ग्वालों को बिना

गायों के आते देखकर पीपलदेजी साडू माता से कहती है माताजी ग्वाले तो खाली हाथ वापस आ रहे हैं। गायों को तो कोई घेरकर ले गया है।माता साडू देखती है नापाजी और ग्वाले खाली हाथ वापस आ रहे हैं। गायें साथ में नहीं हैं तो साडू माता नापाजी से पूछती है नापाजी गायें कहां गयी है। नापाजी कहते हैं गायों को तो रावजी की फौजें घेर कर ले गईहैं और राताकोट में बंद कर दिया है। इतना कह कर नापाजी अपनी गद्दी-आसन सब साडू माता के सामने डाल देते हैं। उधर दियाजी रावजी से कहते हैं रावजी देवनारायण तो आपसे डर कर वापस अपने ननीहाल मालवा भाग गये है। आपका आदेश हो तो मैं गोठां जाकर जो माल हाथ लगे लूट करले आता हूँ रावजी कहते हैं जाओ। दियाजी और मीरजी ५०० सैनिको को साथ लेकर गोठां में आते हैं। देवनारायण तो साढे तीन दिनों से नींद में सो रहे होते है पीछे से आकर भाले की चोट से गढ के कांगरे तोड़ देते हैं। पीपलदेजी सामने आकर कहती है, ऐसे वीर हो तो जब तुम्हारे दांत तोड़े तब बैर लेते। अभी देव सो रहे हैं, सोये हुए शेर को मत जगाओ और मेहन्दूजी और भूणाजी दरबार में बैठे है उनकों खबर हो गयी तो मारे जाओगे। ये बात सुनकर दियाजी वहां से देवनारायण का हाथी अपने साथ लेकर वापस लौट जाते हैं।पिपलदेजी आकर देवनारायण को उठाती है और कहती है की जागो तीन लोकों के नाथ। आपकी गायों को रावजी घेर ले गये है। राताकोट में दो दिनों से बंद पड़ी है। नापाजी गुहार कर रहे हैं। गायों को छुड़ा कर वापस लाओ। ये सुनकर देवनारायण नींद से जागते हैं और अपने भाईयों को साथ लेकर राण पर चढ़ाई करते करने के लिए तैयार हो जाते हैं साडू माता देवनारायण को रण में जाने के लिए मना

करती हैं क्योंकि देवनारायण अभी छोटे होते हैं। देवनारायण अपने घोड़े का ताजणा नीते गिरा देते हैं।जब साडू माता ताजणा उठाने के लिए नीचे झुकती हैं तो देखती हैं कि चारों तरफ नीलागर ही नीलागर हैं। साडू माता को अहसास होता हैं कि देवनारायण तो स्वयं भगवान के अवतार हैं इसलिए वो उन्हें रण में जाने की इजाजत दे देती है। सब लोग रणमें चले जाते हैं लेकिन भांगीजी को खेड़ा चौसला की रखवाली के लिए छोड़ जाते हैं। शीतला माता, काला-गोरा भैरु, शिव-पार्वती और अन्य सभी देवता भी राताकोट की लड़ाई में देवनारायण के साथ चल पड़े। देवनारायण, मेहन्दूजी, भूणाजी, मदन सिंह जी, अस्सीजी और भाटजी घोड़ों पर सवार होकर राण पर चढ़ाई करते हैं। जब साडू माता को पता चलता है कि देवनारायण पीछे से भांगी जी को छोड़ गये हैं तब साडूमाता भांगीजी के पास आती है जहां भांगीजी सवामण भांग घोट रहे होते हैं और कहती है कि तू डर के मारे लड़ने नहीं गया और अपने भाईयों को रण के लिये भेज दिया। भांगीजी ने कहा माताजी मेरे पास तो घोड़ा भी नहीं है। मैं चढ़ाई कैसे करूंगा। साडू माता कहती है भांगी तू मेरी काली घोड़ी ले जा मगर एक बात का ध्यान रखना घोड़ी मरे या जीवे इसे वापस साथ में लेकर आना। भांगीजी इतनी बात सुनते ही सीधे घुड़साल में जाकर काली घोड़ी को खोलकर सवार हो राताकोट की ओर चल पड़ते हैं। रास्तें में एक तेली और तेलण घाणी में तेल निकाल रहे होते हैं। उससे जाकर बोले रे तेली थोड़ा खल-काकड़ा दे दे, घोड़ी को खिलाना है। तेलण थोड़ी तेज थी बोली कितने चाहिये ? भांगीजी ने कहा जितनी तेरी इच्छा हो उतनी दे दे। तेलण बोली पैसे दे नहीं तो वापस जा यहां से। इतना सुनते ही भांगीजी तेली और तेलण के

एक दो थप्पड़ जड़ (मार) देते हैं और सारा खल-काकड़ा खा जाते हैं और घोड़ी को भी खिलाते हैं और सारा तेल पी जाते हैं। भांगीजी ने सोचा की लड़ने के लिये जा रहे हैं मगर अपने पास न तो शस्त्र है और न ही टोप है। तेली की घाणी को उठाकर तो सिर परओढ़ लेते हैं और तेल निकालने की लाठ को भाला बनाकर कंधे पर रखकर दौड़ पड़ते हैं। रास्ते में उन्हें देवनारायण मिलते हैं। नारायण पूछते हैं भांगीजी आप कैसेआये ? भांगीजी ने कहा माताजी ने भेजा है,अपनी घोड़ी देकर युद्ध करने के लिये। मेरे पास शस्त्र नही थे तो रास्ते में तेली की घाणी के टोप बना ली और लाठ का भाला। भांगीजी घाणी का टोप अपने सिर पर ओढ कर, घाणी की लाठ को कंधे पर रख कर, सबसे आगे-आगे चलकर राताकोट पर चढ़ाई कर देते हैं। युद्ध में तोप का गोला भांगीजी की काली घोड़ी के पांवों में आकर लगता हैं और घोड़ी वहीं मर जाती हैं। भांगीजी घोड़ी को अपनी कांख में लेकर भागते हैं। देवनारायण के पास आकर कहते है आप इस घोड़ी का ध्यान रखना मैं अमल भांग खाकर आता हूं।

बगडावत भारत कथा -46

देवनारायण नीलाधर घोड़े के मुंह के झाग लेकर घोड़ी के छींटें मारते हैं, घोड़ी वापस जिन्दा हो जाती है और भांगीजी को कहते है। आप जाओ और राताकोट में जाकर गायों के बन्धन काट कर ग्वालों के हवाले करो। मदनसिंह और मेहन्दूजी को कहते हैं कि आप महल में जाकर अपने बाप

काबैर लो। मदन सिंह जी और मेहन्दूजी महलों में जाकर ज्वाला हाथ में लेकर युद्ध में कूद पड़ते हैं। देवनारायण के कहने पर सबसे पहले भांगीजी राताकोट मेंसे गायों के बन्धन काट कर छुड़ातें हैं और गायों को ग्वालों को सोंपते हैं और उन्हें गोठां में जाने को कहते हैं। फिर देवनारायण और भूणाजी रावजी से बैर लेने को चलते हैं। देवनारायण, भूणाजी राताकोट में जाकर तबाही मचा देते हैं और सावर के ठाकुर दियाजी को जाकर खत्म कर देते हैं। अटाल्या जी कालूमीर को मार देते हैं। भांगीजी अपनी लाठ से राताकोट को ही ढेर कर देते हैं, नीमदेवजी वहां से भाग निकलते है। और जोगियों की जमात में जाकर शामिल हो जाते हैं। लगोंट धारण कर तुम्बी हाथ में लेकर धूणी पर आकर बैठ जाते हैं। भांगीजी वहीं पर आकर नीमदेवजी को मार देते हैं।इसके बाद भांगीजी हनुमान की तरह राताकोट में वापस आते हैं और सारे गोला-बारुद में आग लगा देते हैं। राताकोट लंका की तरह धूं-धूं कर जलने लगजाता हैं। जब देवनारायण रावजी को ढूढतेहुए राण के महल में पहुंचतें हैं तो देखते हैं कि रावजी अपने घोड़े पर सवार होकर सुरंग के रास्ते फरार हो चुके हैं। देवनारायण भूणाजी को कहते हैं कि भूणाजी आप तो यहां ११ वर्ष रहे हैं, यहांके चप्पे-चप्पे को जानते हो। रावजी का पता लगाओ कि वे कहां छुपे हुए हैं और उनको किसी बहाने ढूंढ कर हमारे सामने लाइऐ ? भूणाजी बोर घोड़ी पर सवार हो ठाप दे कर सीधे सुरंग के अन्दर जाकर रावजी को ढूंढ लेते हैं और रावजी को कहते हैं कि बाबासा आप हमारे साथ बागतला के जंगल में शिकार पर चलो रावजी भूणाजी की बात मानकर शिकार पर जाने के लिए तैयार हो जाते हैं। देवनारायण के अलावा सारे भाईभूणाजी और रावजी के

साथ शिकार खेलने बागतला के जंगल में पहुंच जाते हैं। बागतला के जंगल में पहुंचकर भूणाजी रावजी को देवनारायण के सामने ले जाकर खड़ा कर देते हैं और अपने धनुष के छल्ले से उनकी गरदन पीछे से पकड़ लेते हैं। रावजी के हाथ में भाला होता है वो देवनारायण पर छोड़ देते हैं। देवनारायण एक तरफ हट जाते हैं और भाला एक तरफ निकल जाता हैं और फिर देवनारायण एक ही वार में रावजी की गर्दन उतार लेते हैं। रावजी वहीं ढेर हो जाते हैं। उनका सिर कट कर दूर जा पड़ता हैं। रावजी की मौत देखकर भूणाजी की आंखों में आंसु आ जाते हैं और वह देवनारायण से कहते हैं कि रावजी ने मुझे पाल-पोसकर बड़ा किया था। अपना बेटा बना कर रखा था। आज मैं ही उनकीमृत्यु का कारण बना हूं। यह सुनकर देवनारायण रावजी का सिर वापस जोड़कर उन्हें जिन्दा कर देते हैं और उन्हें सिसोदिया की पदवी दे देते हैं, और रावजी से कहते हैं कि जाओ आप उदयपुर और चित्तोड़ के राजा कहलाओगे और राणा सांगाके नाम से जाने जाओगे। देवनारायण राण को फतेह कर दड़ावत वापस आते हैं और दड़ावत के चबूतरे आकर विराजते हैं। तब साडू माता देवनारायण की आरती उतारती हैं। नापाजी भी नहा-धोकर पीताम्बर वस्त्र पहनकर गायों की आरती उतारते हैं।

बगडावत भारत कथा -47

भगवान देवनारायण माता साडू से आकर कहतेहैं अब हम लौटकर बैकुंठ में वापस जायेगें। हमारा दिया वचन पूरा हुआ। आपकी झोलियां खेलें हैं।

अब आप मुझे हंसी-खुशी विदा करो। पीपलदे की आंखों मे आंसु देखकर देवनारायण कहते हैं क्याहुआ, आप क्यों रोती है ? पीपलदेजी कहती है कि भगवान मेरे दिन कैसे कटेंगे ? भगवान कहते हैं कि पीपलदे मैंने आपको जो बीला दिया था वो कहां हैं ? पीपलदेजी कमरे का ताला खोलकर बीले को लेकर आती है। छोटा सा बीला था जब रखा था, अब ये बीला बड़ा हो गया है, जैसे मां के गर्भ में बच्चा बड़ा होता है, उसी तरह बीले मेंबच्चा पल रहा था। भगवान देवनारायण भैरुजी को कहते है कि इस बीले के दो फाड़ करो। एक भाग में बीली बाई थी और दूजा फाड़मे बीला था।ये दोनों पीपलदेजी को देते हैं और कहते हैं ये दोनों तुम्हारे बेटा-बेटी है, इनको पालो ये तुम्हारी सेवा करेगें।देवनारायण साडू माता, मेहन्दूजी, मदन सिहंजी, भांगीजी, को तो अपने साथ बैकुंठ ले जाते हैं। और भूणाजी को अमर कर देते हैं। और भगवान वहां से पहले नाग पहाड़ पर आते हैं और बरणाघर से जाकर अन्तध्र्यान हो जाते हैं। (बरणाघर जहॉ से भगवान बैकुण्ठ धाम गये थे आसीद से 10 किमी पश्चिम दिशा मे है) और पिपलदे से कह जाते हैं कि मैंने ३ ब्याह शादियां करी। तीनों को लोग मेरे साथ पूजेगें। तीनों को एक जगह रखेगें। इस प्रकार जो देवनारायण का पाट लगता हैं वो तो राक्षस कन्या है और जो जोत दीप जुड़ते है वो राजा बासक की नाग कन्या और जो ईंटें है वो पीपलदेजी का स्वरुप और उनको पूजा में नीम की पत्तियां चढ़ती हैं। बीला-बीली जब बड़े होते हैं तब नापाजी उन्हें अपने मां-बाप की देवलियों की सेवा में लेकर जाते हैं। बीली तो सेवा करने के लिए तैयार हो जाती है मगर बीला सेवा करने से मना कर देता है। उसी दिन सेबीला के शरीर में कोढ़ हो जाता है गांव वाले भी

बिला-बिली को गांव से निकाल देते हैं। यहां तक कि उन दोनों को भीख मांगकर अपना गुजारा करना पड़ता है। बिली, बिला को भगवान देवनारायण की सेवा करने के लिए बहुत समझाती है। आखिर में बिला मान जाता है और देवनारायण भगवान की सेवा करने के लिए तैयार हो जाता है। तब भगवान उनको साक्षात दर्शन देते हैं और उनका सारा कोढ खत्म कर उनकी देह को कंचन जैसा कर देते हैं। और कहते हैं कि बीला अगर तू अहंकार नहीं करता तो मेरे बराबर मेरे आसन पर बैठता। अब तूने अहंकार किया था तो तेरा स्थान हमेशा मंदिर के पिछवाड़े ही होगा। तबसे देवनारायण के देवरों के पीछे बीले का स्थान होता है।

।।श्री देवनारायण भगवान की जय।।।श्री सवाई भोज महाराज की जय।।

।।साडू माता की जय।।। श्री भौणाजी महाराज की जय।।जय भैरवनाथ।।

संकलन द्वारा - श्री शिवराज गुर्जर चौहान अध्यापक, ग्राम-आसन, पोस्ट- अमरवासी, तहसील- जहाजपुर ,जिला- भीलवाड़ा, राजस्थान 9929470254,9079127996

Pdf by:- *जगदीश गुर्जर छावड़ी , वरिष्ठ अध्यापक । आभानेरी (दौसा) 9461779317*

।।ॐ नमः शिवायः।।